आभार प्रदर्शन

दानशीला जैन महिला रत्न सेठानी जी श्रीमती सौ भवरीदेवी ध प श्रीमान राय सा सेठ चादमल जी पाड्या सुजानगढ वालो ने इस हमारी नव देवता विधान नामक छोटी सी पुस्तिका को सर्वोपयोगी समझ कर तथा इस सकल सौभाग्य व्रत को ग्रहण करके हमारी महनत को सफल बनाते हुए स्वद्रव्य से अपूर्व प्रकाश मे लाये है एतदर्थ श्रीमती सौ० सेठानी जी साहिबा धन्यवाद की पात्रा है ।

आशा है अन्य बहिने भी इस दान का अनुकरण करेगी ।

ब्र. सूरजमल जैन
मुनिसघ

श्री आदिचन्द्र प्रभु आचार्य श्री महावीर कीर्ति सरस्वती
प्रकाशन माला का प्रथम पुष्प

संस्थापिका जैन महिला रत्न भवरी देवी पांड्या सुजानगढ़

श्री नव देवता मंडल विधान पूजन

[सकल सौभाग्य व्रत]

विधि

लेखक .

ब्रह्मचारी सूरजमल जैन

मुनिसघ

प्रकाशिका .

श्रीमती सौ० दानशीला जैन महिला रत्न
भंवरीदेवी ध. प. श्रीमान राय सा. दानवीर सेठ
चांदमलजी पांड्या सुजानगढ़ (राज.)

प्रथमावृत्ति १००० | वीर संवत् २४९५ आश्विन शुक्ला १४ तारीख २४-१०-६८ | मूल्य

विषय-सूची

श्री १०८ आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज

जन्म	मुनिदीक्षा	स्वर्गवास
वि स. १९३२	वि. स. १९८०	वि स. २०१४
आषाढ शुक्ला पूर्णिमा	आश्विन शुक्ला ११	आश्विन कृष्णा अमावस्या

दो शब्द

यह नव देवता पूजन विधान पहले कभी भी हिन्दी मे प्रकाशित नही हुआ था। किसी प्रतिष्ठा पाठ मे और दक्षिण प्रान्त से निकली हुई किसी पूजन पाठ सग्रह मे केवल नव देवता पूजन बिना जयमाला का अष्टक ही देखने को मिला था। हिन्दी मे तो कभी देखा भी नही था। विक्रम स २०२१ मे परम पूज्य आचार्य श्री १०८ श्री शिवसागर जी महाराज का ससघ वर्षा योग श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पपौराजी मे हुआ। उस समय सघस्थ मुनि श्री १०८ वृषभसागर जी महाराज ने बहुत सी माता बहिनो को सकल सौभाग्य नामक व्रत दिया सो व्रत मे नव-देवता पूजन करने का बताया है किन्तु नव देवता पूजन विधान सर्वत्र अन्वेषण करने पर भी कही भी इसकी उपलब्धि नही हुई।

अत परम पूज्य आचार्य शिवसागर जी महाराज की आज्ञा से इस व्रत सम्बन्धी एक समुच्चय तथा नव देवता कि

नौ पूजन और नत सम्बन्धी प्रत्येक अर्ध मैने बनाये है। मडल विधान का नक्शा भी दिया है। यद्यपि मे कविता करने के गण वगैरह से अनभिज्ञ हूँ सिर्फ तुकबन्दी से ही प्राय काम लिया हूँ ऐसी अवस्था मे छन्दो का भग होना साहजिक है अत पाठक गणो से सादर निवेदन है कि वे मेरी गलतियो को क्षमा करते हुए पाठ को शुद्ध करते हुए पढे।

मै उज्जैन निवासी प छोटेलाल जी बरैया को भी धन्यवाद दिये बिना नही रहूगा क्योकि उन्होने कई स्थलो को देखकर मुझ से दुबारा बनवाये है पूर्वा आचार्यो के कहे अनुसार इस विधान मे अर्हन्त सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, जिन धर्म, जिन वाणी, जिन चैत्य, जिन चैत्यालय, इस प्रकार से नव देवो की पूजन लिखी गई है।

इनमे प्रत्येक देवो देवो के भिन्न भिन्न गुणो की पूजन (अर्घ लिखे गये है) जैसे अर्हन्त के ४६, सिद्ध के ८, आचार्य के ३६ उपाध्याय के २५, सर्व साधु के २८, जिन धर्म के ५७, जिन वाणी के ५१, जिन चैत्य के ३, जिन चैत्यालय के ३, इस तरह इस विधान मे २५७ अर्घ होते है, इस विधान मे प्रेस सम्बन्धी अशुद्धियाँ तथा मेरी असावधानी से कई बातो की गल्तिया रह गई है, अर्घ भी आगे पीछे होगये है, अत. पाठकगण जरूर ही सुधार कर पढे प्रेस सम्बन्धी अशुद्धियो

के लिए शुद्धि पत्र दिया हुआ है, यदि द्वितीया वृत्ति छपेगी तो जरूर ही सब गल्तियो को निकालने की कोशिश करू गा ।

नोट-इस नबदेवता मण्डल विधान को विनाव्रत के भी मण्डल माण्डकर पूजन कर सकते हैं

ब्र० सूरजमल जैन
मुनिसघ

———

श्री दि० जैन शांतिवीर संस्थान

(श्री शान्तिवीर नगर)

इस सस्थान के अन्तर्गत नवीन दोनो मन्दिर जिसमे २६ फुट उन्नत विशाल काय श्री १००८ श्री शातिनाथ भगवान की प्रतिमा तथा निज २ वर्ण सहित २४ तीर्थंकरो की सुन्दर मनोज्ञ मूर्ति एव दोनो तरफ तल घर मे विराज मान मन मोहक सुन्दर विशाल काय प्रतिमा और सहस्र कूट चैत्यालय विराजमान है। इस सस्थान के अन्तर्गत गुरुकुल जिसमे छात्र गण धार्मिक सस्कृत एव लौकिक शिक्षा प्राप्त करते है। प्रेस भी है जिसमे बडे छोटे सभी तरह के धार्मिक ग्रन्थो की छपाई शुद्धता से बिना मरेस के होती है।

अत धर्म बन्धुओ से निवेदन है कि इस सस्था से लाभ लेवे।

श्रीमती सौ० दानशीला जैन महिला रत्न
भवरीदेवी धर्मपत्नी श्रीमान् राय सा० दानवीर
मेठ चादमलजी पाड्या सुजानगढ

श्रीमती सौ० दानशीला जैन महिला रत्न पतिव्रत परायण भवरीदेवीजी पांड्या सुजानगढ निवासी का

संक्षिप्त परिचय

श्रीमती सौ दानशीला जैन महिलारत्न सेठानी भवरी देवी जी पाड्या सुजानगढ वालो से कोई अपरिचित है ऐसी बात नही है, आप भारत वर्षीय अखिल दि० जैन शाँतिवीर सस्थान् श्री शातिवीर नगर, तथा अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष और कई सस्थाओ के अध्यक्ष और गोपाल सिद्धान्त विद्यालय मोरेना के अधिष्ठता श्रीमान् राय साहब जैनरत्न, सघ भक्त शिरोमणि धर्म दिवाकर, सेठ चादमल जी पाडया सुजानगढ वालो कि धर्म पत्नी है। आपका जन्म मारवाड प्रान्त के अन्तर्गत मेनसर नगर मे श्रीमान सेठ मन्नालालजी गगवाल की धर्म पत्नि श्रीमती सौ बाली देवी की वाम कुक्षी से हुआ था। आपका जन्म होते ही पिता के घर व्यापार आदि मे कई तरह के लाभ हुए थे। सो ठीक ही है पूत के लक्षण पालने मे ही दिख

जाया करते है । सो वही कहावत चरितार्थ हुई, आपका बाल्यकाल बडे ही आमोद प्रमोद मे बीता । श्रीमान् सेठ मदनलाल जी श्रीमालचन्दजी श्री चम्पालाल जी इन तीनो भ्राताओ के बीच मे आप अकेली बहिन होने से घर में आपका बहुत ही लाड प्यार होता था । १३ वर्ष की अव-स्था मे सन् १९३० तारीख १ मई को आपका शुभ विवाह लालगढ निवासी श्रीमान सेठ मूलचन्दजी पाड्या के सुपुत्र श्रीमान बाबू चान्दमल जी के साथ हुआ था । विवाह के पहले बाबूचादमल जी की स्थिति आज जैसी नही थी । किन्तु बाई के विवाह के बाद ही धन धान्य सम्पदा दिन दुनी रात चौगुनी बढती ही चली गई । तदनुसार ही बाबू चादमलजी को बिट्रिश सरकार द्वारा रायसाहब की पदवी मिली थी । आपके तीन पुत्र रत्न हुये ।

(१) श्री गणपतराय जी जिनका विवाह बाडनू निवासी श्री दीपचन्दजी पहाडिया की सुपुत्री नोरत्न देवी के साथ हुआ ।

(२) श्री रतनलाल जी जिनका विवाह लाडनू निवासी श्रीमान सेठ नथमलजी सेठी की सुपुत्री सरीता देवी के साथ हुआ ।

(३) श्री भागचन्दजी का विवाह सम्बन्ध अभी नही हुआ है । आपकी ये दोनो पुत्रवधुये भी बहुत ही

आज्ञाकारिणी, धर्मात्मा एवम् सरल स्वभावी महिलारत्न है।

पाच पुत्रिया हुई–

(१) श्रीमती सौ गिन्नो कुमारी ध ध प्रकाशचन्द जी पाटनी सुजानगढ ।

(२) श्रीमती सौ० सुशीला कुमारी ध प श्री० बाबु चैनरुपजी बाकलीवाल सुजानगढ ।

(३) श्रीमती सौ किरण कुमारी ध प श्री० बसत कुमार जी कोठ्यारी जयपुर ।

(४) श्रीमती सौ विमला कुमारी ध प श्री० सम्पत-लाल जी बगडा लाडनू । इन चारो पुत्रियों का शुभ विवाह धर्मात्मा एव सम्पन्न घराने मे हुआ ।

(५) लघु पुत्री सरला कुमारी जिनकी सगाई सम्बन्ध श्रीमान् बाबू हुलाशचन्द जी सबलावत डेह निवासी के सुपुत्र श्री श्रीपाल जी के साथ हो गया है। इस प्रकार आपका घर पुत्र–पौत्र, पुत्री पौत्रिया, दोहता–दोहतियों से परिपूर्ण है।

श्रीमान् रायसाहब सेठ चान्दमल जी पाड्या को चरित्र-वान् वनाने मे आपने चेलना रानी जैसा कार्य किया है। दरअसल मे सेठानी साहिबा का ही यह सत्प्रयत्न था कि

अपने पति सेठ चान्दमलजी को चरित्रवान् बनाकर समाज के सामने ले आऊँ । अन्त मे सेठानी जी का यह प्रयास सफल हो ही गया । ये सब बाते माता बहिनो के लिए भी अनुकरणीय है । सुजानगढ मे नवीन मकान बनाया तो सर्व प्रथम अपने बच्चो पर धार्मिक सस्कार कैसे हो इस हेतु घर मे मार्बल की सुन्दर वेदी बनवा कर तथा प्रतिष्ठा करवाकर भगवान विराजमान् किये । तदन्तर ही आपने नवीन भवन मे ग्रह प्रवेश किया । मरसलगज मे श्री आचार्य विमल सागर जी के समक्ष विशाल पैमाने मे श्रीमान रायसाहब ने स्वद्रव्य से पच–कल्याणक बिम्ब प्रतिष्ठा कराई थी सो भी श्री सेठानी जी की ही प्रबल प्रेरेणा से कराई थी । तथा दो बार श्री शातिवीर नगर मे और गौहाटी पच–कल्याणक प्रतिष्ठा मे भी आपका डाके वगैरह मे पूर्ण सहयोग रहा । गत वर्ष ढाई महीने की सम्पूर्ण तीर्थ यात्रा मे हर क्षेत्रो मे हजारो लाखो का दान दिया । श्री हूम्मच पद्मावती ब्रह्म–चर्या श्रम मे ५०००१) रु का दान एक दम घोषित किया । श्री शाँतिवीर नगर मे मानस्तभ बनाने की भी आपकी स्वीकारता है, सो वह भी यथाशीघ्र बनकर तैयार हो जायेगा । आपकी भावना सदैव तीर्थयात्रा, पूजनपाठ, मुनिदान एव अतिथि सत्कार करने की ही रहती है, हर चौमासे मे मुनिराजो के पास आहार–दानार्थ श्रीमान राय-साहब को साथ मे लेकर जाती रहती है। इन धार्मिक कार्यों

कौ करते हुए आपको मन ही मन बडी खुशी होती है। अभी हाल ही मे आप गजपन्था रायसाहब के साथ आचार्य श्री महावीर कीर्ती जी महाराज के दर्शन तथा अहार–दानार्थ गई थी वहा पर चन्द्रप्रभु, महावीर कीर्ती सरस्वती प्रकाशन माला आपके कर कमलो द्वारा ही स्थापित की गई है। गौहाटी मे आपकी तरफ से ही एक गू गा एव अन्धो की पाठशाला खोली गई । जिसमे गू गे लोग विद्याध्ययन करते हुए अच्छे २ काम करके दिखाते है । इस तरह आपने इस छोटे से जीवन काल मे लाखो का दान किया । आप सदैव हस–मुख, सरल स्वाभावी, मान–गुमान रहित देखी जाती है ।

गत वर्ष प्रतापगढ मे परम पू १०८ आचार्य श्री शिव-सागर जी महाराज के दर्शनार्थ अपनी मोटर कार लेकर आई थी आचार्य श्री के पादमूल मे ही श्री मुनिराज ऋषभ सागर जी महाराज की सप्प्रेरणा से सकल सौभाग्य नामक व्रत ग्रहण किया । इस व्रत के अन्तर्गत होने वाले नव देवता मण्डल बिधान मडवा कर बडे समारोह के साथ आश्विन शुक्ला चतुर्दशी को पूजन की । पूजन के वाद ही इस अप्रका-शित विधान को प्रकाशन करने की स्वीकारिता दे दी । एत-दर्थ आप धन्यवाद की पात्रा है । आगे भी आप इसी प्रकार उदार दिल से दानादि करते हुए सच्चे देव शास्त्र गुरू की

भक्ती करती रहेगी ऐसी आशा है माता बहिनो से आग्रह है कि इस सकल सौभाग्य व्रत को ग्रहण करके अपनी आत्मा को पवित्र बनायेगे एव पू व्र सूरजमल जी की इस तुच्छ मेहनत को भी सफल बनावेगे ऐसी पूर्ण आशा है ।

नोट—इस मंडल विधान की पूजन बिना व्रत के भी कर सकते हैं ।

सौ० इन्द्राकुमारो जैन गट्टो

श्रीमान् राय साहब दानवीर जैन रत्न धर्म
दिवाकर सघ भक्त शिरोमणी सेठ चादमलजी
पाड्या, सुजानगढ

श्री आदिचन्द्रप्रभु आचार्य श्री महावीर कीर्ति सरस्वती

प्रकाशन माला

संचालिका श्रीमती सौ० दानशीला जैन महिला रत्न भंवरीदेवी पांड्या सुजानगढ

यह सस्था अभी नवीन ही वीर सवत् २४६५ मे श्री १००८ श्री प पू सिद्ध क्षेत्र गजपन्था मे श्री प पू १०८ श्री आचार्य महावीर कीर्ति जी महाराज के तत्वावधान मे श्रीमती सौ दान शीला जैन महिला रत्न भवरीदेवी धर्म-पत्नी श्रीमान राय साहब जैनरत्न मुनिसघभक्त शिरोमणि सेठ चादमलजी पाड्या सुजानगढ वालो के करकमलो द्वारा स्थापित हुई है जिसके अन्तर्गत प्रथम पुष्प श्री नवदेवता विधान पूजन (सकल सौभाग्य व्रत) का आपके सामने आ गया है। इसी प्रकार इस सस्था से नवीन ग्रथ प्रकाशित होकर जनता के सामने आते रहेंगे, धर्म बन्धुओ से निवेदन है कि इस सस्था से लाभ लेवे।

संस्था का उद्देश्य

(१) श्री दि० जैन आर्ष मार्ग को पोषन करने वाले धार्मिक ट्रैक्ट (धर्म ग्रन्थ) छपाना और उन्हे फ्री या उचित मूल्य पर वितरण करना ।

(२) श्री दि० जैन विद्वानो को पारितोषिक देकर उनका सम्मान करना ।

(३) श्री दि० जैन आचार्य साधु साध्वियो द्वारा लिखित मौलिक पुस्तके छापना एव उनके उपदेशो का प्रचार करना ।

(४) साधु वर्ग को स्वाध्याय के लिए शास्त्र ग्रन्थादि प्रदान की व्यवस्था करना ।

(५) प्राचीन अप्रकाशित ग्रथो को प्राप्त कर उन्हे सग्रहीत करना एव उनके प्रकाशित करने कि व्यवस्था करना ।
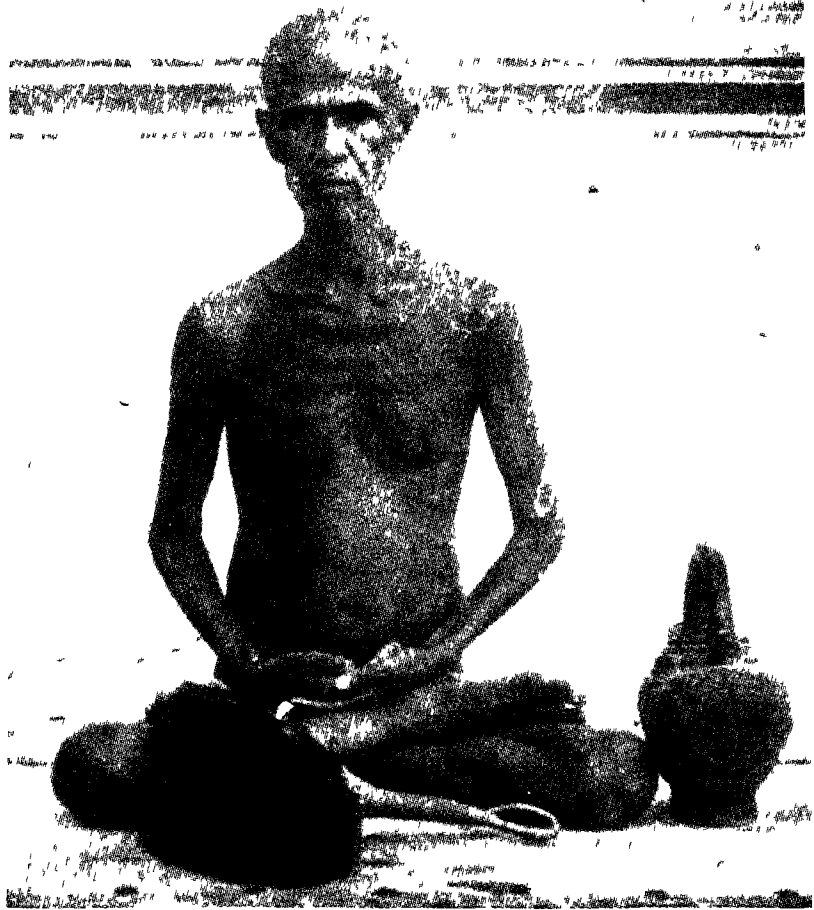
श्री १०८ आचार्य श्री शिवसागरजी महाराज

मुनि दीक्षा
वि स. २००६ नागौर
आषाढ सुदी ११

स्वर्गवास
वि स २०२६ श्री शान्तिवीर नगर,
श्री महावीरजी
फाल्गुन कृष्णा अमावस्या

❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

अथ पंचामृताभिषेक पाठ

पंच नमस्कार मंत्र

आर्या छंद:- णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ।

मंगलाष्टक

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकट-प्रद्योतरत्नप्रभा–
भास्वत्पादनखेदव प्रवचनाभोधीदव स्थायिन ।
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठका साधव ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पचगुरव कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ।।१।।
सम्यग्दर्शन-वोधवृत्तममल रत्नत्रय पावन ।
मुक्ति-श्री-नगराधिनाथजिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रद ।
धर्म सूक्तिसुधा च चैत्यमखिल चैत्यालय श्र्यालय ।
प्रोक्त च त्रिविध चतुर्विधममी कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ।।२।।
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विशति ,
श्रीमतो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णुप्रतिविष्णु लागलधरा सप्तोतरा विशति–
स्त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषा कुर्वन्तु मे)ते) मगलम् ।।३।।
देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवताः ।

श्री तीर्थङ्करमातृकाश्च जनका यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा ।
द्वात्रिशत्त्रिदशाधिपास्तिथिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा ।
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगरणा कुर्वन्तु मे (ते) मंगलम् ।।४।।
ये सर्वौषधऋद्धय मुतपसोऽवृद्धिगता पच ये
ये चाष्टागमहानिमित्तकुशला ये ऽष्टाविधाश्चाररणा ।
पचज्ञानधरास्त्रयोपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वरा
सप्तैते सकलार्चिता गरणभृत कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ।।५।।
कैलासे वृषभस्य निर्वृ तिमही वीरस्य पावापुरे ।
चपाया वमुपूज्यसज्जिनपते सम्मेदशैलेऽर्हता
शेषारणामपि चोर्जयतशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो
निर्वारणावनय प्रसिद्धविभवा कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ।।६।।
ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा
जबूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ।
इक्ष्वाकारगिरौ च कुन्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहा कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ।।७।।
यो गर्भावतरोत्सवो भगवता जन्माभिषेकोत्सवो
यो जात परिनिष्क्रमेरण विभवो य केवलज्ञानभाक् ।
य कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सभावित स्वार्गिभि
कल्यारगानि च तानि पच सतत कुर्वन्तु मे (ते) मगलम् ।।८।।
इत्थ श्रीजिनमगलाष्टकमिद सौभाग्यसपत्प्रद
कल्यारगेषु महोत्सवेषु सुधियस्यस्यतीर्थङ्करारगा मुष ।

ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ।।९।।

—इति मगलाष्टकम्—

श्रीमज्जिनेद्रमभिवद्यजगत्त्रयेश
स्याद्वादनायकमनतचतुष्टयार्हम् ।।
श्रीमूलसघसुदृशा सुकृतैकहेतु–
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाभ्यधायि ।।

(इस श्लोकको पढकर भगवान् के चरणो मे पुष्पाजलि क्षेपण करना)

श्रीमन्मदरसुन्दरे शुचिजलैर्धौतै सदर्भाक्षितै ।
पीठे मुक्तिकर निधाय रचित त्वत्पादपद्मस्रज ।।
इन्द्रोऽह निजभूषणार्थकमिद यज्ञोपवीत दधे ।
मुद्राककणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ।।

(इस श्लोकको पढकर आभूषण व यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये)

तिलक लगाने का श्लोक

सौगन्ध्सगतमधुव्रतझङ्कृतेन,
सवर्ण्यमानमिव गधमनिद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृन्दवन्द्य–
पादारविदमभिवद्य जिनोत्तमानाम् ।।

अभिषेक के लिये भूमि प्रक्षालन करने का श्लोक—

ये सन्ति केचिदिह दिव्यकुलप्रसूता
नागा. प्रभूतबलदर्पयुता विबोधा ।

सरक्षणार्थममृतेन शुभेन तेषा ।
प्रक्षालयामि पुरत स्नपनस्य भूमिम् ।।

अभिषेक के लिये पीठ प्रक्षालन करने का श्लोक—

क्षीरार्णवस्य पयसा शुचिभि प्रवाहै ।
प्रक्षालित सुरवरैर्यदनेकवारम् ।।
अत्युद्धमुद्यतमह जिनपादपीठ ।
प्रक्षालयामि भवसम्भवतापहारि ।।

पीठ पर श्रीकार लिखने का श्लोक—

श्रीशारदा सुमुखनिर्गतबीजवर्णम्,
श्रीमगलीकवरसर्वजनस्य नित्यम् ।।
श्रीमत्स्वय क्षयति तस्य विनाशविघ्नम्,
श्रीकारवर्णलिखित जिनभद्रपीठे ।।

दश दिकपाल आह्वान श्लोक—

इन्द्राग्निदण्डधरनैऋतपाशपाणि,
वायूत्तरेशशशिमौलिफणीद्रचन्द्रा ।
आगत्य यूयमिह सानुचरा सचिह्ना,
स्व स्व प्रतिच्छत बलि जिनपाभिषेके ।।

[नीचे लिखे मन्त्रो को पढकर दिक्पालो को अर्घ चढावे]

ॐ आ क्रौ "ह्री" इन्द्र आगच्छ २ इन्द्राय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौ "ह्री" अग्ने आगच्छ २ अग्नये स्वाहा ।।
ॐ आ क्रौ "ह्री" यम आगच्छ २ यमाय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौ "ह्री" नैऋत आगच्छ २ नैऋतत्याय स्वाहा ।।

ॐ आ क्रौ "ह्री" वरुण आगच्छ २ वरुणाय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौ "ह्री" पवन आगच्छ २ पवनाय स्वाहा ।।
ॐ आ क्रौ "ह्री" कुवेर आगच्छ २ कुवेराय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौ "ह्री" ऐशान आगच्छ २ ऐशानाय स्वाहा ।।
ॐ आ क्रौ "ह्री" धरणीद्र आगच्छ २ धरणीद्राय स्वाहा ।
ॐ आ क्रौ "ह्री" मोम आगच्छ २ सोमाय स्वाहा ।।

नाथ ! त्रिलोकमहिताय दशप्रकार—
धर्माम्बुवृष्टिपरिषिक्त जगत्त्रयाय ।
अर्घ महार्घगुणरत्नमहार्णवाय ।
तुभ्य ददामि कुसुमैर्विशदाक्षतैश्च ।।

—इति दक्ष दिक्पाल अर्घम्—

जन्मोत्सवादि-समयेषु यदीयकीर्त्ति ।
सेद्रा सुरा प्रमदभारनता स्तुवन्ति ।।
तस्याग्रतो जिनपते परया विशुध्द्या ।
पुष्पाजलि मलयजार्द्रमुपाक्षिपेऽहम् ।।

—इति पुष्पाजलि—

दध्युज्ज्वलाक्षतमनोहरपुष्पदीपै ।
पात्रार्पितै प्रतिदिन महतादरेण ।।
त्रैलोक्यमगलसुखालयकामदाह—
मारार्तिक तवविभोरवतारयामि ।।

—इति मगल आरती अवतारण—

य पाडुकामलशिलागतमादिदेव—

मस्नापयन्सुरवरा सुरशैलमूर्ध्नि ।

कल्याणमीप्सुरहमक्षततोयपुष्पै ।

सम्भावयामि पुर एव तदीय बिबम् ।।

—इति बिबस्थापनम् –

सत्पल्लवार्चितमुखान् कलधौतरूप्य—

ताम्रारकूटघटितान् पयसा-सुपूर्णान् ।।

सवाह्यतामिव गताश्चतुर समुद्रान् ।

सस्थापयामि कलशान् जिनवेदिकाते ।।

— इति कलशस्थापनम्—

आभि पुण्याभिरद्भि परिमलबहुलेनामुना चन्दनेन,

श्रीदृक्पेयैरमीभि शुचिसदलचयैरुद्गमैरेभि रुद्धै ।

हृद्यै रेभिर्निवेद्यै र्मखभवनमिमैर्दीपयद्भि प्रदीपै,

धूपै प्रायोभिरेभि पृथुभिरपि फलैरेभिरीश यजामि ।।

—इति अर्घम्—

दूरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी–

सलग्नरत्नकिरणच्छविधूसराघ्रिम् ।

प्रस्वेदतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टै–

र्भक्त्याजलैर्जिनपति बहुधाभिषिचे ।।

ॐ ह्री श्रीमत भगवत कृपालसत वृषभादिवर्धमानात चतुर्विशतितीर्थङ्करपरमदेव आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे '' 'देशे ' नाम्नि नगरे एतद्''' जिन चैत्यालये स०' ' ' मासाना मासोत्तममासे'''''

मासे ·······पक्षे·········तिथौ·· ·· वासरे पौर्वाह्णिक समये मुनिआर्यिकाश्रावकश्राविकानाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषिचे नम । इति रस स्नपनम् ।

मुस्निग्धैर्नवनालिकेरफलजैराम्रादिजातैस्तथा ।
पुण्ड्रेक्ष्वादिसमुद्भवैश्च गुरुभि पापापहै रञ्जसा ।।
पीयूषद्रवसन्निभैवररसै सञ्ज्ञानसप्राप्तये ।
सुष्वादैरमलैरल जिनविभुम् भक्त्यानघ स्नापये ।।

ॐ ह्री · इति रस स्नपनम् ।

नालिकेरजलै स्वच्छै शीतै पूतैर्मनोहरै ।
स्नानक्रिया कृतार्थस्य विदधे विश्वदर्शिन ।।

ॐ ह्री इति नालिकेर रस स्नपनम

सपक्वै कनकच्छायै सामोदैर्मोदकारिभि ।
सहकाररसै स्नान कुर्म शर्मैकसद्मन ।।

ॐ ह्री इति आम्र रस स्नपनम्

मुक्त्यगनानर्मविकीर्यमाणै पिष्टार्थकर्पुररजो विलासै ।
माधुर्यधुर्यैवरशर्करौधैर्भक्त्या जिनस्य स्नपन करोमि ।।

ॐ ह्री · इति शर्करा स्नपनम् ।

भक्त्या ललाटतटदेशनिवेशितोच्चै ।
हस्तै श्च्युता सुरवराऽसुरमर्त्यनाथै ।
तत्कालपीलितमहेक्षुरसस्य धारा ।
सद्य पुनातु जिनविम्बगतैव युष्मान् ।।

ॐ ह्री·· इति इक्षु रस स्नपनम् ।

उत्कृष्टवर्णनवहेमरसाभिराम–
देहप्रभावलयसङ्गमलुप्तदीप्तिम् ।।
धारा घृतस्य शुभगन्धगुणानुमेया ।
वन्देऽर्हता सुरभिसस्नपनोपयुक्ताम् ।।
ॐ ह्री · ··   इति घृत स्नपनम ।

सम्पूर्णशारदशशाकमरीचजाल–
स्यन्दैरिवात्मयशसामिव सुप्रवाहै ।।
क्षीरैर्जिना शुचितरैरभिषिच्यमाना ।
सम्पादयन्तु मम चित्तसमीहितानि ।
ॐ ह्री   इति दुग्धस्नपनम् ।

दुग्धाब्धिवीचिपयसचितफेनराशि–
पाडुत्वकातिमयधीरयतामतीव ।।
दघ्नागता जिनपते प्रतिमा सुधारा ।
सम्पद्यता सपदि वाञ्छितसिद्धये व ।।
ॐ ह्री   इति दधि स्नपनम् ।

सस्नापितस्य घृतदुग्धदधीक्षुवाहे ।
सर्वाभिरौषधिभिरर्हतउज्ज्वलाभि ।।
उद्वर्तितस्य विदधाम्यभिषेकमेला–
कालेयकु कुमरसोत्कटवारिपूरै ।।
ॐ ह्री · · · ·   इति सर्वोषधि स्नपनम् ।

कर्पूरधूलिमिलितै धनसारपङ्क–
सम्मिश्रतै कमलतन्दुलपिण्डपिण्डै ।
उद्वर्तन भगवतो वितनोमि देह–
स्नेहोपलेपकलनापरिलोपनाय ।।

इति चन्दनादिलेपन करोमि स्वाहा ।

समृद्ध भक्तया परया विशुध्द्या,
कर्पूरसम्मिश्रितचन्दनेन ।
जिनेन्द्रस्यदेवा सुरपुष्पवृष्टि,
विलेपन चारु करोमि मुक्त्यै ।।

इति चन्दनादि लेहन करोमि स्वाहा ।

वासन्तिकाजातिसुरेशवृन्दै–
र्बंधूकवृन्दैरपि चम्पकाद्यै
पुष्पैरनेकैरलिभिर्हु ताग्रै,
श्रीमज्जिनेन्द्राध्रियुग यजेऽह ।।

इति पुष्पवृष्टि करोमि स्वाहा ।

इष्टैर्मनोरथशतैरिव भव्यपु सा,
पूर्णै सुवर्णकलशैर्निखिलैर्वसानै ।।
ससारसागरविलघनहेतुसेतु–
माप्लावये त्रिभुवनैकपति जिनेन्द्रम् ।।

ॐ ह्री ... इति चतु कोण कलशस्नपनम् ।

द्रव्यैरनल्पघनसार चतु समाद्य-
रामोदवासितसमस्तदिगतरालै ।
मिश्रीकृतेन पयसा जिनपुङ्गवाना,
त्रैलोक्यपावनमह स्नपन करोमि ।।
ॐ ह्री इति सुगन्धित स्नपनम ।

अथ शांति मंत्र प्रारंभ्यते

ॐ नम सिद्धेभ्य । श्री वीतरागाय नम ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते पार्श्वतीर्थङ्कराय द्वादशगणपरिवेष्टिताय, शुक्लध्यानपवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोकमहीव्याप्ताय, अनन्तससारचक्रपरिमर्दनाय, अनन्तदर्शनाय, अनन्तवीर्याय, अनन्तसुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशङ्कराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्रफणामण्डलमण्डिताय, ऋष्यार्यिकाश्राविकाप्रमुखचतु सघोपसर्गविनाशनाय, घातिकर्मविनाशनाय, अघातिकर्मविनाशनाय, अपवाय छिधि छिधि भिधि भिधि । मृत्यु छिधि भिधि २ । अतिकाम छिधि छिधि भिधि २ । रतिकाम छिधि २ भिधि २ । क्रोध छिधि २ भिधि । अग्नि छिधि २ भिधि २ । सर्वशत्रु छिधि २ भिधि २ । सर्वोपसर्ग छिधि २ भिधि २ । सर्वविघ्न छिधि २ भिधि २ । सर्वभय छिधि २ भिधि २ । सर्वराजभय छिधि २ भिधि २ । सर्वचौरभय

छिधि २ भिधि २ । सर्वदुष्टभय छिधि २ भिधि २ सर्वमृगभय छिधि २ भिधि २ । सर्वमात्मचक्रभय छिधि २ भिधि २ । सर्वपरमन्त्र छिधि २ भिधि २ । सर्वशूलरोग छिधि २ भिधि २ । सर्वक्षयरोग छिधि २ भिधि २ । सर्वकुष्ठरोग छिधि २ भिधि २ । सर्वक्रूररोग छिधि २ भिधि २ । सर्वनरमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वगजमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वाश्वमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वगोमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वमहिषमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वधान्यमारी छिधि २ भिधि २ । सर्ववृक्षमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वगलमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वपत्रमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वपुष्पमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वफलमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वराष्ट्रमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वदेशमारी छिधि २ भिधि २ । सर्वविषमारी छिधि २ भिधि २ । सर्व-वेतालशाकिनीभय छिधि २ भिधि २ । सर्ववेदनीय छिधि २ भिधि २ । सर्वमोहनीय छिधि २ भिधि २ । सर्वकर्माष्टक छिधि २ भिधि २ ।

ॐ सुदर्शनमहाराज चक्र विक्रम तेजोबल शौर्यवीर्य शाति कुरु कुरु । सर्वजनानन्दन कुरु कुरु । सर्वभव्यानदन कुरु कुरु । सर्वगोकुलानन्दन कुरु कुरु । सर्वग्रामनगरखेटकर्व-टमटवपत्तनद्रोणमुख–सवाहानन्दन कुरु कुरु । सर्वलोकानन्दन

कुरु कुरु । सर्वदेशानन्दन कुरु कुरु । सर्वयजमानानन्दन कुरु कुरु सर्वदुख हन हन, दह दह, पच पच, कुट कुट, शीघ्र शीघ्र ।

यत्सुख त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जित ।
अभय क्षेममारोग्य स्वस्तिरस्तु विधीयते ।।

शिवमस्तु । कुलगोत्रधनधान्य सदास्तु ।चन्द्रप्रभवा सुपूज्यमल्लिवर्द्धमान पुष्पदत शीतल मूनिसुव्रत नेमिनाथ पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नम इत्यनेन मत्रेण नवग्रहार्थ गधोदक-धारावर्षणम् ।

अथ शांति धारा

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ अर्ह व म ह स त व व म म ह ह स स त त प प झ झ झ्वी झ्वी क्षी क्षी द्रा द्रा द्री द्री द्रावय द्रावय नमो अर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्री क्रौ मम पाप खडय खडय हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय शीघ्र कुरु कुरु । ॐ नमोऽर्ह झ झ्वी क्ष्वी ह स झ व ह्व प ह क्षा क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्ष ॐ ह्रा ह्री ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रो ह्र असिआउसा नम मम पूजकस्य (सर्वपूजकाना) ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा । ॐ द्रा द्रा द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ मम श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु शातिरस्तु कातिरस्तु कल्याणमस्तु मम

कार्यसिद्धय र्थ सर्वविघ्ननिवारणार्थ श्रीमद्भगवते सर्वोत्कृष्ट त्रैलोक्यनाथोर्चित पादपद्मप्रसादात् सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु स्वस्तिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु श्रीशातिनाथो माम् प्रति प्रसीदतु, श्री वीतरागदेवो माम् प्रति प्रसीदतु, श्री जिनेन्द्र परम मागल्यनामधेयो ममेहामुत्र च सिद्धि तनोतु । ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चितामणि–पार्श्वतीर्थ–कराय रत्नत्रयरूपाय अनतचतुष्टयसहिताय धरणेन्द्रफणा–मण्डलमण्डिताय समवसरणलक्ष्मीशोभिताय इन्द्र धरणेन्द्र-चक्रवर्त्यादिपूजित पादपद्माय केवलज्ञानलक्ष्मीशोभिताय जिनराज महादेवाय अष्टादश दोष रहिताय षट्चत्वारिशत् गुण सयुक्ताय परम गुरु परमात्मने सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य परमेश्वराय देवाय सर्वसत्व–हितकराय धर्मचक्रधीश्वराय सर्वविद्या परमेश्वराय त्रैलोक्य–मोहनाय धरणेन्द्र–पद्मावती सहिताय अतुलबलवीर्यपराक्रमाय अनेक दैत्य–दानव कोटि मुकुट घृष्ट पाद पीठाय ब्रह्मा विष्णु रुद्र नारद खेचर पूजिताय सर्व भव्यजनानन्दकराय सर्व रोग मृत्यु घोरोपसर्ग विनाशाय सर्व देश ग्रामपुर पट्टन राजा प्रजा शान्तिकराय सर्व जीव विघ्न निवारण समर्थाय श्री पार्श्वदेवाधिदेवाय नमोस्तु । श्रीजिनराज पूजन प्रसादात् सर्व सेवकानाम् सर्व दोष रोग शोक भय पीडा विनाशन कुरु कुरु, सर्व शान्ति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा । ॐ नमो श्री शान्ति देवाय

सर्वारिष्ट शांति कराय ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः अ सि आ उ सा मम सर्व-विघ्नशांति कुरु कुरु स्वाहा। मम तुष्टिं पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ पूजन प्रसादात् मम अशुभानि पापानि छिन्द २ भिन्द २, मम पर दुष्टजनोपकृत मंत्र तंत्र दृष्टि मुष्टि छल छिद्र दोषान् छिन्द २ भिन्द २, मम अग्नि चोर जल सर्प व्याधि छिन्द २ भिन्द २, मारी कृतोपद्रावान् छिद २ भिन्द २, सर्व भैरव देव दानव वीर नारसिंह योगिनी कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, डाकिनी शाकिनी भूत भैरवादि कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी देव देवी घृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, अग्निकुमार कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, उदधिकुमार-स्तनित कुमार कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द, द्वीपकुमार दिक् कुमार कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, वातकुमार मेघकुमार कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, इन्द्रादि दश दिग्पाल देवकृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, जय विजय अपराजित मणिभद्र पूर्णभद्रादि क्षेत्रपाल कृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, राक्षस वैताल दैत्य दानव यक्षादिकृत विघ्नान् छिन्द २ भिन्द २, नवग्रह कृत सर्वग्राम नगरी पीडा छिन्द २ भिन्द२ , सर्व अष्ट कुली नाग जनित विष भयान् छिन्द २, भिन्द, सर्व ग्राम नगर देश मारी रोगान् छिन्द २

भिन्द २, सर्व स्थावर जगम वृश्चिक दृष्टि विष जातिविष सर्वादिकृत दौषान् छिन्द २ भिन्द २, सर्वसिह अष्टापद व्याघ्रव्याल वनचर जीवभयान् छिद २ भिद २, पर शत्रु कृत मारणोच्चाटन विद्वैषन मोहन वशीकरणादि दोषान् छिन्द २ भिन्द २, सर्वदेशपुर मारीम् छिन्द २ भिन्द २, सर्व हस्ती घोटक मरीम् छिन्द २ भिन्द २, गौवृषभादि तिर्यच मारीम् छिन्द २ भिन्द २, सर्ववृक्ष पुष्पलतामारी छिन्द २ भिन्द २, ॐ भगवती श्री चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती देवी अस्मिन् जिनेन्द्र भवने आगच्छ २ एहि २ तिष्ठ २ वलि गृहाण २ मम धन धान्य समृद्धि कुरु २ सर्व भव्य जीवानन्दन कुरु कुरु सर्व देश ग्रामपुर मध्ये क्षुद्रोपद्रव सर्व दोष मृत्यु पीडा विनाशन कुरु कुरु सर्व पर चक्र भय निवारण कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ आ क्रो ह्री श्री वृषभादि वर्धमानात चतुर्विशति तीर्थकर महादेवा प्रीयताम् २, मम पापानि शाम्यतु घोरोपसर्गाणि सर्व विघ्नानि शाम्यतु, ॐ आ क्रौ ह्री चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावती देवी प्रीयताम् २, ओ आ क्रौ ह्री श्री रोहिण्यादि महादेवी अत्र आगच्छ २ सर्व देवता प्रीयताम् २, ओ आ क्रौ ह्री श्री मणिभद्रादि यक्षकुमारदेवा प्रीयताम् २, सर्वे जिनशासक रक्षक देवा प्रीयंताम् २ । श्री आदित्य सोम मगल बुध वृहस्पति शुक्र

शनि राहु केतु सर्वे नवग्रहा प्रीयताम् २, प्रसीदतु । देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ करोतु शांति भगवान् जिनेन्द्र । यत्सुख त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जित । अभय क्षेम आरोग्य स्वस्तिरस्तु मम सदा । यस्यार्थं क्रियते कर्म सप्रीतो- नित्य मस्तुमे । शांतिक पौष्टिक चैव सर्वकार्येषु सिद्धिद । आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् । विसर्जन न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।

इति शांतिधारा

❀ बड़ी शांतिधारा ❀

(नागौर भण्डार से प्राप्त)

गंधोदक स्नपन समये इमे शांतिमंत्रा पठ्यन्ते ।

ॐ ह्री श्री क्ली ऐं र्हं व ह्म स त प व व म म ह्र ह स स त त प प भ भ झ्वी झ्वी क्ष्वी क्ष्वी द्रा द्रा द्री द्री द्रावय द्रावय नमोर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्री क्रों र्ह्र मम पाप कडु कडु दह दह हन हन पच पच पाचय पाचय र्ह्र भ झ्वी क्ष्वी ह स भ व ह्ल प ह क्षा क्षी क्षू क्षे क्षो क्षौ क्ष क्षी ह्रा ह्री ह्रू ह्रे ह्रै ह्रो ह्रौ ह्रं ह्र ह्री द्रा द्रा द्री द्री द्रावय द्रावय, नमोर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ मम श्रीरस्तु सिद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा ।

ॐ निखिल भुवन भवन मंगलभूतजिनपति स्नपन समय

सप्राप्तावसरमभिनवकर्पू र कालागुरु कु कुम हरिचदनाद्यनेक सुगधि बधुर गध द्रव्य सभार सबध बधुरमखिलदिगन्तराल व्याप्त सौरभातिशय समाकृष्ट समदसामज कपोल तल विगलित मद मुदित मधुकरनिकरमर्हत्परमेश्वरपवित्रतरगात्रस्पर्शनमात्रपवित्रमयीद गधोदकधारावर्षमशेषहर्षनिबधन शाति करोतु, कातिमाविष्करोतु कल्याण प्रादु करोतु सौभाग्य सतनोतु आरोग्य तनोतु सपद सपादयतु, विपदमपसादयतु, यशोविकाशयतु, मन प्रसादयतु, आयुर्दीर्घयतु, श्रिय श्लाघयतु, शुद्धि विशुद्धयतु, बुद्धि वर्द्धयतु, श्रेय पुष्णातु, प्रत्यवाय मुष्णातु अनभिमत निवारयतु मनोरथ परिपूरयतु । परमोत्सवकारणमिद परममगलमिद परमपावनमिद स्वस्त्यम्तु न क्ष्वी क्ष्वी ह स असिआउसा सर्वशाति कुरु कुरु पुष्टि कुरु कुरु स्वाहा ।

ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय घातिकर्मविनाशनाय अष्टमहाप्रातिहार्यसहिताय चतुस्त्रिशदतिशयसमेताय अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यसुखात्मकाय अष्टादशदोषरहिताय पचमहाकल्याण सपूर्णाय नवकेवल लब्धि समन्विताय दशविशेषणसयुक्ताय देवाधिदेवाय धर्मचक्राधीश्वराय धर्मोपदेशनकराय चमर बैरोचनाच्युतेन्द्रप्रभृतीद्रशतेन मेरु शिखरशेखरीभूतपाडुकशिलातले गधोदकपरिपूरितानेकविचित्र मणिमय मगल कलशैरभिषिक्तमिदानीमर्हत् त्रिलोकेश्वरमर्हत्परमेष्ठी-

नमभिषेचयामि । र्ह भ्भ्वी क्ष्वी ह् स द्रा द्री अर्हन ह्री क्ली ब्लू द्रावय द्रावय स्वाहा । ॐ शीतोदक प्रदानेन शीतलो भगवान्प्रसीदतु शीता आप पातु शिव मागल्यन्तु श्रीमदस्तु व । ॐ गधोदकप्रदानेन अभिनदनो भगवान्प्रसीदतु गन्धा पातु शिव मागल्यन्तु व । ॐ अक्षतोदकप्रदानेन अनतो भगवान्प्रसीदतु अक्षता पातु शिव मागल्यन्तु श्रीमदस्तु व । ॐ पुष्पोदक प्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान्प्रसीदतु पुष्पाणि पातु शिव मागल्यतु श्रीमदस्तु व । ॐ नैवेद्य प्रदानेन नेमिर्भगवान्प्रसीदतु पीयूषपिडा पातु शिव मागल्यतु श्रीमदस्तु व । ॐ प्रदीप-प्रदाने चन्द्रप्रभो भगवान्प्रसीदतु कर्पूर मणिमय दीपा पातु शिव मागल्यतु श्रीमदस्तु व । धूपप्रदानेन धर्म्मनाथो भगवान् प्रसीदतु गुग्गुलादि दशागधूपा पातु शिव मागल्यतु श्रीमदस्तु व । ॐ फलप्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान् प्रसीदतु, क्रमुक नारगप्रभृतिफलानि पातु शिव मागल्यतु श्रीमदस्तु व । ॐ अर्हन्त पातु व , सद्धम श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु व । ॐ सिद्धा पातु व हृदय निर्वाण प्रयच्छतु व , ॐ आचार्य्या पातु व , शीतल सौगधमस्तु व , ॐ उपाध्याया पातु व , सौमनस्य चास्तु व , ॐ साधव पातु व , अन्नदान-तपोवीज्ञानमस्तु व ।

ॐ वृषभनाथस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् अष्टविध कर्मविनाशन चास्तु व , ॐ अजितस्वामिन. श्री पादपद्म-

प्रसादात्विजय प्रयच्छतु व । ॐ सभवनाथ स्वामिन पादपद्मप्रसादादनेकगुणगणाश्चास्तु व , ॐ अभिनदनस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादादभिमतफल प्रयच्छतु व । ॐ सुमति स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादादमृत पवित्र प्रयच्छतु व । ॐ श्री पद्मप्रभस्वामी दया प्रयच्छतु व । ॐ सुपार्श्वे स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु व । ॐ श्री चद्रप्रभ स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् चद्रार्कतेजोस्तु व । ॐ श्री पुष्पदत स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् पुष्पसायकातिशयोस्तु व । ॐ शीतल स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् अशुभ कर्ममलप्रक्षालनमस्तु व । ॐ श्रेयोजिन श्रेयस्करोस्तु व । ॐ श्री वासुपूज्य स्वामीन रत्नत्रयावासकरोऽस्तु व । ॐ विमलस्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् सद्धर्म बुद्धिर्वे मागल्य चास्तु व । ॐ अनन्तनाथस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादादनेकधनधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु व ।

ॐ श्रीधर्मनाथ स्वामिन श्रीपादपद्मप्रसादात् शर्मप्रचयोऽस्तु व । ॐ श्रीमदर्हत्परमेश्वरसर्वज्ञ परमेष्ठिशान्तिनाथस्वामी शान्तिकरोस्तु व । ॐ कुन्थु स्वामीन तत्राभिवृद्धिकरोस्तु व । ॐ अरस्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् परम कल्याण परपरास्तु व । ॐ श्री मल्लिनाथ स्वामी शल्यविमोचनकरोस्तु व । ॐ श्री मुनिसुव्रत स्वामिन श्री पादपद्मप्रसादात् सम्यग्दर्शन चास्तु व । ॐ श्री नमि भट्टारक स्वामी

सम्यग्ज्ञान प्रयच्छतु व । ॐ श्री अरिष्टनेमिर्भगवानक्षत चारित्र ददातु व । ॐ श्रीमत्पार्श्वभट्टारक श्री पादपद्म-प्रसादात् सर्व विघ्नविनाशनमस्तु व । ॐ श्री वर्द्धमान स्वामिन श्री पादपद्म प्रसादात् सम्यग्दर्शनाद्यष्ट गुण विशिष्टतास्तु व । ॐ वृषभादयो महावीरवर्द्धमानपर्यन्ता-श्चतुर्विशतितीर्थकरा अर्हतो भगवन्त सर्वज्ञा सर्वदर्शिन सकलवीर्या वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकनाथा-स्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जाति जरामरण रोग प्रमुक्ता भव्य-जनहृत्–कमल सबोधनकरा, अनेक गुणगणाकलकृत दिव्यदेहधरा पचमहाकल्याणाष्ट महाप्रातिहार्य–चतुस्त्रिशद तिशय विशेष सप्राप्ता सुरासुरोरगेन्द्र मुकुटतटधटित मणिगणकिरणराग रजित चारुचरणारविदद्वन्द्वा नृपतिशत सहस्रालकृत सार्व भौम राजाधिराज परमेश्वर सकल चक्र-वर्तिबलदेवमडलीक महामडलीक महामात्य सेनानाथ श्रेष्ठिपुरोहितादि शिरस्कराजलिनमित कर तल कमल मुकुलालकृत पादपद्म युगला विद्याधरराजकिरीट कोटि रुचिर रोचिग्वृष्ट चंचच्चरण कमला कुलिशनाल रजत-मृणाल मदारकर्णिकारातिकुल शिखरि शेखर गगन गमन मदाकिनी महाहृद् नदीनदशत सहस्र कमलवासिन्यादि सर्वाभरण भूषिताग सकल सुरसुन्दरीवृन्द वदित चारुचरण-युगलकमला देवाधिदेवा. सशिष्यप्रतिशिष्यानुवर्गा. प्रसीदतु

व । ॐ परमनिर्वाणमार्गप्राप्त परममगल (नामधेया) सद्धर्मसर्वकार्येष्वैहिकामुत्रके च सिद्धा सिद्धि प्रयच्छतु व ।

ॐ आमौषधय, क्ष्वेडोषधय, जल्लौषधय, विडौषध-यश्च व प्रीयता ॐ मति स्मृति सज्ञा चिताभिनिबोधिक ज्ञानिनश्च व प्रीयता। ॐ कोष्ठबुद्धि बीजबुद्धि पदानुसारिबुद्धि सभिन्नश्रोतार श्रमणाश्च व प्रीयता । ॐ जलचारण जघाचारण ततुचारण-भूमि-चारण पुष्पचारण श्रेणिचारण पत्रचारण फलचारण चतुरगुलचारणाकाशचारणाश्च व प्रीयताम् ।

ॐ मनोवली वचोवली कायवलीनश्च व प्रीयता । ॐ सप्तर्द्धि गुण सयुक्ताश्च व प्रीयता ।

ॐ उग्रतपो दीप्ततपो महातपो घोरतपोनुपमतपो महोग्रतपश्च व प्रीयता ॐ मतिश्रुतावधिमन पर्ययकेवल-ज्ञानिनश्च व प्रीयता ।

ॐ यम वरुण कुवेर वासवश्च व प्रीयता । ॐ असुर-नाग विद्युत् सुपर्णाग्नि वातस्तनितोदधिद्वीप दिक्कुमारादि दशविध भवनवासिकाश्च व प्रीयता । ॐ अनन्ता-वासुकि-तक्षक-कर्कोटक पदम-महापद्म-शखपाल-कुलिक-जय-विजय नागाश्च व प्रीयता । ॐ इन्द्राग्नि-यम-नैऋति वरुण-वायु कुवेरेशानधरणेन्द्र-सोमदेवता इति दशविधदिग्देवताश्च व प्रीयता । ॐ सुरासुरोरगेन्द्र, चमरचारण-सिद्धविद्याधर-

किन्नर–किंपुरुष-गारुड-गंधर्व-यक्ष–राक्षस–भूतपिशाश्च व प्रीयता । ॐ बुद्ध शुक्र बृहस्पत्यर्क्केन्दु शनिश्चागारक-राहु-केतु-तारकादि महाग्रहा ज्योतिष्क देवताश्च व प्रीयता । ॐ चमर वैरोचन- धरणेन्द्र-नंद-भूतानन्द-वेणुदेव वेणुधारि पूर्णवशिष्ट जलकान्त जलप्रभ घोष महाघोष हरिषेण हरिकान्तामित गत्यमितवाहन वेलाजन प्रभंजनाग्निशिखाग्नि-वाहनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च व प्रीयता । ॐ गीतरति गीतकान्त सत्पुरुष महापुरुष सुरूप प्रतिरूप घोष महाघोष पूर्णभद्र मणिभद्र पुष्पचूल महाचूल भीम महाभीम काल महाकालश्चेति षोडशव्यन्तरेन्द्राश्च व प्रीयताम् ।

ॐ नाभिराज जितशत्रु विजितारि स्वयंवर मेघरथ वरुणराज सुप्रतिष्ठ महासेन सुग्रीव दृढरथ विष्णुराज वसुपूज्य कृतशर्मा सिंहसेन भानुराज विश्वसेन सूररसेन सुदर्शन कुंभराज सुमित्र जयवर्मा समुद्रविजय अश्वसेन सिद्धार्थाश्चेति चर्तुविंशति जिनजनकाश्च व प्रीयता । ॐ मरुदेवी जया सुषेणा सिद्धार्था मंगला सुसीमा पृथ्वीमति लक्ष्मीमति रामा सुनन्दा वैष्णवी विजया सुशर्मा लक्ष्मणा सुदत्ता ऐरावती कमलावती सुमित्रा प्रभावती पद्मावती सुभद्रा शिवादेवी ब्रह्मला प्रियकारिण्य भिधानाश्चेति चतुर्विंशतिजि-नजिनन्यो व प्रीयता । ॐ वृषभमुख महायक्ष त्रिमुख यक्षेश्वर तुंबुरु सुकुमवर नंदि विजयाजित ब्रह्मेन्द्रशातकुमारषण्मुख

पाताल किन्नर गरुड गधर्व महेद्र कुबेर वरुण विद्युत्प्रभ सर्वाह्न धरणेन्द्र मातग नामानश्चतुर्विशति यक्षेन्द्राश्च व प्रीयताम् । ॐ चक्रेश्वरी रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रश्रृखला पुरुषदत्ता मनि-वेगा काली ज्वालामालिनी महाकाली मानवी गोरी गान्धारी वैरोट्यनन्तमती मानसी महामानसी जयापराजिता बहुरू-पिणी चामुडी कुष्माडि पद्मावती सिद्धायिनीति चतुर्विशति यक्षीदेवताश्च व प्रीयता । ॐ कुलगिरि शिखर शेखरीभूत महाह्लदादि सरोवर मध्य स्थित सहस्र दल कमल वासिन्यो मानिन्य सकल सुर सुन्दर सुन्दरी वृन्द वन्दित पादकमलाश्च देव्यो व प्रीयता । ॐ यक्ष वैश्वानर राक्षस नट्टत पन्नगासुर सुकुमार पितृ विस्वमालि चमर वैरोचन महाविद्य मार विश्वेश्वर पिडाशिन पञ्चदश तिथीदेवताश्च व प्रीयता । ॐ सौधर्मैशान सानत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लान्तव कापिष्ठ शुक्र शतार सहस्रारानतप्राणतारणाच्युतेद्रादि षोडश कल्पवासिकाश्च व प्रीयता । ॐ हेट्ठीम १, हेट्ठीम मज्झिम २ हेट्ठीम उवरिम ३ मज्झिम हेट्ठीम ४ मज्झिम मज्झिम ५ मज्झिम उवरिम ६ उवरिम हेट्ठीम ७ उवरिम मज्झिम ८ उवरिम उवरिम ९ नव ग्रैवेयक वैमानिकाश्च व प्रीयता । ॐ अभ्य-र्चिमालिनी वैरोचना सोमा सोमरूपाताश्च व प्रीयता ।

ॐ अतीतानागत वर्तमान विकल्पानेकानेक विविध गुण सम्पूर्णाष्टगुणसयुक्त सकलसिद्धसमूहाश्च व. प्रीयता ।

सर्वकाल मपि सपत्तिरस्तु सिद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु शाति-रस्तु कल्यारणसपदस्तु । मन समाधिरस्तु श्रेयोभिवृद्धिरस्तु । शमयन्तु घोराणि पापानि, पुण्य वर्द्धता धर्मोवर्द्धता आयु-वर्द्धता कुलगोत्र चाभिवर्धता स्वति भद्र चास्तु व स्वस्ति भद्र चास्तु न । तथा भूयो भूय श्रेय श्रेय श्रो ज्वी क्ष्वी ह स स्वस्त्यस्तु व स्वस्त्यस्तु न स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा ।

ॐनमोऽर्हते भगवने श्रीपार्श्वतीर्थ कराय श्रीमद्‌रत्नत्रया-लकृताय दिव्यमूर्ति प्रभामण्डल मण्डिताय द्वादशगरणपरिवेष्टि-ताय शुक्लध्यान पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयभुवे सिद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रिलोकमहिताय अनन्त ससार चक्रपरिमर्दनाय अनन्त ज्ञानाय अनन्त दर्शनाय अनन्त वीर्याय अनन्त सुखाय सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्यवशकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे धरणेन्द्र फणामण्डल मण्डिताय उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयकराय अजगामराय अपवाय , अस्माक मृत्यु छिद २ भिद २,हन्तु काम छिद २ भिद २,रतिकाम छिद २ भिद २, वलिकाम छिद २ भिद २, क्रोध छिद २ भिद २, पाप छिद २ भिद २,बैर छिद २ भिद २,वायुधारण छिद २ भिद २, अग्निमशन छिद २ भिद २, सर्वशत्रु छिन्द २ भिद २,सर्वोपसर्ग छिद२ भिद २,सर्वविघ्न छिद २ भिद २, सर्वभय छिन्द २ भिन्द २, सर्वराजभय छिन्द २ भिन्द २, सर्वचौर्यभय छिद २ भिन्द २, सर्वदुष्टमृगभय छिद २ भिद २,

सर्वदोषभय छिद २ भिद २,सर्वरोग छिद२ भिद २,सर्वव्याधि भय छिद२ भिद२,सर्वडामर छिद२ भिद२,मर्वपरमत्र छिद २ भिद २, सर्वात्मघात छिद भिद २, सर्वपरघात छिद २ भिद२, सर्वशूलरोग छिद२ भिद२, सर्वाक्षिरोग छिद२भिद२, सर्वशिरोरोग छिद२भिद२,सर्वमहिषमारी छिद २ भिद २, सर्वनरमारी छिद २ भिद २, सर्वग्रश्वमारि छिद २ भिद २, सर्वगोमारि छिद २ भिद २, सर्वमहिषमारी छिद २ भिद २, सर्वाजिमारी छिद २ भिद २, सर्वधान्यमारी छिद २ भिद २, सर्ववृक्षमारी छिद २ भिद २,सर्वगुल्ममारी छिद २ भिद २, सर्वसस्यमारी छिद २ भिद २, सर्वलतामारी छिद २ भिद २, सर्वपत्रमारी छिद २ भिद २, सर्वपुष्पमारी छिद २ भिद २, सर्व फलमारी छिद २ भिद २,सर्वराष्ट्रमारी छिद २ भिद २, सर्वदेशमारी छिद२भिद२,सर्वक्रूररोगबेतालशाकिनीडाकिनी-भय छिद २ भिद २,सर्ववेदनीयम् छिद २ भिद, सर्वापसमारी छिद२ भिद२, दुर्भगत्व छिद२ भिद२। ॐ सुदर्शन महाराज-चक्र विक्रम सत्त्व तेजोबल शौर्य वश कुरु २, सर्वजनानन्द कुरु २ सर्वगोकुलानन्द कुरु २ सर्वग्रामनगरकेटकर्वट मटव पत्तन दोरणमुख सवाहनानन्द कुरु २ सर्वानन्द कुरु २ हन २ दह २ पच २ कुट २ शीघ्र २ वशमानय ह्लू फट् स्वाहा।

ॐ पुण्याह पुण्याह प्रीयन्ता २ भगवतोऽर्हन्त सर्वज्ञ सर्व दर्शिन सकल वीर्या सकल सुखास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वर–

पूजिता स्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरण विप्रमुक्ता सर्वविदश्च, ॐ श्री ह्री धृतिकीर्ति बुद्धि लक्ष्म्यश्च व प्रीयता । ॐ वृषभादि वर्द्धमाना शाति-करा सकल कर्मरिपुकान्तार दुर्ग विषयेषु रक्षन्तु मे जिनेन्द्रा, आदित्य सोमाङ्गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु नाम नवग्रहाश्च व प्रीयता २, तिथिकरण नक्षत्रवार मुहूर्त लग्न देवाश्च इहान्यत्र ग्रामनगराधिदेवताश्चते सर्वे गुरु भक्ता अक्षीण कोष कोष्ठागारा भवेयुर्दान तपोवीर्य धर्मानुष्ठानादि नित्यमेस्तु । मातृ पितृ भ्रातृ पुत्र पौत्र कलत्र गुरु सुहृत्स्व-जन सम्बन्धि बन्धुवर्ग सहितस्यास्य यजमानस्य ·· ··नामधे-यस्य धनधान्यैश्वर्यद्यु ति बल यश कीर्ति बुद्धिर्धन भवतु । सामोद प्रमोदो भवतु शातिर्भवतु । तुष्टिर्भवतु, पुष्टिर्भवतु, सिद्धिर्भवतु, वृद्धिर्भवतु, अविघ्नमस्तु, आरोग्यमस्तु, आयुष्य-मस्तु, शुभकर्मास्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, शास्त्र समृद्धिरस्तु, इष्टस-पदस्तु, अरिष्ट निरसनमस्तु, धन धान्य समृद्धिरस्तु, कामभा-ङ्गल्योत्सवा सन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पापानि शाम्यन्तु, पुण्य वर्द्धता धर्मोर्द्धता श्री च वर्द्धता, आयुवर्द्धता कुल गोत्र चाभिवर्द्धता, स्वस्तिभद्र चास्तु व स्वस्ति भद्र चास्तु न इवी क्ष्वी ह स स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा ।

यत्सुख त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जित । अभय क्षेम-मारोग्य स्वस्ति तेषु विधियते । श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु

जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव दृष्टिसुपुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधन धान्यम् सदास्तु ।

अरिहत पूजा (मराठी)

चिद्रूप विश्वरूपव्यतिकरितमनाद्यन्तमानन्द सान्द्रम् ।
यत्प्राक् तैस्तैर्विवर्तैर्व्यवृतदतिपतिदद्दु खसौख्याभिमानै ।।
कर्मोद्रेकात्तदात्मप्रति घमलभिदोद्भिन्ननिस्सीमतेज ।
प्रत्यासीदत्परौज स्फुरदिह परमब्रह्म यज्ञेऽर्हमाह्वम् ।।१।।

ॐ ह्री विधियज्ञप्रतिज्ञापनाय श्रीजिनप्रतिमाग्रे पुष्पाजलि क्षिपेत्।
स्वामिन् सवौषट् कृताह्वाननस्य-तिष्ठतेनोट्ट कितस्थापनस्य ।
स्व निर्नेक्तु त वषट्कार जाग्रत-सान्निध्यस्य प्रारभेयाष्टधेष्टि ।।
ॐ ह्री अर्हं श्री परब्रह्म अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वानन । अत्र तिष्ठ ठ ठ स्वाहा स्थापन । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा सन्निधिकरण ।।

अथाष्टकं

गगा सिध्वादि सभव नीर । स्वर्ण भृ गार खचितचि हीर ।।
जन्मजरा कृता करि दुर । जिनेन्द्रपाय पूजामि भाव करीन ।।
पूजो २ श्री अरिहत देवा । ज्याची शतइन्द्र करिता सेवा ।।
आहे पुण्याधर्माचा ठेवा । जिनेन्द्रपाय पूजामि भाव करीन २ ।।
पूजो २ । जलम्० ।

ॐ ह्री श्री अर्हत परमेष्ठिने जल निर्वपामीति स्वाहा ।

पित काश्मीर केशर आणि । सित श्रीखड कर्पूर सानि ।।
करि भवभ्रमाचीहानि । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २।।
पूजो २ । चदन० ।
शाली कामोद बासि सुगधी । ज्याची मुक्ताफल कृतसन्धि ।।
केलि अक्षय पदाचि बन्दि । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २।।
पूजो २ । अक्षतान्० ।
नाग चपा चपक चमेली । मन्द मन्दार पुष्प बहु मेली ।।
काम विध्वस होत सहेली ।जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २।।
पूजो २ । पुष्प० ।
घृत घेवर साखर पूरी । गव्य मिष्टान्न मिश्रित खीरी ।।
ज्याने केले क्षुधादिक दूरी। जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करनी २।।
पूजो २ । नैवेद्यम्० ।
घृत भरुनी दीप प्रजाली । आणि कापूर वत्ति उजाली ।।
महामोहान्ध तमते टाली। जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २।।
पूजो २ । दीप० ।
खेऊँ जिनाध्रि धूप पिगाणि । दस सुगन्ध वासित आणि ।।
अष्ट कर्माचि होईल हाणि। जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २।।
पूजो २ । धूप० ।
पुङ्ग नारिग श्रीफल केले । पिस्ता बादाम अखरोट फल ।।
तुम्हा होईलफल आढाल। जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २।।
पूजो २ । फल० ।

अष्ट द्रव्यादि एकत्र जोडी । कर्म बन्धा च बन्धन तोडी ।।
हेमकीर्त्ति च भव भ्रम फेडि । जिनेन्द्र पाय पूजामि भाव करीन २।।
पूजो २। अर्घ० ।

* अथ जयमाला प्रारभ्यते *

बन्दे तानमरप्रवेकमुकुटप्रोत्तारणप्रस्फुर–।
द्धामस्तोमविमिश्रिता पदनखाभीषूत्करारेजिरे ।।
येषा तीर्थकरेशिना सुरसरिद्वारप्रवाहोल्लुट–।
द्दिव्यद्देवनितम्बिनीस्तनगलत्काश्मीरपूरा इव ।।१।।
वृषभ त्रिभुवनपतिशतवन्द्यम् । मन्दरगिरिमिव धीरमनिद्यम् ।।
वन्दे मनसिजगज मृगराज । राजिततनुमजित जिनराज ।।२।।
सम्भवदुज्ज्वलगुण महिमान । सम्भवजिनपति, म प्रतिमान ।।
अभिनन्दनमानन्दित लोक । विद्यालोकित लोकालोक ।।३।।
सुमति प्रशमितकुनयसमूह । निर्दलिताखिलकर्मसमूह ।।
बन्दे त पद्मप्रभदेव । देवासुरनर कृतपदसेवम् ।।४।।
सेवकमुनिजनसुरतरु पार्श्व । प्रणमामि प्रथित च सुपार्श्व ।।
त्रिभुवनजननयनोत्पलचन्द्र । चन्द्रप्रभमपवर्जिततन्द्रम् ।।५।।
सुविधि विधुधवलोज्वलकीर्ति । त्रिभुवनजनपतिकीर्त्तिमूर्त्ति ।।
भूतलपतिनुतशीतलनाथ । ध्यानमहानलहुतरतिनाथ ।।६।।
स्पष्टानतचतुष्टयनिलय । श्रेयोजिनपतिमपगतविलय ।।
श्रीवसुपूज्यसुत नुतपाद । भव्यजन प्रियदिव्यनिनाद ।।७।।
कोमलकमलदलायतनेत्र । विमल केवलसस्यसुक्षेत्र ।।

निर्जितकन्तुमनन्तजिनेश । वन्दे मुक्तिवधूपरमेश ।।८।।
धर्मं निर्मलशर्मपिन्नम् । धर्मपरायरग जनताशरणम् ।।
शाति शातिकर जनताया । भक्तिभरक्रमकमलनताया ।।९।।
कुन्थु गुणमणिगिरत्नकरण्ड । ससाराम्बुधितरगातरण्ड ।।
अमरीनेत्रचकोरीचन्द्र । अरपरम पदविनुतमहेन्द्र ।।१०।।
उद्धतमोहमहाभटमल्ल । मल्लि फुल्लशरप्रतिमल्ल ।।
सुव्रतमपगतदोषनिकाय । चरणाबुजनुतदेवनिकाय ।।११।।
नौमि नमि गुणरत्नसमुद्र । योगिनिरूपितयोग समुद्र ।।
नीलश्यामलकोमलगात्र । नेमिस्वामिनमेनोदात्र ।।१२।।
फणिफणमण्डपमण्डितदेह । पार्श्व निजहितगतसदेह ।।
वीरमपारचरित्रपवित्र । कर्ममहीरुहमूललवित्र ।।१३।।
ससाराप्रतिमप्रतिबोध । परिनिष्क्रमण केवलबोध ।।
परिनिर्वृतिसुखबोधित बोध । सारासारविचार विबोध ।।१४।।
बन्दे मन्दरमस्तकपीठे । कृतजन्माभिषव नुतपीठे ।।
दर्शन तव लब्धिविकरण, केवलबोधामृत भवतरण ।।१५।।
अनणुगुणनिबद्धामर्हता माघनदि-
व्रतिरचितसुवर्णानेक पुष्पव्रजाना ।।
स भवति जयमाला यो विधत्ते स्वकण्ठे-
प्रियपतिरमर श्री मोक्षलक्ष्मीवधूनाम् ।।१६।।
ॐ ह्री अर्हन्त परमेष्ठिने जयमाला पूर्ण । महार्घ्य

नवदेव मण्डल विधान
२८ सर्वसाधु
3 जिन चैत्य
3 जिन चैत्यालय
२५ उपाध्याय
3६ आचार्य
ॐ
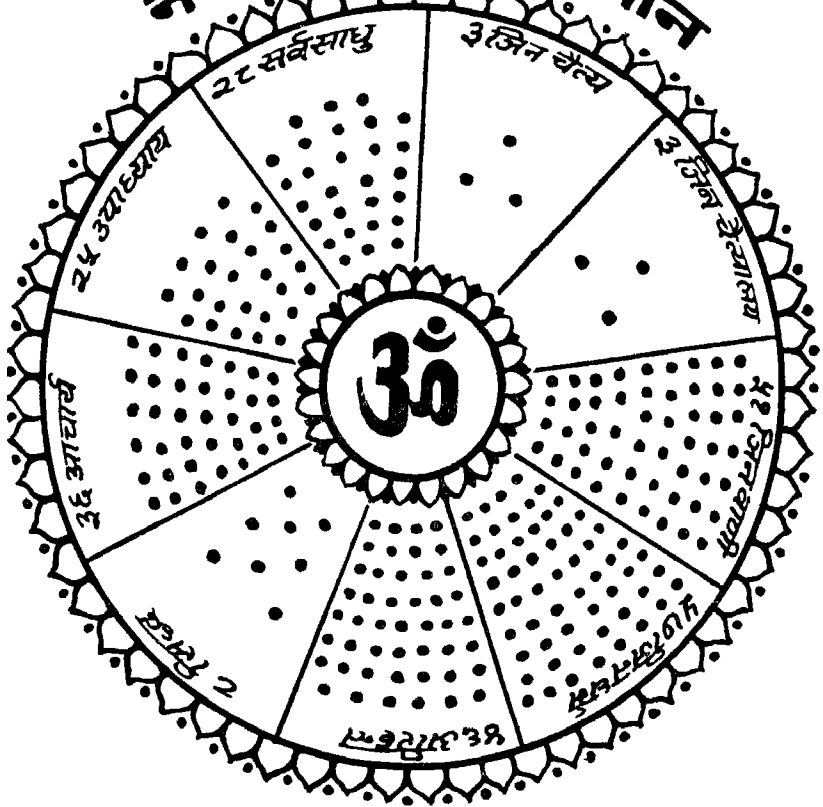
श्रीनवदेवतास्तोत्रम्

।। अर्हन्त ।।

श्रीमन्तो जिनपा जगत्त्रयनुता दोषैर्विमुक्तात्मका
लोकालोकविलोकनैकचतुराश्शुद्धा परा निर्मला ।
दिव्यानन्तचतुष्टयादिकयुता सत्यस्वरूपात्मका
प्राप्ता यैर्भुवि प्रातिहार्यविभवा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।१।।

।। सिद्धाः ।।

श्रीमन्तो नृसुरासुरेन्द्रमहिता लोकाग्रसंवासिन
नित्य सर्वसुखाकरा भयहरा विश्वेषु कामप्रदा ।
कर्मातीतविशुद्धभावसहिता ज्योति स्वरूपात्मका
श्रीसिद्धा जननार्त्तिमृत्युरहिता कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।२।

।। आचार्याः ।।

पञ्चाचारपरायण सुविमलाश्चारित्रसद्योतका
अर्हद्रूपधाराश्च निस्पृहपरा कामादिदोषोज्झिता ।
बाह्याभ्यन्तरसङ्गमोहरहिता शुद्धात्मसंराधका
आचार्या नरदेवपूजितपदा कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।३।।

॥ उपाध्यायाः ॥

वेदाङ्गं निखिलागम शुभतरं पूर्णं पुराण सदा ।
सूक्ष्मासूक्ष्मसमस्ततत्वकथक श्रीद्वादशाङ्ग शुभम् ।
स्वात्मज्ञानविवृद्धये गतमला येऽध्यापयन्तीश्वरा
निर्द्वन्द्वा वरपाठका सुविमला कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।४।

॥ साधवः ॥

त्यक्ताशा भवभोगपुत्रतनुजा मोह पर दुस्त्यज
नि सगा करुणालयाश्च विरता दैगम्बरा धीघना
शुद्धाचाररता निजात्मरसिका ब्रह्मस्वरूपात्मका–
देवेन्द्रै रपि पूजिता सुमुनय कुर्वन्तु ते मगलम् ।५।

॥ जिनधर्मः ॥

जीवानामभयप्रद सुखकर ससारदुखापह
सौख्य यो नितराददाति सकल दिव्य मनोवाञ्छितम् ।
तीर्थेशैरपि धारितो ह्यनुपम स्वर्मोक्षससाधक
धर्म सोऽत्र जिनोदितो हितकर कुर्यात्सदा मंगलम् ।६।

॥ जिनागमम् ॥

स्याद्वादाङ्कधर त्रिलोकमहित देवै सदा सस्तुत
सन्देहादिविरोधभावरहित सर्वार्थसन्देशकम् ।

याथातथ्यमजेयमाप्तकथित कोटिप्रभाभासित
श्रीमज्जैनमुशासन हितकर कुर्यात्सदा मगलम् ।७।

॥ जिनप्रतिमाः ॥

सौम्या सर्वविकारभावरहिता शान्तिस्वरूपात्मका
शुद्धध्यानमया प्रशान्तवन्दना श्रीप्रातिहार्यान्विता ।
स्वात्मानन्दविकाशकश्च मुभगाऽचैतन्यभावावहा
पञ्चाना परमेष्ठिना हि कृतय' कुर्वन्तु ते मगलम् ।८।

॥ जिनालयाः ॥

घण्टातोरणदामधूपघटकै राजन्त मन्मगलै
स्त्रोत्रैश्चित्तहरैर्महोत्सवशतैर्वादित्रसगीतकै ।
पूजारम्भमहाभिषेकयजनै पुण्यात्करै सत्क्रियै
श्रीचैत्यायतनानि तानि कृतिना कुर्वन्तु तेमगलम् ॥९॥

॥ निखिलनवदेवता ॥

इत्थ मगलदायका जिनवरा सिद्धाश्च सूर्यादय
पूज्यास्ता नवदेवता अघहरास्तीर्थोत्तमास्तारका ।
चारित्रोज्वलता विशुद्धशमता बोधि समाधि तथा
श्रीजैनेन्द्र 'सुधर्म' मात्मसुखद कुर्वन्तु तेमगलम् ॥१०।

समुच्चय नव देवता पूजा

❀ स्थापना ❀

गीता–छन्द

मै पच परमेष्ठि यजु अरु चैत्य चत्यालय सदा ।
अरु सप्त भगी नमु वाणी, धर्म जिनवर ने कहा ।।
नव देव है ये जगत माही स्थापना हम कर रहे ।
आव्हान हो धरकर–हृदय मे पाप पु जो को दहे ।।

ॐ ह्री श्री पच परमेष्ठी जिन चैत्य चैत्यालय जिनवाणी स्याद्वाद जिन धर्मेति नव देव समुह अत्रावतरावत्तर सवौषट् आव्हान ।

ॐ ह्री . . . अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन
ॐ ह्री. . . . . . अत्र मम सन्निहितो भव भव
वषट् सन्निधिकरण ।।

अथाष्टकं--गीता

भर स्वर्ण भारी मिष्ट जल की भक्ति दिल मे जोडिए ।
त्र्य रोग नाशन हेतु धारा तीन जिन पद छोडिए ।।
पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ।।१।।

ॐ ह्री श्री नव देव समूह भ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।।१।।

कर्पूर चन्दन है सुगन्धित केशरी घिस लाय है ।
समार का दुख मेटने को चरण मे चर्चाय है ।।
पूज्य है नव देव जगमे जो अनादि काल मे ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ।।२।।
ॐ ह्री श्री नव देव समूहभ्य ससारताप विनाशनाय चन्दन निर्षपामीति स्वाहा ।।२।।

चन्द्र सम उज्ज्वल अखण्डित अक्षतो को लीजिए ।
अक्षय निधि के हेतु जिनवर पु ज पद मे कीजिए ।।
पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल मे ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल मे ।।
ॐ ह्री श्री नवदेव समुहभ्योऽक्षय पद प्राप्तये
अक्षतान निर्वगामीति स्वाहा ।।३।।

ससार मे भटका बहुत ही ब्रह्मचारी ना बना ।
उस काम दुष्ट विनाशने को पुष्प छोड़ू हूं घाना ।
पूज्य है नवदेव जग मे जो अनादि काल से ।
पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ।।
ॐ ह्री श्री नव देव समूहभ्य काम वाण विनाशनाय
पुष्पाणि निर्वपामीति स्वाहा ।।४।।

दौडता मैं इत उते ही भूख जोरो से लगी ।
पकवान नाना भाति छोडे क्षुधा डाकिन ही भगी ।।

पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।

पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ।।

ॐ ह्रीं श्री नव देब समूहभ्य क्षुधा रोग विनाशनाय

नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।।५।।

मोह की फासी चढे हम ज्ञान शुद्ध न पाइया ।

हे प्रभो घृत दीप छोड़ु मोह तम नश जाइया ।।

पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।

पूजते हम भक्तिपूर्वक हो पृथक भव जाल से ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहभ्यो मोहान्धकार विनाश

नाय दीप निर्वपामीति स्वाहा ।।६।।

इन कर्म रिपुने हे प्रभो जी दाबदी मम आत्मा ।

लेकर सुगन्धित धूप खेउ होय रिपु का खात्मा ।।

पूज्य हे नव देव जग मे जो अनादि काल से ।

पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहभ्योऽष्टकर्म विनाशनाय

धूप निर्वपामीति स्वाहा ।।

सेव नारगी सुदाडिम श्री फलादिक फल खरे ।

लेकर चढाऊ पद कमल मे शीघ्र शिवरमणीवरे ।।

पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से ।

पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल से ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेव समूहभ्यो मोक्षफल प्राप्तये

फल निर्वपामोति स्वाहा ।।७।।

नीर चन्दन अक्षतादि द्रव्य मनहर कीजिये ।

पूज हो धर भक्ति उरमे मोक्ष पद फिर लीजिए ।

पूज्य है नव देव जग मे जो अनादि काल से

पूजते हम भक्ति पूर्वक हो पृथक भव जाल मे ।।

ॐ ह्री नव देव समूहभ्यो ऽनर्घ्य पद प्राप्तये

अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।।

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ अर्ह अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नम स्वाहा ।।

१०८ । ५४ । २७ । ९ वार जाप पुष्प या लोग से करे ।

* अथ जयमालिका *

दोहा—पूज्य श्री नवदेव है जो अनुपम सुखदाय ।

कहूँ महा जयमालिका कर्म हरे दुख दाय ।।

छन्द नाराच

देव जिन राज को नमत्त सुर गुरु सदा ।

पूजते भक्ति नही रच दुख हो कदा ।।

देव अरहन्त का शर्ण हम ले लिया ।

मै नमु त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ पालिया ।।

गर्भ छह मास पूर्व रत्न वृष्टि करत है ।

होत जन्म देव गण मेरु ले धरत है ।

देव अरहन्त का शर्ण हम ले लिया ।

मै नमु त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ पालिया ।।

पचमो क्षीर सागर सु जल लाइया ।
करत अभिषेक इन्द्र देव हर्षाइया ।।देव।।३
अघ घघ घघ घघ, अघ घघ जोर से ।
घघ घघ घघ घघ, ढुलत कलश शोर से ।।देव।।६
जय जय जय जय जयति जय जय जय ।
करत यहा देव जय जय जय जय ।।देव।।५
धृगतत धुगनत होत मिरदग ही ।
कग्त मजीग्यिा किम कि तरग ही ।।देव।।६
बजत सारगी सु, सन सन सन सन ।
नचत शक्रराज ले, धरत पग छम छम ।।देव।।७
इस भाति उत्सव करे देव गरण आय कर ।
लहत सम्यक्त्व को भक्ति उर धार कर ।।देव।।८
मुहोत वैराग्य जिस काल जिन आपको ।
आय लौकान्ति देव करत अनुमोद को ।।देव।।९
लोच पच मुष्ठि से आपने कर लिया ।
त्याग मर्व सग को साधु व्रत धर लिया ।।देव।।१०
उग्र उग्र तप कर साधि निज आत्मा ।
लेय ध्यान खड्ग कर कर्म किये खात्मा ।।देव।।११
देव अरहन्त ने घात्ति कर्म नाशिया ।
हो सुखद गुण अनन्त आपने पालिया ।।देव।।१२
जन्म के होत दश ज्ञान के दश कहा ।

सुमन चतुर्दश करे महा अतिशय लहा ।।देव।।१३

अष्ट प्रातिहार्य सब महतता को करे ।

अनन्त दर्श ज्ञान व्रत्त वीर्यता को धरे ।।१४।।

दोष अष्टादशा होत नही देव ही ।

वाणि सप्त भगी को प्रकाशत्ते एव ही ।।देव।।१५

कर्म महा त्रेशटी प्रकृति नाश कीनिहो ।

ध्यान धार आत्म नासाग्र दृष्टि दीनिहो ।।देव।।१६

वीतरागी आप हो सर्वज्ञता को लहै ।

भूत भावि सम्प्रति पर्याय दृष्ट हो रहे ।।देव।।१७

जीव तीन लोक को हितोपदेश देत हो ।

हो हितोपदेशी आप बन्धु विनहेतु हो ।।देव।।१८

जीवादि सप्त तत्व नव पदार्थ को भासिया ।

होत गुणथान अरु मार्गणा देशिया ।।देव।।१९

समास प्ररूपणा गत्यादि भी हे सही ।

स्याद्वाद तत्व आप अन्यथा है नही ।।देव।।२०

नाश अष्ट कर्म को अष्ट गुण पालिया ।

निजात्म सुक्ख मग्न हो कर्म मैल धोलिया ।।

देव महा सिद्ध का शर्ण हम लेलिया ।

मैं नमू त्रिकाल आप मोक्ष सुख पालिया ।।२१।।

ज्ञान है शरीरि आप सिद्ध लोक राज ते ।

हो अनन्त सुक्खवान निकल ही विराजते ।।

देव महा सिद्ध का शर्ण हम लेलिया ।
मै नमु त्रिकाल आप मोक्ष सुख पा लिया ॥२२॥
पच महाव्रत्त पच समीतिको आदरे ।
करत वश अक्ष आचार पच आचरे ॥
देव महा सूरि की शर्ण हम लेलिया ।
मै नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ॥२३॥
पालते षडावश्यक शेष गुण को धरे ।
पाल तीन गुप्ति सूरि मनमे कष्ट ना करे ॥
देव महा सूरि की शर्ण हम ले लिया ।
मै नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ॥२४॥
पालने आचार आप शिष्य को पलावते ।
होय छत्तीस गुण सूरि पद पावते ॥
देव महासूरि की शर्ण हम ले लिया ।
मै नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ॥२५॥
हो उपाध्याय मुनि तपो व्रत आचरे ।
धरत महा सकल व्रत्त रोष तोष ना करे ॥
देव उपाध्याय की शर्ण हम ले लिया ।
मै नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थको लिया ॥२६॥
अग एकादर्श पूर्व चतुर्दश कहे ।
होत ज्ञान आपको नाम पाठक लहे ॥
देव उपाध्याय की शर्ण हम लेलिया ।

मै नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२८।।

धन्य धन्य साधु अष्ट बीस गुण धारते ।

होत ना अधीर कभी मोह कर्म टारते ।

देव महा साधु की शर्ण हम ले लिया ।

मै नमू त्रिकाल आप मोक्ष पन्थ को लिया ।।२९।।

जिन देव महा विम्बभी शोभते अपार ही ।

स्वर्ण रत्न उपल के होत निर्विकार ही ।।

देव जिन बिम्ब की शर्ण हम ले लिया ।

मै नमू त्रिकाल आप दर्श मुख पा लिया ।।३०।।

बिम्ब तीन लोक मे अनादि आदि जानिए ।

है अगण्य जो लहे सदैव सिर नाइए ।।

देव जिन बिम्ब की शर्ण हम ने लिया ।

मै नमू त्रिकाल आप दर्श मुख पा लिया ।।३१।।

भवन त्रैलोक्य मे ही असख्या लहे ।

है अनादि आदि महादेव गणधर कहै ।।

देव जिन जिनालया हर्ष कर पूजिया ।

मै नमू त्रिकाल आप दर्श मुख पालिया ।।३२।।

हेम रत्न उपलमय शोभते महान ही ।

नमन करे बार बार होत कल्याण ही ।

देव जिन जिनालया हर्ष कर पूजिया ।

मै नमू त्रिकाल आप दर्श सुख पालिया ।।३३।।

निकसि जिन वदन ते भव्य महाभाग से ।
झेल गणधर महा प्रकाशि अनुराग से ।।
मात जिन वाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मै नमू त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ।।३४।।
होत सप्त भग मय देवि निर्दोषिका ।
आदि अन्त एक हो होत नही दोषिका ।।
मात जिन वाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मै नमू त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ।।३५।।
पूज्य हो मात हम करत श्रद्धान को ।
पाप पुण्य नाश कर लहत शिव थान को ।।
मात जिनवाणि आप अगण्य जीव तारिया ।
मै नमू त्रिकाल आप ज्ञान शुद्ध धारिया ।।३६।।
देव अरहन्त ने भासिया धर्म को ।
स्याद्वाद है वह नष्ट कर कर्म को ।।
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मै नमू त्रिकाल आप जन्म सफल कर लिया ।।३७।।
क्षमादि दश धर्म अरु रत्नत्रय जानिए ।
है अहिंस आदि धर्म भव्य पर मानिए ।।
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मै नमू त्रिकाल आप जन्म सफल कर लियो ।।३८।।
धरत भव्य धर्म को होत कल्याण ही ।

है अगाध धर्म तत्व होत ना बखान हो ।।
धर्म देव पूजते अनन्त सुख पालिया ।
मै नमू त्रिकाल आप जन्म सफल कर लिया ।।३६।।
होत नव देव ये ग्रन्थ मे गाइया ।
कहत "सूर्य मल्ल" जिन चरण सिर नाइया ।।
नमत नव देव को हर्ष उर धारिया ।
करत पूज शुद्ध मन पाप सब जारिया ।।४०।।

घत्ता-छन्द

जय जय नव देव, कर्म नशेव ।
सुरकृत सेव पुण्य करम ।।
जय पूज रचावे गुण गण गावे ।
पाप मिटावे मुक्ति वरम ।।४१।।

ॐ ह्री अरहन्तादि नव देव समुभ्योऽर्ध्य निर्वपामीति स्वाहा ।।

गीता

नव देव है ये वीतरागी नाशते भव भय सदा ।
पूजहूँ वसु द्रव्य लेकर आदि व्याधि न हो कदा ।।
पुत्र मित्ररु पौत्र बाढै स्वर्ग सम्पत्ति आय है ।
नष्ट होवे कर्म सारे मोक्ष नारी पाय है ।।४२।।

इत्याशीर्वाद

श्री अरहन्त पूजन

जोगीराशा—स्थापना

नाश घातिया कर्म आपने, पद पाया अरहन्ता ।
बैठ समवस्त दिव्य ध्वनि से तारे भव्य अन्नता ।
ऐसे उन त्रैलोक्य प्रभु को मन वच काय त्रियोगा ।
आव्हानन् ह्रदि स्थापन करके नाश करू भव रोगा ।।

ॐ ह्रीषद् चत्वारिश गुणोयेत अरहन्त परमेष्ठिन्
अत्रावतराव तर सवोषट् आव्हान ।

ॐ ह्री षट् चत्वारिशशद्‌गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिन्
अत्र तिष्ट तिष्ट ठ ठ स्थापनम्

ॐ ह्री षट् चत्वारिश शद्‌गुणोपेत अरहन्त परमेष्ठिन्
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि करण

अथाष्टक (जोगी राशा)

क्षीरोक्षधि को प्रासुक जलले मन हर्षित भरलाया ।
जन्म जरामृति दूर करन को श्री जिन चरण चढाया ।
श्री अरहन्त सकल परमात्म केवल ज्ञानी राजै
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।

ॐ ह्री श्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेष्ठि ।
भ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति
स्वाहा ।।

मलयागीरी गोशीर सुगन्धित केशर मघ घिसलाऊ ।
लेप करू अरहन्त प्रभुपद ससृति ताप मिटाऊँ ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माही सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेष्टिभ्य ससार ताप विनाश नाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
अनियारे शुभ अक्षत ताजे चन्द्र किरण सम लाऊ ।
पु ज करू जिन गज चरण ढिग अक्षय निधि को पाऊ ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ही षट् चत्वारिशद् गुणोपेत्त श्री अरहन्त परमेष्ठि भ्योऽक्षयपद प्राप्तयै अक्षतान् निर्धपामीति स्वाहा ।।
भाति भाति के पुष्प सुगन्धित डाली भर कर लाया ।
छोडे प्रभु के उत्तम पदमे मदन वाण विनिशाया ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माही सहाई यात्ते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेष्ठि-भ्य काम बाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।
घेवर वावर लाडु पेडा बहु विधि व्यजन ताजे ।
थाल सजाकर भेट चरण ढिग रोग क्षुधा सव भाजे ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।

होवे भव भव माही सहाई याते भव भय भाजे ।।५।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणौपेत श्री अरहन्त परमेष्ठिभ्यो
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेध निर्विपामीति स्वाहा ।।
गोधृत अरु कर्पु र रतन को दीपक सुन्दर जोऊ ।
आरती करु जिन राज प्रभु की मोह तिमिर को खोऊ ।।
श्री अरहन्त मकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माही सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेष्ठिभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीती स्वाहा ।।६।।
दश विधि द्रव्य की धूप बनाई, अति सुगन्धित भाई ।
अष्ट कर्म के नाशन कारण अग्नि माही जलाई ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।।६।।
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोयेत श्री अरहन्त परमेष्टिभ्यो
अष्ट कर्म दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।
मोच चोच अति उत्तम श्रीफल दाडिम अमृत लावे ।
छोडे श्री जिन राज चरण मे मोक्ष महाफल पावे ।।
श्री अरहन्त सकल परमातम केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भव माहि सहाई याते भव भय भाजे ।।
ॐ ही षट् चत्वारिशद् गुणोयेत श्री अरहन्त परमेष्ठिभ्यो
मोक्ष फल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्बाहा ।

तोय चन्दन अक्षत नीरज व्यजन दीपक जोवे ।
धूप महाफल अर्ध चढाऊ अविनाशी पद सोवे ।।
श्री अरहन्त सकल परमातय केवल ज्ञानी राजे ।
होवे भव भय माही सहाई याते भव भय भाजे ।।८।।
ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुणोपेत श्री अरहन्त परमेष्ठितभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्ध निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

❀ अथ प्रत्येक अर्ध ❀

(जन्म के १० अतिशय)

दौहे—जन्म तने जिनराज के अतिशय दश बतलाय ।
स्वेद रहित प्रभुजी सदा पूजू अर्ध चढाय ।।
ॐ ह्री पसेव रहित अतिशय सहित अरहन्त देवैभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

होत नदी मल मूत्र जिन, निर्मल तन सुखदाय ।
ये अतिशय अरहन्त के पूजो अर्ध चढाय ।।
ॐ ह्री मल मूत्र रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

समचतुरा सस्थान है घाट वाध नही होय ।
यह अतिशय तीजा कहा पूजो अर्ध सजोय ।।
ॐ ह्री समचतुर सस्थान अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽअर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

वज्र वृषभ नाराच हे सहनन उत्तम धाधार ।
यह अतिशय प्रभु के कहा पूजु अर्ध उतार ।।४।।
ॐ ह्री वज्रवृषभनाराच सहनन अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्य निर्विपायीति स्वाहा ।।
सुरभित तन सुखदाय है यह अतिशय बतलाय
अर्ध सजोऊ थाल भर पूजु मन बच काय ।।
ॐ ह्री सुगन्धित शरीर अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽअर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।
रूप महा सुन्दर घना काम देव शर्माय ।
उत्तम अर्ध बनाय कर पूजू हर्ष बढाय ।।
ॐ ह्री महारूपातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योअर्ध निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।
आठ अधिक पुन इक सहस लक्षरग गुरग की खान ।
पूजो अध सजोय के होय कर्म की हान ।।७।।
ॐ ह्री शुभ लक्षरग अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।
श्वेत वर्ग श्रोरिगत महा तन मे प्रभु के जान ।
यह अतिशय अनुपम सही पूजू रुचिमनठान ।
ॐ ह्री श्वेत वर्ण श्रोरिगतातिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो-अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।
मधुर मधुर वारगी कहै जन मोहित हो जाय ।

नीरादिक से पूजि हो कर्म रिपु नश जाय ।।
ॐ ह्री मधुर वचनाति सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

बल जनन्त प्रभु का कहा अन्य पुरुष नही होय ।
भाव भक्ति उर धार के पूजू अर्घ सजोय ।।१०।।
ॐ ह्री अनन्त बलातिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ
निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

अतिशय श्री अरहन्त के जन्म तने दश जान ।
पूजू अर्घ्य सजोय के पाऊ पद निर्वाण ।।
ॐ ह्री दश अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो पूर्णार्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।११।।

अथ केवल ज्ञान के दश अतिशय (अडिल्ल)

जहा जिनेश्वर बैठ समवसृत हाल जी ।
वह योजन शत होय नही दुष्कालजी ।।
एसो अतिशय होय महा जिन राय के ।
मन वच तन से पूजू प्रभु सिर नाय के ।।११।।
ॐ ह्री शत योजन दुर्भिक्ष निवारक अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्यो अर्घं निर्विपामीति स्वाहा ।।

होय गमन आकाश प्रभु का जान जी ।
देव भक्ति मे आय करे गुण गान जी ।।

ऐसी अतिशय होय महा जिन राय के ।
मन बच तन से पूजू प्रभु सिर नाय के ।।

ॐ ह्री आकाश गमनातिशय सहित अरहन्त देवभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।

जहा विराजे ईशसु भवि हितकार जी ।
मार सके तिस ठौर नही किस बार जी ।।एसो।।

ॐ ह्री अदया भावातिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

होय नही उपसर्ग प्रभुजी आपको ।
देव मनुष्य पशु करे नही सन्ताप को ।।एसो।।

ॐ ह्री उपसर्ग रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१४।।

क्षुधो रोग से पीडित सब जन देखिया ।
जीत क्षुधा आहार प्रभु नही लेखिया ।।एसो।।

ॐ ह्री कवला हार रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१५।।

तिष्ट समवसृत बीच प्रभु जी राजते ।
मुख दीखे चहु ओर महा सुख काजते ।।एसो।।

ॐ ह्री चतुर मुखविराजमाना अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१६।।

सब विद्या के ईश्वर हो जिन रायजी ।
ध्यावे प्रभु को कर्म नशे दुख दायजी ।।एसो।।
ॐ ह्री सकल विद्या धिपत्यातिशय सहित अरहन्त देवे-
भ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१७।।
पुद्गल पु ज मु एक होय यह तन बना ।
छाया नही प्रभु होय आप अतिशय घना ।।
ॐ ह्री छाया रहित अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१८।।
बढे नही नख केश कभी किसी काल मे ।
नाश घातिया कर्म रहे निज चाल मे ।।एसो।।
ॐ ह्री नख केश वृद्धि रहित अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१९।।
टमकत नाही पलक बन्द नाही खुले ।
नासा दृष्टि लगाय कर्म सब दल मले ।।
ॐ ह्री नेत्र भो चपलता रहित अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२०।।
दौहा—ये अतिशय केवल तने हे आगम परमाण ।
पूजू अर्घ्यं सजोय के उपजे केवल ज्ञान ।।
ॐ ह्री केवल ज्ञान दश अतिशय रहित अरहन्त देवेभ्यो
पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

अथ देवकृत १४ अतिशय (चौपाई)

अर्द्ध मागधी भाषा जान, सब जीवो को सुखद वखान ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्री अर्धमागधी भाषा अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२१।।

सब जीवो मै मैत्री होय पूजू प्रभु को अर्घ सजोय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।।
ॐ ह्री सर्व जीव मैत्री भाव अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२२।।

षट् ऋतु के फल फूले जोय जह् जिनराज विराजे सोय ।
यह अतिशय जिन राज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री षट् ऋतु फल पुष्पातिशयसहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२३।।

एना सम भूमि चमकाय धरत चरण जह आप सुखाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री दर्पण सम भूमि अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२४।।

सुरभित मन्द पवन हितदाय सब जीवो के मन को भाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री सुरभित पवनातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२५।।

सर्वानन्दि होय जिनेन्द्र वन्दे सुरपति आदि खगेन्द्र ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री सर्वानन्द कारक अतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२६।।

कटक रहित भूमि शुभजान जह विराजे हो भगवान ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री कटक रहितातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२७।।

नभ मे होता जय जय कार सब जीवो को सुखद अपार ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री आकाशे जय जय कार शब्दातिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२८।।

गन्धोदक की वृष्टि सुखार करत देव सुख लहत अपार ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री गन्धोदक वृष्टयातिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२९।।

पदतल प्रभु के कमल रचाय महिमा है जिनवर सुखदाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवो कृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री पदतल कमल रचनातिशय अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३०।।

अति निर्मल आकाश लखाय सब जीवो का मन हर्षाय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुति गाय ।
ॐ ह्री गगन निर्मल अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३१।।

धूम रहित सब दिश शोभन्त, जहा विराजे श्री भगवन्त ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री सर्व दिशा निर्मल अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो
ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३२।।

धर्म चक्र प्रभु आगे सोय महिमा जिनवर कहत न होय ।
यह अतिशय जिनराज कहाय देवोकृत है जिन श्रुत गाय ।
ॐ ह्री धर्म चक्रअतिशय सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३३।।

मगल द्रव्य अष्ट शुभ लेय, देव भक्ति वश करत स्वमेव ।
यह अतिशय जिनराज कहाय, देवोकृत है जिनश्रुत गाय ।
ॐ ह्री देवकृत अष्ट मगल द्रव्यअतिशय सहित अरहन्त
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३४।।

दोहा—चवदह अतिशय करत है सुमन भक्ती मे आन ।
पूजे अर्घ्यं चढाय के पावे पद निर्वाण ।।३५।।

ॐ ह्री चतुर्दश अतिशय सहित अरहन्त देवेभ्यो पूर्णार्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२५।।

अथाष्ट प्रातिहार्य (जोगी राशा)

वृक्ष अशोक महा सुखदाई दीखे सुन्दर भाई ।
शोक हरे सब जीवो का प्रभु यह महिमा अधिकाई ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्री अशोक वृक्ष प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।३५।।

देव भक्ति मे आकर प्रभु की पुष्पो को वर्षावे ।
स्तुति पढे, करे पद अर्चन निर्मल गुण को गावे ।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पुजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्री पुष्प वृक्ष वृष्टि प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।३६।।

दिव्य ध्वनि शुभ वर्षे जिनवर सब जीवो सुखदाई ।
पाष विनाशे शुभ पथ भासे पुण्य बढे अधिकाई ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे, मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्री प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।३७।।

पर्वत से ज्यो जल की धारा पडत लगे वह प्यारी ।
त्यो प्रभु चवर ढुरे चतु षष्टी सुमन करे जयकारी ।।

प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्रीं चतुषष्टी चामर विज्यमान प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३८।।

रत्न जडित सिंहासन सुन्दर लागे वह अति प्यारा ।
अधर विराजे उस पर जिनवर देव करे जयकारा ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो हैं ।।
ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३९।।

कोटी सूर्य लज्जित हो जावे तनु भामण्डल भारी ।
तापे सप्त भवो कि वाते दर्शत है सुखकारी ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।
ॐ ह्रीं प्रभामण्डल प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४०।।

देव बजावे नाना बाजे दुन्दुभि शब्द कहावे ।
सुमन करे गुण गान भक्ति मे मन मे बहु हर्षावे ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मनको अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।

ॐ ह्री देव दुन्दभि प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।४१।।

चन्द्रकान्ति सम छत्र तीन शुभ, रत्न जडित सुखकारी ।
रत्नमालिका लटके उसमै तीन जगत दुखहारी ।।
प्रातिहार्य वसु जिनवर सोहे मन को अति ही मोहे ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सजोकर अविनाशी पद हो है ।।

ॐ ह्री छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।८२।।

दोहे

तरु अशोक शुभ पीठ है भामण्डल सुखदाय ।
चबर ढुरे चोंसठ विमल पुष्प वृष्टि वर्षाय ।।
दिव्य ध्वनि नित खिरत है बजत दुन्दुभि सोय ।
तीन छत्र सिर सोहते पूजे मन शुध होय ।।

ॐ ह्री अष्ट प्रातिहार्य विभूति सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।४१।।

अथ अनन्त चतुष्टय अर्घ (सुन्दरी छन्द)

दर्शगुण भी अनन्त लखावही ध्याय जिनवर शिव सुखपावही ।
सो यजू सर्वज्ञ जिनेश को अर्घ दे पद पाऊ मोक्ष को ।।

ॐ ह्री अनन्त दर्शन सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।४३।।

होय ज्ञान अनन्त सु मानिए, तीन लोक चराचर जानिए ।
सो यजु सर्वज्ञ जिनेशको अर्ध दे पद पाऊ मोक्ष को ।।
ॐ ह्री अनन्त ज्ञान सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।४४।।

सुख अनन्ता नन्त सु पाइया, ध्यान बल जिन कर्म खिपाइया ।
सो यजू सर्वज्ञ जिनेश को अर्ध दे पद पाउ मोक्ष को ।।
ॐ ह्री अनन्त सुख सहित अरन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।४५।।

अनन्त वीर्यत्व प्रकाशिया, अन्तराय सुभट अरिनाशिया ।
सो यजू सर्वज्ञ जिनेश को अर्ध दे पद पाऊ मोक्ष को ।।
ॐ ह्री अनन्त वीर्य सहित अरहन्त देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।

गीता—दृग अनन्त ज्ञान अरु सुख वीर्य गणधर ने कहै ।
होत है सर्वज्ञ प्रभु के मोक्ष नारी वे लहै ।।
पूज हू उर भक्ति धरकर पाप मेरै नाश हो ।
अन्त शिव नारी वरु मै ज्ञान भानु प्रकाश हो ।।

ॐ ह्री अनन्त चतुष्टय सहित अरहन्त देवेभ्यो पूर्णार्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।४६।।

जन्म दश दश ज्ञान केवल देव कृत चौदह भने ।
वसु प्रातिहार्य सु है चुतुष्टय गुण छियालिस शुभ बनें ।

ये है सु अतिशय जगत गुरु के प्रीति मनमे लाइया ।।
नीरादि वसु विधि द्रव्य ले जिन देव पदमे चढाइया ।

ॐ ह्री षट् चत्वारिशद्गुणोपेत अरहन्त देवेभ्य पूर्णार्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त परमेष्टि देवेभ्यो नम स्वाहा ।।

यहा ६ बार पुष्पो से जाप करे ।

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—छह चालीस गुण को धरे, सकल प्रभु कहलाय ।
गाऊ अब जयमालिका दुरित महा मिटि जाय ।।

त्रोटक

नही दोष अठारह है तुममे ।
अरहन्त देव हम कहत तुम्हे ।।
जय ऊर्ध्व अधो अर मध्य तने ।
सब जीव नमे तव भक्ति सने ।।१।।
षट् मास पूर्व प्रभु गर्भ तने ।
अरु गर्भ रहे नव मास भने ।
जय रत्नसु वृष्टि कुवेर करे ।
जय नृप आगण मे मोद भरे ।।२।।
जय अष्ट कुमारी मु मात सेय ।
हर विधि से उनको मोद देय ।।

जय जन्म हुआ प्रभु आप ज्ञान ।
घर घर मे मगल गाय गान ।।३।।
जय तीन लोक मे हर्ष छाय ।
जय नर्क जीव समता लहाय ।।
यह अतिशय प्रभु जी आप जान ।
नही होय अन्य प्राणी महान ।।४।।
जय इन्द्र मोद धर बैठ नाग ।
ऐरावत ले परिवार भाग ।।
इन्द्राणी जाय प्रसूति थान ।
प्रभु लेय गोद मे हर्ष ठान ।।५।।
निज पति को दे सम सूर्य बाल ।
वह निरख कहै प्रभु है कमाल ।।
जब तृप्त हुआ नही दर्श पाय ।
हज्जार नयन सु धर बनाय ।।६।।
कर ताडल नृत्य सु भक्ति धार ।
हर्षे शचीन्द्र मन मे अपार ।।
पग धरे छमा छम ठुमुक चाल ।
जय बजे घू घरू के सु जाल ।।७।।
फिर चढ गज मेरु सिखर जाय ।
अरु क्षीरोदधिका नीर लाय ।।
तव न्हवन किया त्रैलोक्य राय ।

सिर कलश ढोल आनन्द पाय ।।८।।
शची किया नेत्र अ जन सु आय ।
प्रभु वस्त्रा भूषण दिये पिनाय ।।
जय द्वितीय मयक समान प्रभु ।
बढ चले आप त्रय ज्ञान विभु ।।९।।
जय अथिर लखा ससार ख्वार ।
वैराग्य हुआ तव सुखद सार ।।
लौकान्तिक आये स्वर्ग ब्रह्म ।
सवोध पधारे जिन सु ब्रह्म ।।१०।।
जय वैठ शिबिका गये अरण्य ।
कचलोच किय प्रभु धन्य धन्य ।।
जय मनपर्यय प्रभु प्रगट ज्ञान ।
हो तपकर धर तुम शुक्ल ध्यान ।।११।।
जय धाति कर्म चक चूर किया ।
जय केवल ज्ञान सु आप लिया ।।
जय समवसरण उपदेश देय ।
भवि जीवो को भव उद्धरेय ।।१२।।
जय जन्म तने अतिशय दश है ।
जय केवल ज्ञान लहे दश है ।।
जय देव चतुर्दश हर्ष करे ।
वसु प्राति हार्य सुख सज्ज खरे ।।१३।।

जय नन्त चतुष्टय आप गहै ।
प्रभु गुण छियालिस नित्य रहै ॥
जय लक्षण सहसरु अष्ट शुद्ध ।
हो लसे आप मे अति विशुद्ध ॥१४॥
जय मोक्ष मार्ग के नेता हो ।
अरु कर्म शैल के भेत्ता हो ।
जय भूत भविष्यत् वर्तमान ।
पर्याय झलकति आप ज्ञान ॥१५॥
नही कवला हार सु आप लेय ।
सब जान पदारथ नित्य हेय ॥
शिव रमणी के भर्तार आप ।
जय कर्म काटने हो सुचाप ॥१६॥
जय सकल ज्ञेय के ज्ञाता हो ।
पर निजानन्द के पाता हो ॥
हो देव मेरे हिए आन वसो ।
तब ध्यान धरं हम कर्म नसो ॥१७॥
तब गुण चिन्ते हम बार बार ।
जिससे टलती आपद अपार ॥
प्रभु आप जगत के भूषण हो ।
अरु नाना रहित कुदूषण हो ॥१८॥
जय महिमा अगम अपार आप ।

जय शुद्ध चेतना करत जाप ।।

जय परमदेव परमातम हो ।

जय ध्याता ध्यान गुणातम हो ।।१९।।

जय हरि हर ब्रह्मा आप कहै ।

जय शकर विष्णु नाम लहै ।

नव केवल लब्धि आप लसे ।

जय ध्यान महा शुभ आप बसे ।।२०।।

मै भ्रमण किया प्रभु भूल आप ।

फल पाया बहु जिस पुण्य पाप ।।

अब हरो हमारी पीर नाथ ।

याते पकडे प्रभु आप साथ ।।२१।।

जय स्याद्वाद शासन अनूप ।

नही बाधित हो मिथ्या स्वरूप ।।

सब विद्या के प्रभु आप ईश ।

जय पाप हरो मम हे जगीश ।।२२।।

तब नाम लेत सब विघ्न जाय ।

जय भूत प्रेत सब ही नशाय ।।

ससार लखे यह अथिर रूप ।

दुख पाये जिससे त्रिजग भूप ।।२३।।

हो परम देव गुण गण अपार ।

हम तुच्छ बुद्धि नहि लहत पार ।।

पद पकज मे हो नमस्कार ।
जय "सूरज" को प्रभु तार तार ॥२४॥

धता

जय जय जयमाला परम रसाला गावे ध्यावे पाप हरे ।
नाशत भव ज्वाला गुण मणि माला पावे सुक्ख अनन्त खरे ॥

ॐ ह्री षट् चत्वारिशद् गुण सहित अरहन्त परमेष्टिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

अडिल

जो भवि पूजे महा जिनेश्वर राय जी ।
पाप ताप अरु विघ्न टरे दुख दाय जी ॥
पुत्र मित्र और सम्पत्ति हो अधिकाय जी ।
अनुक्रम से शिव नार वरे सुख दाय जी ॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

श्री सिद्ध पूजा (अडिल)

अर्ध्व लोक के अन्त बात मे जानिए ।
ज्ञान शरीरि कर्म रहित पहिचानिए ॥
अष्ट गुणो को धार निकल जिन आप ही ।
करू प्रभु आव्हान मिटें सन्ताप ही ॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण श्री परमेष्टिन् अत्रावतरावतर ।
सवौषट इत्याव्हान् ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्रतिष्ट तिष्ट
ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र मम
सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरण ।

अथाष्टकं (त्रिभंगी)

गगा जल लाया धार चढाया अति हुलसाया सिद्ध महा ।
त्रय रोग नशावे भक्ति वढावे होवे सुक्ख अनन्त अहा ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाऊ ध्याऊ कर्म नशाऊ शिव पद पाऊ हुलसन्ता ।।१।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो जन्म जरा मृत्यु
विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।।
शुभ केशर चन्दन दाह निकन्दन भव भय भजन शुद्ध अहो ।
हू चरण चढाया ताप नशाया सुख उपजाया नष्ट न हो ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाऊ ध्याऊ कर्म नशाउ शिव पद पाउ हुलसन्ता ।।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्य ससार ताप
विनाश नाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
अक्षत अणियारे उज्जवल प्यारे धोय समारे हम लावे ।
बहु पुज चढावे तुम गुण गावे सुख अति पावे हर्षावे ।।

जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे मन्ता भगवन्ता ।
मै गाऊ ध्याऊ कर्म नशाउ शिव पदपाउ हुलसन्ता ।।
ॐ ह्री णामो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिऽध्यो अक्षय पद प्राप्तये
अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

चम्पा मच कुन्दा अमल सुगन्धा भ्रमर अनन्दा थाल भरा ।
मै फूल चढाऊ श्रेष्ट कहाउ काम नशाउ दुष्ट खरा ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाउ ध्याउ कर्म नशाउ शिव पद पाउ हुलसन्ता ।।
ॐ ह्री णामो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्य काम बाण विनाश
नाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

ले घेवर फेणी लाड्डु पेडा व्यजन से बहु थाल भरे ।
जिनपद मे चोड्डु दुई कर जोड्डु क्षुधा रोग तत्काल हरे ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाऊ ध्याउ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता ।।
ॐ ह्री णामो मिद्धाणा श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्य क्षुधा रोग
विनाश नाय नैवेध निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

हम घृत भर लावे मन हर्षावे चरण चढावे दीप महा ।
मोहान्ध नशावे तुम गुण गावे पावे सम्यग्ज्ञान अहा ।
जय सिद्ध महन्ता शिव तियकन्ता पूजै सन्ता भगवन्ता ।।
मै गाउ ध्याऊ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता ।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार।
विनाश नाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

बहु धूप दशगी है बहु चगी वैसादर मै हम खेवे ।
हम कर्म उडावे शिव मुख पावे जिन गुण गावे पद सेवे ।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।।
मैं गाउ ध्याउ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता ।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽष्ट कर्म विनाश
नाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

नारिग सुपारी दाडिम प्यारी फल अति भारी थाल भरा ।
जिन चरण चढाउ शिव पद पाउ शीम नवाउ सिद्धवरा ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तियकन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाउ ध्याउ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता ।।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्ध परमेष्टिभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये
फल निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

ले द्रव्य समारा अष्ट प्रकारा हर्ष बढाकर ल्यावत है ।
जिन चरण चढावे मगल गावे सिद्ध महापद पावत है ।।
जय सिद्ध महन्ता शिव तिय कन्ता पूजे सन्ता भगवन्ता ।
मै गाउ ध्याउ कर्म नशाउ शिवपदपाउ हुलसन्ता ।।
ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिभ्योऽनर्घ्य पद
प्राप्तेय अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

अथ प्रत्येक अर्घ्यं (गीता)

ये पच ज्ञाना वर्णीघाति ज्ञान केवल पाइया ।
लोक त्रय को प्रगट देखे निज स्वरुप लखाइया ।।
लोकाग्र राजे निज सु साजे गुण सु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।
ॐ ह्री पच प्रकार ज्ञाना वर्णी कर्म विनाशक सिद्ध परमेष्ठि-
भ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

हे कर्म दूजा दर्शवर्णी दर्श गुण सवढकलिया ।
नष्ट कर नव प्रकृति तिस की दर्शगुण जिन पालिया ।
लोकाग्रराजे निज सुमाजे गुगमु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु वढाइया ।।
ॐ ह्री नव प्रकार दर्शनावर्णी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

हे वेदनी इक कर्म तीजा, दु क्ख सुख वह देत है ।
नाश कीना सहज मे जिन, सुख अबाधसु लेत है ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।
ॐ ह्री द्वि प्रकार वेदनी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

इक कर्म मोहनी दुष्ट है जो जगत जन सब बस किया ।
नाश कीना ध्यान अग्नि पाप समकित सुख लिया ।।

लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।

ॐ ह्री अष्टाविंश मोहनी कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

ससार के सब जीव देखे चार आयु वसि भये ।
ध्यान भासुर कर्म जारे नार शिव प्रिय तुम भये ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।

ॐ ह्री चतु प्रकार आयु कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

ज्यो चितेरा चित्र खीचे नाम तद्वत जानिया ।
यह नाशकर जिन राज तुमने सुख सु अविचल ठानिया ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुणसु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।

ॐ ह्री त्रय नवति नाम कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

गोत्र कर्म सु दोय विधि है नीच ऊच बखानिया ।
कर नाश रिपु यह है जिनेश्वर अगुरुलघु गुण जानिया ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुण सुवसु तुम पाइया ।।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।

ॐ ह्री द्वि प्रकार गोत्र कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।। ७।।

अष्टमसु रिपु का नाश करके, जाय अष्टम भू बसे ।
वीर्यत्व शक्ति पाय करके आतम निज मे तुम लसे ।।
लोकाग्र राजे निज सुसाजे गुण सु वसु तुम पाइया ।
हम नमन करके पद यजे अति मोद मनसु बढाइया ।।

ॐ ह्री पच प्रकार अन्तराय कर्म प्रकृति विनाशक सिद्ध
परमेष्ठिभ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

दोहा—अष्ट कर्म को नष्ट कर, अष्ट महा गुण पाय ।
वसु विधि सुन्दर द्रव्य से, पूजे जिनवर आय ।।

ॐ ह्री अष्ट कर्म विनाशक सिद्धपरमेष्ठिभ्यो पूर्णाऽर्ध्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।

ॐ ह्री सिद्धपरमेष्टिदेवेभ्यो नम स्वाहा ।।

(यहा ९ बार पुष्पों से जाप्य करें ।)

* अथ जयमाला *

दोहा—उर्ध्व लोक मे सिद्ध जे राजे सुखद महान ।
सुख अनन्त को पारहे गावे हम गुण गान ।।१।।

पद्धडी

जय सिद्ध शिरोमणी जगतदेव,
त्रैलोक्य प्रभु हम नमत एव ।

जय वीतराग हो परम शात,
जय रोग रहित निर्भय सुकान्त ॥२॥
जय उर्ध्व लोक के अन्त जान,
जयवात वलय मे राज मान ।
उत्पाद मुव्यय ध्रुव युक्त आप,
हम करते प्रभु तुम नित्याजाप ॥३॥
जय ससृति भजन हो निसग,
जय समता रस के आप गग ।
जय बघ कषाय विहीन आप,
जय नाश हुए सब कर्म पाष ॥४॥
जय ज्ञाना वर्णी प्रकृति पच,
तुम नाश करी नही रही रच ।
जय पूर्ण ज्ञान प्रभु प्रकट होय,
ज्यो मेघ नशे रवि उदित होय ॥५॥
जय नाश दर्शना वर्ण आप,
नव प्रकृति नशीधर ध्यान चाप ।
जय दर्शन गुण पायो महान्,
ज्यो लोक अलोक प्रकाश मान ॥६॥
जय कर्म वेदनी हो विलीन,
सुख पाया अन्व्याबाध चीन ।
जय मोह राज से विजय पाय,
सम्यक्त्व महागुण तुम लसाय ॥७॥

जय आयु कर्म को हनि विशाल,
जय अवगाहन गुणधर विशाल।
जय नाम कर्म से रहित होय,
सूक्षम गुण पायो विमल सोय ।।८।।

फिर गोत्र कर्म का कर विनाश,
ले अगुरु लघु गुण तुम प्रकाश।
प्रभु अन्तराय का मूल नाश,
वीर्यत्व शक्ति पाई विकाश ।।९।।

जय अष्ट महागुण धरत आप,
शिव नारी सग करते मिलाप।
जहा एक सिद्ध राजे महान्,
तामध्य अनन्तानन्त जान ।।१०।।

यह भूमि आठवी सुखद भास,
कहलाते सिद्धो का निवास।
जो ध्यान धरे उन सिद्ध राज,
पावे अविचल शुभ सुक्खसाज ।।११।।

हम नमन करे उर भक्ति धार,
सूरजमल विनवे बारबार।
यह आश हमारी पूरपूर,
प्रभु, कर्म महारिपु चूर चूर ।।१२।।

घत्ता

जय सिद्ध महन्ता शिवतियकन्ता आतम रमन्ता ध्यावत हू ।
जय कर्म विनाशी सुगुण प्रकाशी शुभ गुण राशी याजत हूँ ।।१३।।

ॐ ह्री णमो सिद्धाण श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।

सोरठा

पूजो भाव सुधार सिद्ध महा जिन राज को ।
ते उतरे भवपार राज करे शिव राय को ।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री आचार्य परमेष्ठी पूजा (हरि गीता)

निर्ग्रन्थ सूरि पद विराजे, ध्याय आतम ध्यान को ।
गुण तीस छह पालत सदा ही कहत हित मित बानि को ।।
हम करत आव्हानन प्रभोजी मो हृदय मे आइये ।
अष्ट विधि से पूजते हम कर्म अष्ट नशाइये ।।

ॐ ह्री षट्त्रिशत् गुण सहित आचार्य परमेष्ठिन्
अत्रावतरावतर सवैष्टि आव्हान ।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुण सहित आचार्य परमेष्ठिन्
अत्र तिष्ट तिष्ट ठ ठ स्थापन ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुण सहित आचार्य परमेष्ठिन्
अत्र मम सन्निहितो भव भव सन्निधिकरण ।।

अथाष्टकं-नन्दीश्वर पूजन (चाल)

शुचि निर्मल जल भृंगार भरकर मै लायो ।
तुम चरणन दे हम धार जन्म मरण ढायो ।।
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुणगावे ।।१।।
ॐ ह्रीं षटत्रिंशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।।
गोशीर मुगन्धित सार कुंकु घिस लावे ।
प्रभु भव आताप निवार मनमे हर्षावे ।।
श्री आचारज पदसार मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुणगावे ।।
ॐ ह्रीं षटत्रिंशद गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्य
ससार ताप विनाशनाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
ले चन्द्र किरण समश्वेत अक्षत धोय धरे ।
हम अक्षय निधि के हेत पदमे पुंज करे ।।
श्री आचरज पद सार मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।
ॐ ह्रीं षटत्रिंशद गुणोपेत आचार्य परमेष्टिदेवोभ्योअक्षय
पद प्राप्तये अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।
ले करके बहु विधि फूल, डाली भर लाये ।
प्रभु हरो काम तिरसूल भव भव दुख पाये ।।

श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधि पार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुणोपेत आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्य
कामबाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

ले व्यजन नाना भाति मनहर सुखदाई ।
तुम भेट धरे तज आट मनमे हर्षाई ।।
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्य क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

घृत दीप मनोहर ल्याय जगमग होत अहा ।
हम करे आरती आय नाशे तिमिर महा ।।
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुणोपेत आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

बहु द्रव्य सुगन्धित सार ताकि धूप करी ।
खेवे वैश्वानर डार कर्म विनाश करी ।
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।।
हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्रो षटत्रिशद् गुणोपेत आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्यो
अष्ट कर्म दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

ले केले उत्तम सार आम्र अनार घने ।
फल भरु सरस शुभ थाल सुन्दर सहज सने ।।
श्री आचारज पद सार, मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद गुणोपेत आचार्य देवेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

जल चन्दनादि बहु ल्याय अर्ध चढावत हू ।
गाउ प्रभु गुण हर्षाय भक्ति वढावत हू ।।
श्री आचारज पद सार मन वच तन ध्यावे ।
हम उतरे भवदधिपार याते गुण गावे ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद् गुणोपेत श्री आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽनर्घ्य
पद प्राप्तये अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

अथ प्रत्येक पूजा

दोहा—दुष्ट जीव पीडा करे क्षमा भाव उर लाय ।
पूजो पद आचार्य के मन वच काय लगाय ।।

ॐ ह्री उत्तम क्षमा धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि-
देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

कोमलता उरमे धरे मार्दव वृष ग्रमलान ।
शुद्ध द्रव्य से पूजिए सूरि पद गुरग खान ।।

ॐ ह्री उत्तम मार्दव धर्म प्रतिपालक श्री ग्राचार्य परमेष्ठि देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

ग्रन्तर बाहर एक है माया रच न पाय ।
ग्रार्जव गुरग को धारते सूरि पूजो ग्राय ।।

ॐ ह्री उत्तम ग्रार्जव धर्म प्रतिपालक श्री ग्राचार्य परमेष्ठि देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

सत्य वचन बोले सदा सत्य धर्म कहलाय ।
ग्राचारज यह धारते ग्रर्चन हम गुरग गाय ।।

ॐ ह्री उत्तम सत्य धर्म प्रतिपालक श्री ग्राचार्य परमेष्ठि देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

तन स्वभाव से ग्रशुचि है किस विध होय न शुद्ध ।
ज्ञान ध्यान तप ग्राचरे करे ग्रात्म प्रति वुद्ध ।।

ॐ ह्री उत्तम शोच धर्म प्रतिपालक श्री ग्राचार्य परमेष्ठि देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

इन्द्रिय पाचो वश करे काय छहो प्रतिपाल ।
इह विधि दो सयम धरे ग्राचारज नमि भाल ।।

ॐ ह्री उत्तम सयम धर्म प्रतिपालक श्री ग्राचार्य परमेष्ठि देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

द्वादश विधि तप आचरे अन्तर बाहिर जान।
खेद नही मनमे करे पूज मिले शिव थान ।।
ॐ ह्री उत्तम सयम धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

परद्रव्यन से भिन्न है राग द्वेष नही होय ।
त्याग धर्म निश्चय कहे आचारज पद सोय ।।
ॐ ह्री उत्तम त्याग धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

अन्तर बाहर भेद से सग कहे है दोय ।
त्यागा उन मुनिराज ने धर्म अकिंचन होय ।।
ॐ ह्री उत्तम अकिचन धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

निज पर की तिय त्याग कर व्रत धारा असि धार ।
पूर्ण ब्रह्मचारी भये नमन करू त्रय बार ।।
ॐ ह्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म प्रतिपालक श्री आचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

(अथ १२ तप अर्घ) भुजंग प्रयास

एक दिन चार दिन अष्ट पक्ष मास लो ।
मास दोय मास छह त्याग अन्न जल भलो ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्री अनशन तप प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

भूख से अर्द्ध ले भाग चवथा गहै ।
ग्रास दोय ग्रास एक वृत्त एसो लहे ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्री उनोदर तप धारक आचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

गोचरी जाय जब वृत्त सख्या करे ।
लाभ नही लाभ मै तोष रोष ना धरे ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्री वृत्तपरिसख्यान तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

लेय छह रस विषे एक दोही भले ।
नीरसी खाय कभी रसन वश ना चले ॥
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीरगन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ॥

ॐ ह्री रस परित्याग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

विविक्त आसन धरे गहत नही मानको ।
जीव दुष्ट आयकर खण्ड नही ध्यान को ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।
ॐ ह्री विविक्त शय्यासन तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

त्याग तन मोह को ध्यान मे लीन हो ।
आय उपसर्ग तो भाव सम कीन हो ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीरगन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।
ॐ ह्री कायोत्सर्ग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

होत गमन इत उते, प्रमाद जीव सघरे ।
दोष होय गुरु निकट प्रायश्चित्त को धरे ।।
सुरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षाति पूजते चाव सो ।।
ॐ ह्री प्रायश्चित तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

ज्येष्ठ की विनय कर वृत्त को आदरे ।
विनय से सकल गुण आप आपो वरे ।।

सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्री विनय तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

सेव गुण धार अरु गुरुजनो की ठानिए ।
देवश्रुत सेव कर मोक्ष मग आनिए ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीरगन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्री वैयावृत तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

रात दिवस पाठ स्वाध्याय मे लीन हो ।
प्रश्न गुरु ठान बहु चिन्तवना कीन हो ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्री स्वाध्याय तपधारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

आय उपसर्ग को हर्ष से सहत है ।
त्याग मन मोह निज आतम को भजत है ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भावसो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्वपामिति स्वाहा ।।११।।

ध्यान जब धारते हो अडोल जाप मे ।
चिन्तवे असार सब लीन हो आप मे ।।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्रीं ध्यानतप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।

कथित तप द्वादश धारते वीर ही ।
पाय नही मोहि जीव होत है अधीर ही ।
सूरि महाराज को ध्याय शुभ भाव सो ।
नीर गन्ध अक्षतादि पूजते चाव सो ।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप धारकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

षढावश्यक अर्घ्य (सखो)

सब जीव विषे सम भावा, दुर्ध्यानिन मन मे लावा ।
करते सामायिक सुखदाई, अर्च्यु सूरि पद हर्षाई ।।

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

चतुबीस जिनेश्वर जो है, अरुच परम गुरु सो है ।
तिन करहु स्तुति गुण गाई अति निर्मल भाव लगाई ।।

ॐ ह्री स्तवनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्ध्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

बन्दन देव करे जिन थाना, सब दोष रहित गुण नाना ।
नाशे पाप महा दुख दाई, सब अर्घ यजोरे भाई ।।
ॐ ह्री बदनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्ध्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

मन वचकाय लगे जो दोषा, अहोरात रहे मन सदोषा ।
ता आलोचन उर लाई, वह होवे प्रतिक्रम भाई ।।
ॐ ह्री बदनावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्ध्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

मन वच कायसु वस्तु त्यागे, नाही रोष करे बड भागे ।
उस प्रत्याख्यान बताई, सूरि नित्य करे सुखदाई ।।
ॐ ह्री प्रत्याख्यानावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

छोडा मोह प्रबल तन सोई, आतम ध्यान धरे निज जोई ।
कायोत्सर्ग कहे भगवाना सूरि राज करे गुणवाना ।।
ॐ ह्री कायोत्सर्गावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्ध्यं
निर्घिपामीति स्वाहा ।।६।।

दोहा—ये षट् आवश्यक करे सूरि पद को धार ।
पूरण अर्ध्य चढाय कर होवे भवदधिपार ।।
ॐ ह्री कायोत्कर्गावश्यक प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्ध्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

पंचाचार ५ अर्घ्य (सुन्दरी)

तत्व जीव अजीव सु जानते, ध्याय निज मे निज पहचानते ।
होय ज्ञानाचार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्री श्री ज्ञानाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

कहत तत्व जिनेश्वर भाव से, धरत श्रद्धा सूरि स्वभाव से ।
होय दर्शन चार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्री श्री दर्शनाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

त्याग सर्व सुसग विराजते, पाल समिति गुप्ति सुराजते ।
कहत चारित चार सु जानिए, पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्री श्री चारित्राचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

कर्मनाशक शक्ति बढावते, धरत सयम तप अति चाव से ।
कहत वीर्याचार सु जानिए, पूज आचरज पद मानिए ।।
ॐ ह्री श्री वीर्याचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

तप तपे विधि द्वादश जानिए कर्म हनि फिर शिवपुर ठानिए ।
होय तप आचार सुजानिए पूज आचारज पद मानिए ।।
ॐ ह्री श्री तपाचार प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

(अडिल)

ज्ञान दर्श चारित्र वीर्य तप आचरे ।
ये ही पचाचार कहे सुख कार रे ॥
पाले इनको मूनि महा गुणवान जी ।
पूजे मन वच काय हर्ष उर आनजी ॥
ॐ ह्री श्री पचाचार चारित्र प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठि
देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥६॥

गुप्ति अर्घ (राधेश्याम्)

मन अति चचल वस करि जग को इधर उधर दौडाता है ।
याते आतम ध्यान न पावे मोक्ष मार्ग नही पाता है ॥
धन्य धन्य गुरु आप जगत मे मनको बस मे कीना है ।
ध्यान धरत हो निज आतम का मोक्ष पन्थ को लीना है ॥
ॐ ह्री श्री मनोगुप्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

बचन बोलने हित मित मीठे कभी नही परमाद वहै ।
ऐसी भाषा कबहु न भाषे याते प्राणी पाप गहै ॥
धन्य धन्य गुरु आप जगत मे वचनो को वश कीना है ।
ध्यान धरत हो निज आतम का मोक्ष पन्थ को लीना है ॥
ॐ ह्री श्री वचनगुप्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

निज काया को वश मे ठाने अरु चचलता टारी है।
रहित प्रमादी राखे थिरता दुरित जाल नही धारी है ।।
धन्य धन्य गुरु आप जगत मे तन को वश मे कीना है।
ध्यान धरत हो निज आतम का मोक्ष पन्थ को लीना है ।।

ॐ ह्री श्री कायगुप्ति प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठिदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

दोहा—परम पूज्य आचार्य हो, पालो गुण छत्तीस ।
वसु विधि अर्घ्य चढायकर, सदा नमाऊ शीस ।।

ॐ ह्री श्री षटत्रिशद् गुण प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठि-
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

ॐ ह्री श्री आचार्य परमेष्ठि देवेभ्यो नम स्वाहा ।।

(यहा ६ बार पुष्पो से जाप्य करें ।)

अथ जयमाला

दोहा—छत्तीसो तुम गुण सहित, सूरी पद मुनिराज ।
गावे तव गुणमालिका, होय सफल मम काज ।।

पद्धडी

आचार्य परम गुरु धन्य आप ।
हम आगावे तुम यश प्रताप ।।
जय परम शात गुण गण समेत ।
हम ध्यावे नित प्रति सुगति हेत ।।१।।

यह वर्तमान जो कलि काल ।
कहते पचम दुखमा जु काल ।।
फिर पावे इसमे जीव ताप ।
जहा घोर महा मिथ्या कलाप ।।२।।

हर थान वामि पन्थि अपार ।
आरोप किया जिन धर्म सार ।।
फैलाया था मिथ्यात्व अन्ध ।
सब जीव हुए सम्यक्त्व मन्द ।।३।।

उस वक्त प्रभु जिन धर्म हेतु ।
तुम प्रगट हुए थे धर्म सेतु ।।
हो नष्ट किया पाखण्ड मार्ग ।
बतलाया था तुम मोक्ष मार्ग ।।४।।

अरु की प्रभावना आप सार ।
कर खण्ड खण्ड मिथ्याप्रचार ।।
बतलाया सम तुम तुर्यकाल ।।
जय सूरि हो तुम सुगुणपाल ।।५।।

जय भूत भविष्यत वर्त्तमान ।
आचार्य हुए जो सुगुणवान ।।
उन स्याद्वाद वाणी अपार ।
जय हित मित प्रिय हो सुखदसार ।।६।।

दश धर्मादिक सेवत महन्त ।
अरु द्वादश विधि तुम तप तपन्त ।।
षट आवश्यक मनमे उतार ।
अरु गहते पचाचार सार ।।७।।

जय गुप्ति त्रय वश मे सु आन ।
इहह विधि षटत्रिशद गुण महान् ।
इन पाले श्रद्धा धार आप ।
कहलाते सूरि धर प्रताप ।।८।।

हो परम तपस्वी गुण निधान ।
जय मोह सुभट को नष्ट ठान ।।
तुम शिक्षा दीक्षा दो अनूप ।
चारित्र बताया है स्वरुप ।।९।।

हो नग्न दिगम्बर तीर्थ रुप ।
भविजीव निकारे नीच कूप ।।
सब भारत वर्ष बिहार कीन ।
उपदेश दिया तुम समीचीन ।।१०।।

हो करुणा सागर गुण अगार ।
अनुप्रेक्षा चिन्ते बार बार ।।
बावीस परिषह हर्ष ठान ।
तुम सहते गुरुवर सुगुणवान ।।११।।

तब कथित शास्त्र मगल स्वरुप ।
जो बाचे नरचे हित अनूप ।।
विपरीत करे जो ज्ञान गर्व ।
पावे नरको का कष्ट सर्व ।।१२।।
तव नाम लेत कल्मष नशाय ।
अरुपावे मुख शिव नगरी जाय ।।
सूरजमल तब चरणो मे जाय ।
कर नमस्कार भव दुख नशाय ।।१३।।

धत्ता

जय सूरि महन्ता गुणगण सन्ता ध्यान धरन्ता ज्ञानी हो ।
जय भव भय भजन आतम रजन दुरित विभजन ध्यानी हो ।।

ॐ ह्री षटत्रिशद मूलगुण प्रतिपालकाचार्य परमेष्ठि-
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१४।।

दोहा—ध्यान धरे आचार्य का, जा प्राणी सुखदाय ।
करे कर्म की निर्जरा, अनुक्रम से शिव पाय ।।

(इत्याशीर्वाद)

श्री उपाध्याय परमेष्ठि पूजा (गीता)

पूज्य हो परमेष्ठि चोथे ध्याय पाठक राज जी ।
पालते गुण पंचविंशति हो मुनि सिरताजजी ।।

आव्हान हो गुरु आपका उर थापना हम कर रहे।
सब हमारे दुरित मेटो ध्यान तव मन धर रहे॥
ॐ ह्री श्री पचविशति गुणोपेतोपाध्याय परमेष्ठिन्
अत्रावतरावतर सवौषटम् आव्हान् ॥
ॐ ह्री श्री पचविशति गुणोपेतोपाध्याय परमेष्ठिन् अत्र तिष्ट
तिष्ठ ठ ठ स्थापनम्।
ॐ श्री ह्री पचविशति गुणोपेतोपाध्याय परमेष्ठिन् अत्र मम
सन्निहितो भव भववषट सन्निधिकरण॥

अथाष्टकं (त्रिभंगी)

गगा नद को जल अति उत्तम झारी लेकर मै भरलाय।
धार देऊ मै श्री गुरुवर पद जन्म जरामृति दूर भगाय॥
श्री सुपाठक परम् मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय॥
ॐ ह्री श्री पचविशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा॥१॥
गोशीर सुगन्धित ले कर्पु रो, केसर सगमे घिसु मन लाय।
ससृति ताप मिटावन कारण चरण चढाउ बहु हर्षाय॥
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय॥
ॐ ह्री श्रीपचविशति मूल गुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो
ससार ताप विनाशनाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा॥२॥

चन्द्र किरण सम उज्जवल अक्षत खड विवर्जित धोकर लाय ।
पु ज करे हम पद पकज मे अक्षय निधि पावे सुखदाय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।।

ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय
देवेभ्यो ऽक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

जुई चमेली वकुल केवडा, मरुवा दोना फूल मगाय ।
चरण चढावे मन हर्षा कर कामबाण मम तुरत नशाय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मे पूजू तुम पाय ।।

ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्य
कामवाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

पकवान बनाया थाल भराया, रसना इन्द्रिय को सुखदाय ।
क्षुधा रोग तत्काल हनन को पद पकज मे छोड़ू आय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्याव मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।

ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्य
क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

जगमग जगमग होत उजालो, कनक थाल मे दीपक जोय ।
मोह तिमिर नाशे दुखदाई, आतम ज्ञान जगावो मोय ।

श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।।
ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो
मोहन्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

अगर तगर चन्दन का चूरा, और अनेको द्रव्य मगाय ।
धूप बनाकर खेय अग्नि मे अष्ट कर्म नाशे दुखदाय ।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।
ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय
देवेभ्योऽष्ट कम दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

सेव नरगी आम्र विजोरा श्रीफल आदिक थाल भराय ।
महा मोक्ष फल पाउ याते पूजू पद पकज मे जाय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मै पूजू तुम पाय ।।
ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुण प्रतिपालकोपाध्याय देवेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

जल चन्दन अक्षत पुष्पादिक व्यजन नाना भाति बनाय ।
दीप धूप फल थाल सजोकर अर्घ चढाऊ मन वच काय ।।
श्री सुपाठक परम मुनीश्वर ध्यावे मन वच काय लगाय ।
ज्ञान भरो मम उर के माही याते मे पूजू तुम पाय ।

ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुरा प्रतिपालकोपाध्याय
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

प्रत्येक अर्घ्य (पद्धडी)

जय पहलो आचारग जान, मुनि पाले व्रत जिसका प्रमाण ।
इस अ ग तनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित यत्याचार सूचक अष्टादश सहस्र १८००० पद प्रमाणमाचारागस्य ज्ञाता उपाध्याय
परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

जय धर्म रूप किरिया विशाल जावर्णी सूत्र कृतागहाल ।
इस अ ग तनो जिस होय ज्ञान सो पाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐह्री श्री अरहन्त देवकथित ज्ञान बिनय छेदोपस्थापना क्रिया प्रतिपाद षट्त्रिशत सहस्र ३६००० पद प्रमाण सूत्रकृतागस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

जय जीव थान जिसमे बताय जय स्थानाअ गसु बुद्धिगाय ।
इस अ गतनो जिस होय ज्ञान, सो पाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित षडद्रव्यकाद्य ुत्तरस्थान व्याख्यान कारक द्वाचत्वारिशत सहस्र ४२००० पद प्रमाण स्थानागस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

षड् द्रव्य त्रिलोको का स्वरुप, है समवायाग सुकथ अनूप ।
इस अगतनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित धर्माधर्म लोकाकाशैक जीवसप्त नरक मध्य विल जम्बू द्वीप सवार्थसिद्धि विमान नन्दीश्वर द्वीप वापिका तुल्येक लक्ष योजन प्रमाण निरूपक भव भाव कथक चतुषष्टी सहस्राधिक लक्ष १६४००० पद प्रमाण समवायागस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

जय अस्ति नास्ति का जान भग, होवे व्याख्या प्रज्ञप्ति अग ।
इस अग तनो जिस होय ज्ञान सो पाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित जीव किमस्ति नास्तिवा इत्यादि गणधर कृत प्रश्न षष्ठीसहस्र प्रतिपादक अष्टाविशति सहस्राधिक द्विलक्ष २२८००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्ति अगस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

जय तीर्थंकर गणधर चरित्र जो ज्ञातृ कथा वर्णे पवित्र ।
इस अग तनो जिस होय ज्ञान सो पाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित तीर्थकर गणधर कथा कथिका षटपचाशत सहस्राधिक पचलक्ष ५५६००० पद प्रामाण ज्ञातृ कथा अगस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

जय उपासकाध्ययना अग होय जो श्रावक धर्म सु कहत सोय।
इस अगतनो जिस होय ज्ञान, सो पाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित श्रावकाचार प्रकाशक सप्तति सहस्राधिकैकादशलक्ष ११७०००० पद प्रमाण उपासकाध्ययन अगस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपमीति स्वाहा ।।७।।

जय तीर्थंकर चौवीस जान हर तीर्थंकर के तीर्थ आन।
जय दश दश होवे मुनिसुजान, उपसर्ग सहनकर शिव प्रयाण ।।

तिन कथा निरुपण है प्रसार, जय अन्त कृत दश अ ग सार।
इस अ ग तनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित तीर्थंकराणा प्रतितीर्थ दशदश मुनयो भवन्ति ते उपसर्गान् सोढ्वा मोक्षयान्ति तत्कथा निरुपकमष्टाविंशति सहस्राधि त्रयोविंशति लक्ष २३२८००० पदप्रमाणमन्त कृत दशागस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

चतुर्विंशति तीर्थ कर महान् हर तीर्थंकर के समय आन।
दश दश मुनि हो उपसर्गवान पचानुत्तर पद ले महान् ।।

तिन कथा निरुपण जन लुभाय आनुत्तर उपपादिकलहाय।
इस अग तनो जिस होय ज्ञान, सोपाठक होवे सुगुणवान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित तीर्थंकराणा प्रतितीर्थ दश दश मुनयो भवन्ति ते उपसर्गान् सोढ्वा पचानुत्तर पद पाप्नुवन्ति तत्कथानिरुपक चतुर चत्वारिशत सहस्राधिक द्विनवति लक्ष ९२४४००० पद प्रमागमनुत्तरोप पादिकस्स्य ज्ञाता उपा-
ध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

जय नाना प्रश्नोत्तर प्रदाय शुभ प्रश्न अ ग व्याकरण गाय ।
इस अ ग तनो जिस होय ज्ञान सोपाठक होवे सुगुण वान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित नष्ट मुष्टयादिक प्रश्नानामुत्तर प्रदायक षोडश सहस्राधिक त्रिनवति लक्ष ९३१६००० पद प्रमाण प्रश्नव्याकरणागस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

जय उदय उदीरण कर्म जान है सूत्र विपाकसु उदय जान ।।
इस अ ग तनो जिस होय ज्ञान सो पाठक होवे सुगुण वान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित कर्मणामुदयोदीरणा सत्ता कथक चतुरशीति लक्षाधिक कोटी १८४००००० पद प्रमाण विपाक सूत्रागस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।११।।

हरि गीता

अ ग एकादश विषेये, चार कोटि सुजानिए ।
अरु लक्ष पन्द्रह सहस दोहे पद महा यह मानिए ।।

पूजि हो हम भक्ति युत हो द्रव्य वसु विधि थाल भर ।
सब दुरित हरि है नाथ मेरे मे यजू उर हर्ष धर ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित द्वि सहस्राधिक पचदश लक्ष चतुष्कोटी ४१५०२००० पद प्रमाणमेकादशागाना ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।

१४ पूर्वाणां अर्घ्य (अडिल)

शास्त्र महा उत्पाद पूर्व जिन वाण है ।
जन्म नाश ध्रुव वस्तु महा गुण गान है ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्रीश्री अरहन्त देव कथित वस्मुनामुत्पाद व्यय ध्रोव्यादि कोटि १०००००० पद प्रमाणमृत्पाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

सप्त तत्व षट द्रव्य पदारथ जे कहै ।
पूरव है अग्राय नाय शुभ जेल है ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्यसु पूजरचावने ।।

ॐ ह्री श्रीअरहन्त देव कथित अ गनामग्रभूतार्थ निरुपक षण्णवति लक्ष ६६००००० पद प्रमाणमग्रायणीय पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

तोर्थ कर चक्रीस हरि शुभ गाइयो ।
नाम वीर्य अनुवाद चरित्र बताईयो ।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।१४।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित बलदेव चक्रवर्ति शक्र तीर्थं-करादि बलवरगाक मप्तति लक्ष ७०००००० पद प्रमारग वीर्यानुवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।१४।।

सर्व वस्तु मे सप्त भग शुभ कहत है ।
अस्ति नास्ति परवाद नाम वसु लहत है ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त कथित जीवादि वस्त्वास्ति नास्ति चेति-प्रकथक षष्ठि लक्ष ६०००००० पद प्रमारगमस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।१५।।

अष्ट ज्ञान उत्पत्ति सुकारग जानिये ।
स्वामी ज्ञान प्रवाद सु पूरब मानिए ।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित अष्ट ज्ञान तदुत्पत्ति कारण तदाधार पुरुष प्ररुपकमेकोन कोटि ९९९९९९९ पद प्रमाण, ज्ञान प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१६॥

वर्ण थान दो अक्ष आदि सस्कार है ।
सत्य प्रवादा पूर्व कहै जग सार है ॥
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित वर्ण स्थान तदाधार द्विद्रिन्यादि वचन गुप्ति सस्कार प्ररुपक षडधिक कोटि १०००००0६ पद प्रमाण सत्य प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१७॥

गमना गमन सु लक्षण जीवो का सही ।
पूरब आतम प्रवाद नाम शुभ है यही ॥
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित ज्ञानाद्यत्मक कर्तृत्वादियुतात्म स्वरुप निरूपक षडविशति कोटि २६००००००० पद प्रमाण आतम प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१८॥

बन्ध उदय कर्मो की सत्ता जानिए ।

कर्म प्रवादा पूरब कहत सु मानिए ।

उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।

लेकर बसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित कर्म वन्धोदयोपशमोदीरणा निर्जरा कथकमशीति लक्षाधिक कोटि १८०००००० पद प्रमाण कर्म प्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१९।।

प्रत्याख्यानरु द्रव्य तथा पर्यय कहै

प्रत्याख्यानी पूर्व नाम याका लहै ।।

उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।

लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित द्रव्य पर्यायरूप प्रत्याख्यान निश्चलन कथक चतुरशीतिलक्ष ८४०००००पद प्रमाण कर्मप्रवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२०।।

पच महाशत विद्या शत सत लघु सही ।
है निमित्त अष्टाग सुजिनवर विधि कही ।।
विद्या साधन फल भी जिनके वर्णये ।
है विद्या अनुवाद पूर्व सज्ञा लये ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित पचाशत महा विद्या सप्त शत क्षुद्र विद्या अष्टाग महानिमित्तानि प्ररूपयनदशलक्षाधिक कोटि ११०००००० पद प्रमाण विद्यानुवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय परमेष्ठिभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२१।।

तीर्थंकर बल भद्र आदि जो हो गये ।
पुण्य कहै कल्याण वाद पूरव ठये ।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।

ॐ ह्री श्री अरहन्त कथित तीर्थकर चक्रवर्ति बल भद्र वासु देवेन्द्रादिना पुण्य भ व्यावर्णक षट् विशति कोटि २६०००००००० पद प्रमाण कल्याणवाद पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्यो ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२२।।

मन्त्र तन्त्र अरु ज्योतिष विद्या है सही
भूत प्रेत की नाशक विधि विस्तर कही ।
अष्ट अ ग के निमित्त कहे जिस सारजी
प्राणावाय पूरब नाम प्रचार जी
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित अष्टाग वैद्यविद्या गारुढी विद्या मन्त्र तन्त्रादि निरुपक त्रयोदश कोटि १३०००००००० पद प्रमाण प्राणावाय पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२३।।

गीत नृत्य है छन्द सु विधि जिसमें सही ।
सकल शास्त्र नय कला महा उसमे कही ।।
अलकार का वर्णन जहा विशाल है ।
जानो पूरव किरिया नाम कमाल है ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते ।।२४।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित छन्दोलंकार व्याकरण कला निरूपक नव कोटि ९००००००० पद प्रमाण क्रिया विशाल पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२४।।

लोक तीन सुख दु ख को वर्णन जानिए ।
मोक्ष हेतु है लोक विधि यह मानिए ।।
उपाध्याय परमेष्ठि गुरु यह गावते ।
लेकर वसु विधि द्रव्य सु पूज रचावते

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित निर्वाण पदसुख हेतु भूत सार्द्ध द्वादश कोटि १२५०००००० पद प्रमाण लोक विन्दुसार पूर्वस्य ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्यः पूर्णार्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२५।।

दोहा—ग्यारह अ ग विशाल है चौदह पूरब जान ।
इनके ज्ञानी है सही पाठक गुरु महान ।।

ॐ ह्री श्री एकादशागचतुर्दश पूर्वाणा ज्ञाता उपाध्याय देवेभ्य
पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२६॥

ॐ ह्री श्री उपाध्याय परमेष्ठि देवेभ्यो नम स्वाहा ॥

(यह मन्त्र ६ बार पुष्पो से जपे करें)

❀ अथ जयमाला ❀

दोहा—पाठक परमेष्ठि महा, भव भव मे सुख दाय ।
तिनके गुण की मालिका भवि जन कठ धराय ।

पद्धडी

जय पाठक हो परमेष्ठि आप ।
हम ध्यावे भक्ति मिटत ताप ॥
जय नगन दिगम्बर आप राय ।
गुण–गावे मुनिवर मुक्ति पाय ॥१॥
जय ध्यान धरा हो आतम सार ।
जिससे मिटता भव दुख अपार ॥
जय मिथ्या तम नाशक दिनेश ।
सिर नावे सुरपति नर खगेश ॥२॥
जय आर्तरौद्र का कर निकार ।
धर धर्म शुक्ल आतम विचार ।
जय मोह सुभट को नाश कौन ॥
जय कुसुम वाण को हर प्रवीण ॥३॥

जय आतापन तुम योग धार ।

दश धर्मादिक सेवत उदार ।।

जय रत्नत्रय धर धर्म आप ।

जय विषय भोग नाशक सुचाप ।।४।।

जय विद्वतरत्न कहत आप ।

जय चर्चा करते सुख अलाप ।।

जय पढे पढावे शिष्य जान ।

याते पाठक तुम नाम मान ।।५।।

जय शिक्षा अद्भुत जगत मान ।

जय शिष्यो का नाशे कुज्ञान ।।

जय गुरुवर हो तुम निर्विकार ।

जय काम कषायो को विडार ।।६।।

जय अगसु एकादश प्रमाण ।

अरु चवदह पूरब है सुमान ।।

इन ज्ञान भयो है आप नाथ ।

कर जोडे नावे नित्य माथ ।।७।।

तव पाठक सब जग कहत नाम ।

सब जीव रटत है सरत काम ।।

जय सौम्य मूर्ति है परम शात ।।

गुण पच्चिस धारे हो प्रशात ।।८।।

जय पाठक हो शिव तियरमन्त ।

जय ध्याता ध्यानी कहत सन्त ।।

अध्यात्म रसिक हो सुगुण खान ।
जय ज्ञानामृत का करत पान ॥९॥
तव गावे गुरुवर गुण अपार ।
याते मिलती है मुक्ति नार ॥
सूरजमल करता नमस्कार ।
ससार जलधि से वेगि तार ॥१०॥

धत्ता

जय पाठक ध्याऊ पूज रचाउ तिन गुण गाउ हर्षधरु
भव ताप निवारी विपत विडारी बहु गुण धारी नमन करु ॥
ॐ ह्री श्री पचविशति मूलगुणोपेत श्री उपाध्याय
देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

दोहा—पाठक पूजो भाव से हर्ष महा उर धार ।
सुख सम्पत्ति वाढे सदा पुनि पावे शिव नार ॥
(इत्याशीर्वाद)

साधु परमेष्ठि पूजन (सुन्दरी)

रहत मग्न सुध्यान सुभावते, परम तव कर हर्ष बढावते ।
होय साधु महाव्रत धारते नमनकर हम पूज रचावते ॥
ॐ ह्री श्री अष्टाविंशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिन्
अत्रावतरावतर सवौषट् आह्वान ।
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिन्
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन

ॐ ह्री श्री अष्टाविशनि मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिन्
अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरण

॥ अथाष्टकम् ॥ गीता

जल सुप्रासक सुरसरीका स्वर्ण झारी लाइया ।
दे धार चरणो मे सु आकर, जन्म मृत्यु नशाइया ॥
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहू परमात्मा ॥१॥
ॐ ह्री अष्टाविशति मूल गुण प्रतिपालक साधु परमेष्ठि
भ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।
केशर कपूर सुगन्ध चन्दन घिस कटोरी मे लिया ।
चर्चु युगल पद हर्ष धर कर ताप भव का नश दिया ।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ॥२॥
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्भ्ठिय:
ससार ताप विनाशनाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ॥
चन्द्र सम उज्ववल अखडित तदुलो को लीजिए ।
अक्षय निधि के प्राप्ति हेतु पु ज गुरु ढिग कीजिए ॥
साधु हो तुम साधना मे साघते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रतिपद लहूँ परमात्मा ॥३॥
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो
अक्षय पद प्राप्तर्य अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ॥

चपा चमेली कुन्द मरुवा मोगरा बहु फूल ले ।
कुसुम इषु के नाश हेतु, चरण, छोड़ू हु भले ।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ।।४।।
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यः काम बाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।

पूरी पकोडी खीर गू जा और मोती चूरले ।
भेट कर सभ्यग गुरु के सुख तभी भरपूर ले ।।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहुँ परमात्मा ।।५।।
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्य क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।

शुद्ध घृत करपूर आदिक रत्न का दीपक करु ।
आरती कर साधुवर की मोह राजा को हरू ।।
साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।
हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ।।६।।
ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।

लेकर सुगन्धित द्रव्य बहु विध धूप मनहर कर लिया ।
खेय वैश्वानर के माही कर्म आठौ हर लिया ।।

साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।

हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ।।७।।

ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।

बादाम श्री फल आम केला दाडिमादिक फल भले ।

थालभर छोडे चरण मे भ्रमण भव का सब टले ।।

साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।

हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लाहूँ परमात्मा ।।८।।

ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो मोक्षफल प्राप्तर्य फल निर्विपामीति स्वाहा ।

नीर चन्दन धवल अक्षत पुष्प मनहर लाइया ।

पकवान दीपक धूप फल सब अर्घ्य चर्ण चढाइया ।।

साधु हो तुम साधना मे साधते निज आत्मा ।

हम पूजते पद युगल नित प्रति पद लहूँ परमात्मा ।।९।।

ॐ ह्री श्री अष्टाविशति मूल गुण धारक साधु परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अध्यर्य निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

अथ प्रत्येक पूजा कामिनी (छन्द)

जीव त्रस थावरा आप सम जानते ।

देय दुक्ख ना कभी योग त्रयहानते ।

होय महाव्रत्त यह साधु बडे भाग के

पाय मोक्षनार सग राग को त्याग के ।।

ॐ ह्री श्री अहिंसा महाव्रत मूल, गुणधारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

नष्ट हो शरीर ना असत्य कभी भासते ।
हो भला जीव जिन वाणी को प्रकाशते ।
होय महाव्रत्त यह साधु बडे भाग के ।
पाय मोक्ष नार सग राग को त्याग के ।।२।।

ॐ ह्री श्री सत्य महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।

दे बिना न ले कभी न याचना को ठानते
हो विरक्त नगन तन आतम गुण जानते ।।
होय महाव्रत्त यह साधु बडे भाग के ।
पाय मोक्ष नार सग राग को त्याग के ।।३।।

ॐ ह्री श्री अचौर्य महाव्रत्त धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।

नारि चार जाति जान साधु नित्य टारते ।
पाय शील रत्न शुभ काम को विडारते ।।
होय महाव्रत्त यह साधु बडे भाग के ।
पाय मोक्ष नार सग राग को त्याग के ।।४।।

ॐ ह्री श्री ब्रह्मचर्य महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा

त्याग सग दोयविध वाह्य अभ्यतरा ।
छोड मोह जाल को लेय समता धरा ।।
होय महाव्रत्त यह साधु बडे भाग के ।
पाय मोक्ष नार सग राग को त्याग के ।।५।।
ॐ ह्री श्री परिग्रह त्याग महाव्रत धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

पंच समिति (जोगीराशा)

हस्त चार लख पद को धारे उर अनुकपा लावे ।
त्रस थावर की रक्षा करते समता भाव बढावे ।।
ईर्या समिति पाले साधु मन बच काय त्रियोगा ।।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।१।।
ॐ ह्री श्री ईर्या समिति प्रतिपालक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामिति स्वाहा ।

सब जीवो से हित मित बोले खेद नही उपजावे ।
दे उपदेशरु अघ को टाले शिवमारग दर्शावे ।।
भाषा समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।२।।
ॐ ह्री श्री भाषा समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

सोधे भोजन ठाडे लेवे मौन सहित बिन सेना ।
टाले अघ सब दोष असन मुनि मुखसे कहत न बेना ।।
एषरण समिति पाले साधु मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भव रोगा ।।
ॐ ह्री श्री एषरणा समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

वस्तु उठावे छोडे भूपर पहले देखे भाई ।
करे नहि परमाद कभी भी अघ सारे टर जाई ।।
समिति निपेक्षरण जे पाले मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट होय भवरोगा ।।
ॐ ह्री श्री आदान निक्षेपरण समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

त्रस थावर की रक्षा करके मूत्ररु मल को त्यागे ।
करे नहि हे वैर किसी से हिसा का अघ भागे ।।
समिति धरते प्रतिष्ठापन मन वच काय त्रियोगा ।
अष्ट द्रव्य से पूजो याते नष्ट करो भव रोगा ।।
ॐ ह्री श्री प्रतिष्ठापन समिति धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

पंचेन्द्रि रोध (अर्घ) चौपाई

हल्का सु भारी ऊषरण जान कोमल ठडा करकस आन ।
रूक्ष चिकन यह अष्ट बखान इन्द्रिय कर्म सुभेद प्रमारण ।।

स्पर्शन इन्द्रिय है शैतान वीतरागि जन जीते महान ।
पूजू वसु विधि अर्घ्य सुआन भाव भक्ति उरमे धर ध्यान ।।
ॐ ह्री श्री स्पर्श इन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

खट्ठा मीठा कटुक कषाय चरपरा यह स्वाद कहाय ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजू वसु विधि अर्घ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री जिव्हा इन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

घ्राणेन्द्रिय है भेद सुदाय वशमे इसके सब जग होय ।
जीते इनको मुनिगण राय, पूजू वसु विधि अर्घ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री घ्राणेन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

नयना इन्द्रिय पाच सुहाय, विषय कहै है गणधर राय ।
जीते इनको मुनिगणराय पूजूं वसु विधि अर्घ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री नयना इन्द्रिय विजय प्राप्त साधुदेवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

कर्णेन्द्रिय के विषय जु सात कहत जिनेश्वर उर हर्षात ।
जीते इनको मुनिगण राय पूजू वसु विधि अर्घ्य चढाय ।।
ॐ ह्री श्री कर्णेन्द्रिय विजय प्राप्त साधुभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति
स्वाहा ।।५।।

षडावश्यक ६ अर्घ पद्धडी

सब जीवो से समता कराय, नहि राग द्वेष मन मे लहाय।
जे आर्तरौद्र द्वय ध्यान त्याग अरु सामायिक करते सुभाग॥
ॐ ह्रीं श्री सामायिक मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

जे करे सस्तवन भक्ति धार,
चतुवीस जिनेश्वर गुण विचार।
यह आवश्यक सु द्वितीय जान,
हम पूजे वसु विधि द्रव्य आन।
ॐ ह्रीं श्री स्तवन मूल गुण धारक
साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

जय वन्दन करते बार बार
जिन देवतनी है सुखदसार।
यह वन्दन आवश्यक महान
हम पूजे सुन्दर द्रव्य आन।
ॐ ह्रीं श्री बदना मूल गुण धारक
साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

जय रात दिवस जो दोष होय,
जय ऊठत बैठत गमन होय।
उस अघ नाशन के हेतु आप,
शुभ करे प्रतिक्रम और जाप।

ॐ ह्री श्री प्रतिक्रमण मूल गुण धारक

साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

मुनि षटरस युत सब वस्तु त्याग

जय करे उपोषण त्यजत राग ।

वह होवे प्रत्याख्यान सार,

हम पूजे मुनिवर बार-बार ।

ॐ ह्री श्री प्रत्याख्यान मूल गुण धारक

साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

जिस आसन से मुनि ध्यान धार,

वैराग्य चितारे जग असार ।

उपसर्ग होय बहु विध प्रकार,

नहि छोडे आसन निज विचार ।

ॐ ह्री श्री कायोत्सर्ग मूल गुण धारक

साधु देवेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

सप्त शेष गुण (गीता)

जब ऊँच नीच सुहोय भूमि खण्ड ककर सहित हो ।

शयन करते शुद्ध पृथ्वी, किन्तु प्राणी रहित हो ।।

वे साधु मेरे उरवसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।

पूज वसु विध अर्घ्य लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।

ॐ ह्री श्री एकाशन शयन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं

निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

नहि रच आभूषण गहे तन तेल इत्र नसेवते ।
रहत वैरागी वे सब मे त्याग मजन रेवते ।।
ते साधु मेरे उर वसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विध अर्घ्य लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।।
ॐ ह्री श्री दन्त घावन त्याग मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

जय रहित वस्त्र सु नगन तन हो, ओढते न विछावते ।
सहत शीत सुउष्णता को आत्म निज को ध्यावते ।।
ते साधु मेरे उर वसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विध अर्घ लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।।
ॐ ह्री श्री नगन तन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

निजहस्त सिर के मूछ डाढी केशलुचन करत है ।
नहि चहत है वे पर सहायक जीव रक्षा धरत है ।।
ते साधु मेरे उस वसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विध अर्घ लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।।
ॐ ह्री श्री केश लुचन मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽघ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

इक बार दिन मे करत भोजन शुद्ध आतमध्यावते ।
रस रहित नीरस असन लेवे साधु कर्म नशावते ।।
ते साधु मेरे उर वसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विध अर्घ लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।।

ॐ ह्री श्री एक बार भोजन मूल गुण धारक साधु देवेभ्वोऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

होकर खडेजे असन करते राग नहि मन धरत है ।
जे साधते शिवमग सदा तेकर्म रिपु को हरत है ।।
ते साधु मेरे उर वसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विधि अर्ध लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।।

ॐ ह्री श्री ठाडे अहार मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

पवन चालै धूल आवे गातमे चिप जाय है ।
होय मैली देह सारी फिर न्हवन नहि लाय है ।।
ते साधु मेरे उर वसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विधि अर्ध लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ,।

ॐ ह्री श्री स्नान त्याग मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्थिपामीति स्वाहा ।।७।।

पच व्रत अरु पच समिति पच इन्द्रिय वश करे ।
षट करे आवश्यक निरन्तर सप्त गुण चित आदरे ।।
वे साधु मेरे उर बसो सब पाप क्षण मे नाश हो ।
पूज बहु विधि अर्ध लेकर ज्ञान दिव्य प्रकाश हो ।।

ॐ ह्री अष्टा विशति मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

ॐ ह्री श्री साधु परमेष्ठि देवेभ्यो नम स्वाहा ।।

(यहा पुष्पों से ६ बार जाप करे)

जयमाला

दोहा——मगल मय तव नाम से पाप सकल नशि जाय ।
कहुँ श्रेष्ठ जय मालिका जो है शिव फलदाय ।।

पद्धडी

जय नगन दिगम्बर रुप धार ।
जो तीर्थकर का रुप सार ।।
जय मुक्ति नगरी का पन्थ जान ।
सिर नावे सुरपति नृप महान ।।१।
जय परम गुरु हो सुखद आप ।
भवि जीव करे तव नित्य जाप ।।
जय मोह रिपू को चूर चूर ।
जय आतम रस गुण पूर पूर ।।२।।
जय भोग भुजगा विषय जान ।
अरु है वे ये सब नर्क खान ।।
सब अथिर लखा ससार आप ।
अरु होता जिसमे नित्य पाप ।।३।।
सब छोड चले गुरुवर महान ।
कदली तरुवत ससार जान ।।
जय पच महाव्रत धरत धीर ।
जय पच समिति पालत सुवीर ।।४।।

जय इन्द्रिय पाचो विजय कीन ।
षट आवश्यक उर धर सुलीन ।।
जय सप्त शेष गुण आप धार ।
ये गुण अट्ठाविस पाल सार ।।५।।
जय शीत काल सरनदिया तीर ।
अरु चौहट बैठे घ्यान धीर ।
जब चले हवा ठडी दुखार ।
गुरु लगे वपु नही मन बिगार ।।६।।
ग्रीषम मे पर्वत आप जाय ।
वर्षा ऋतु मे है तरु सुहाय ।।
द्वावीस परीषह सहत आप ।
नही कष्ट करे धर आतम जाप ।।७।।
तब शत्रु मित्र मे एक भाव ।
मणि कचन काच सु सम स्वभाव ।।
जय पितृवन अरु महल देख ।
नहि पूज अपूजक द्वेष नेक ।।८।।
जय काम विभजन आप सूर ।
गुण गावे हम नहि होत पूर ।।
ससार भ्रमण से दो छुडाय ।
जय गुरुवर तुम हो जगत राय ।।६।।
जय स्वपर कन्याणक हो महान ।
सग त्याग दिया चतुवीस जान ।।

जय आर्तरौद्र द्रय ध्यान छोड ।
जय धर्म शुक्लमे मनसु जोड ॥१०॥
जय अन्तर बाहर तप तपन्त ।
जय द्वादश विधि ये कहत सन्त ॥
उपसर्ग अनेको सहत आप ।
जय धार हृदय मे क्षमा चाप ॥११॥
जय साधु महागुण आप धार ।
तप करे बरे हो मुक्ति नार ॥
हम चरण शरण मे आय आय ।
सूरजमल वन्दे शीष नाय ॥

धत्ता

जय जय रिषि राजा भव भय भाजा शिवके काजा आपवर ।
हम गुण गण गावे शीष नवावे शिव फल पावे नष्टकर ॥

ॐ ह्री अष्टविशति मूल गुण धारक साधु देवेभ्योऽर्ध्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥

दोहा—सर्व साधु परमेष्ठि नमि तारण तरण जहाज ।
मन वच तन से भजत हू होय सफल मम काज ॥

इत्याशीर्वाद

जिन धर्म पूजा

परम पूज्य है धर्म अहिसा जीवो को वह अति सुखदाय ।
स्याद्वाद पद महा विभूषित रत्नत्रय का है समुदाय ।।
सस्सृति का पथ भ्रमण मिटाकर अविनाशी ही पद
सुखदाय ।
इनको पूजे जो भवि प्राणी थापन कर उरमे उमगाय ।।
ॐ ह्री श्री स्याद्वाद जिन धर्म अत्रावतरातर सवौषट आव्हान
ॐ ह्री श्री स्याद्वाद जिन धर्म अत्र तिष्ठतिष्ठ ठ ठ स्थापनम्
ॐ ह्री श्री स्याद्वाद जिन धर्म अत्रमम सन्निहितो भव भव
वषट सन्निधिकरण ।

अथाष्टकम् (सखी) (पाईता)

शीतल मिष्ट सुवासित चगा, धारा देय महा जल गगा ।
जन्म मृत्यु जरा नश जाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो
जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।
बावन चन्दन सुरभित लाया केशर सघ मे घिसी हुलसाया ।
भव्वाताप नशे दुख दायी, जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यः
ससार ताप विनाशनाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

अक्षत धोय महा हितकारी ताके पु ज करो अतिभारी ।
अक्षयपाय निधि सुखदाई जिनवर धर्म यजो रे भाई ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

कुसुमा नाना भाति मुचोखे, चपा कुन्द गुलाब अनोखे ।
काम वाण की होय विदाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्य काम वाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।
गू जे फेणी अनरसे ताजे वावर बर्फी धेवर साजे ।
डाकिन रोग क्षुधा भगजाई जिनवर धर्म यजा रे भाई ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्य क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेध निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

दीपक रतन अमोलक लाया घनसार सुघ्रृत का जलाया ।
ज्ञान ज्योति महा उर जगाई जिनवर धर्म यजोरे भाई ।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो मौहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

लेउ धूप दशागी नव्य, भामुर माहि खिषावो भव्य ।
आठो कर्म तुरत जल जाई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ।।
ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

ग्राम्र काम्र ग्रनारस केला हेम थाल मे कर बहु भेला ।
पावे मोक्ष महा ठकुराई, जिनवर धर्म यजोरे भाई ॥
ॐ ह्री श्री ग्ररहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो
मोक्षफल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ॥८॥
नीर ग्रादिक द्रव्य सु मुन्दर करते ग्रर्चन सतत पुरन्दर ।
पावे पद ग्रविनाशी सुखाई जिनवर धर्म यजोरे भाई ॥
ॐ ह्री श्री ग्ररहन्त देव कथित स्याद्वाद जिन धर्मेभ्यो
ग्रनर्घ्य पद प्राप्तये ग्रर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥९॥

(ग्रथ प्रत्येक पूजा) कामिनी मोहन

क्रोध महा नीच है स्वभाव को भुलावते ।
धार प्राणि मात्र क्रोध दुक्ख को पावते ॥
साधु जन जीत क्षमा भाव उर लावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य ग्रमरण नही खावते ॥
ॐ ह्री श्री उत्तम क्षमा धर्मागाय
ग्रर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥
ग्रष्ट मद जीव से लगे ग्रनादि काल से ।
पाय दुक्ख जीव महा गर्व की चाल से ॥
साधुजन जीत उस गर्व को न ध्यावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य ग्रमरण नही खावते ॥
ॐ ह्री श्री उत्तम मार्दव धर्मागायग्रर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

कुटिलताधार तिर्यंच गति जावते ।
लाद भार बन्ध वध दुक्ख को पावते ।।
साधुजन जीत मन सरलता लावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमरग नही खावते ।।
ॐ ह्री श्री आर्जव धर्मागाय
अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।
असत्य पाप खान है नीच प्राणि बोलते ।
धार झूठ राज वसु नर्क भव डोलते ।।
धन्य धन्य साधुराज सत्य उपजावते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमरग नही खावते ।।
ॐ ह्री श्री सत्य धर्मागाय
अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।
लोभ महादुक्खदा अनन्त सब जीव को ।
होत नहि तोष कभी कष्ट ही सदीव को ।।
धन्य धन्य साधु राज काटि लोभ नीव को ।
पाय वह मोक्ष सौख्य भ्रमरग नही खावते ।।
ॐ ह्री श्री उत्तम शौच धर्मागाय नम
अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।
नि सयमी जीव दुक्ख पावते लखाय है ।
धार वह मनुष्य भव व्यर्थ मे लुटाय है ।।
धन्य धन्य साधु रत्न सयमा को ध्याय है ।
पाय वह मोक्ष सौख्य गोत नही खाय है ।।

ॐ ह्री श्री उत्तम सयम धर्मांगाय नम

अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

होय दो प्रकार तप वाह्य अभ्यन्तरा ।

करत ना अज्ञानी जीव दुख यो ही भरा ।।

उग्र तप तपत है महा योगीश्वरा ।

पाय वह मोक्ष सौख्य होय जिनवर वरा ।।

ॐ ह्री श्री उत्तम तप धर्मांगाय नम

अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

त्याग नही करत जीव मोह राज चालते ।

धार राग द्वेष ही दुक्ख को पालते ।।

धन्य धन्य सन्तराज त्याग खुश हालते ।

पाय वह मोक्ष सौख्य दुक्ख को टालते ।।

ॐ ह्री श्री उत्तम त्याग धर्मांगाय नम

अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

सग चतुर्वीस ही देव जिनवर कहा ।

धारते सग जीव दुक्ख अन्त ना लहा ।।

धन्य धन्य नग्न हो सन्त त्यजते अहा ।

पाय वह मोक्ष सौख्य सन्त सग को दहा ।।

ॐ ह्री श्री उत्तम आकिचन धर्मांगाय

अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

देव पशु मनुष्य की नारी को सेवते ।

करत अब्रह्म जो नरक पद लेवते ।।

धन्य माघु राज महा ब्रह्म उपसेवते ।
पाय वह मोक्ष सौख्य हर्ष मन ठेवते ।।
ॐ ह्री श्री उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मागाय नम
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।
चरित्र दर्श ज्ञान को धार विपरीत ही ।
मेय मिथ्यात्व को करत है अनीत ही ।।
धन्य धन्य साधु रत्न तीन को साधही ।
पाय वह मोक्ष सौख्य होत है अबाध ही ।।
ॐ ह्री श्री रत्नत्रय धर्मेभ्यो
अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।११।।

२५ मलदोष (जोगीराशा)

देव शास्त्र गुरु धर्म के ऊपर करता शका भाई ।
सम्यग्दर्शन दोष यही है भव बनमे भरमाई ।।
होय निशकि जिन वचनो मे सम्यगदृष्टी होई ।
पूंजू उत्तम द्रव्य सु लेकर मोक्ष महा पद सोई ।।१।।
ॐ ह्री शकामल दोष रहित निशकित गुणोपेत सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।
कर्मण परवश अन्तसहित है होय पाप का बीजा ।
ऐसे सुख मे करता श्रद्धा समकित मल्ल कहिजा ।।
छोड अथिर सब सुख की आशा समकित शुद्ध कहाया ।
पूजू मन वच काय त्रियोगा वसु विधद्रव्य चढाया ।।

ॐ ह्री काक्षित मल दोष रहित निकाक्षित गुणोपेत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥२॥
होय स्वभावी वपु अशुद्ध रत्नत्रय से शुद्ध ।
ऐसे मुनि तन ग्लानि करता समकित होय अशुद्ध ॥
होत नही है ग्लानि इससे समकित शुद्ध कहाई ।
उत्तम द्रव्यमु अर्घ्य बनाकर पूजू मनवच काई ॥
ॐ ह्री अनिर्विचिकित्सा मलदोष रहित निर्विचिकित्सा गुणोपेत सम्यग्दर्शन भार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामिति स्वाहा ॥३॥
मिथ्यादर्शन पन्थि जनो की थुति करे हर्षाई ।
ये ही दर्शन दोष करत है जो भव भव दुखदाई ॥
खोटे मारग पन्थि जनो की नही प्रशस उचरे है ।
सम्यग्दर्शन पाले ज्ञानी, भवदधि से उतरे है ॥४॥
ॐ ह्री मूढ दृष्टी मल दोष रहितं अमूढ दृष्टी गुणोपेत
सम्यग्दर्शन भार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥
पावन सम्यक्रत्न सुमारग अज्ञानी जन हरते ।
निन्दा होती धर्म तनी जब दर्शन मल स्वीकरते ।
रत्नत्रय का मारग ज्ञाता पर अवगुण को छिपावे ।
करता सम्यग्दर्शन शुद्ध जिनमारग हि दिपावे ॥
ॐ ह्री अनूप गुहन मल दोष रहित उपगूहन गुणोपेत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥५॥
सम्यग्दर्शन चारित्रनग से गिरता है यदि कोई ।
ज्ञानी होकर थिर नही करता समक्ति मलिन सुहोई ॥

धर्म बन्धु जन गिरते जन को फिर से थापित करते ।
सम्यग्दर्शन शुद्ध उन्ही का शिवरमणी को वरते ।।
ॐ ह्री अस्थितिकरण मल दोष रहित स्थितिकरण गुणोपेत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।
धर्मरु धार्मिक सज्जन ऊपर प्रीति नही जो करते ।
सम्यग्र्शन दोपी उनका भवदधि नाही तारते ।।
करते धार्मिक बन्धुजनो मे प्रीति महागुण धारी ।
बत्सल अग कहे उसको गरण पूज महा दुखहारी ।।
ॐ ह्री अवात्सल्य मल दोष रहित वात्सल्य गुणोपेत
सम्यग्दर्शन जिन धर्मेभ्योऽर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।
ज्ञानी होकर मिथ्यातम को दूर नही जो करते ।
नही बढावे जैन धर्म को समकित दोष मुहारते ।।
जैसे तैसे प्रसरित तम को नश कर धर्म बढावे ।
सम्यग्दर्शन होता शुद्ध वसु विध द्रव्य चढावे ।।
ॐ ह्री अप्रभावनामल दोष रहित प्रभावनाग शुणोपेत
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्ध्यं निर्विपामिति स्वाहा ।।८।।

अष्टमद–दोहे

करत नही मद को कभी पिता भूप हो जाय ।
मदकरता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।
ॐ ह्री पितृभूपमद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन
धर्मेभ्योऽर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

मनमे नामद लावते मामा नृप बन जाय ।

मदकरता दर्शन मलित कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्री मातुल मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शनमार्गेभ्योऽर्घ्य

निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

रूप नही थिर रहत है क्यो फिर मदमन ल्याय ।

मद करता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्री रुप मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य

निर्विपामीति स्वाहा ।।११।।

करत नही मद ज्ञान का नरको मे ले जाय ।।

मदकरता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्री ज्ञानापद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य

निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।

अथिर रूप इस सग का क्यो कर गर्व कराय ।

मद करता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्री धन मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य

निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

नाशवन्त तनु शक्ति है मद उरमे न वसाय ।

मद करता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्री शक्ति मद मल दोष रहित मम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य

निर्विपामीति स्वाहा ।।१४।।

तप का मद जो करत है व्यर्थ तपस्या जाय ।

मद करता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ।।

ॐ ह्री तप मद मल दोष रहित सम्यग्यदर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
प्रभूता मुझ मे निर्विपामीति स्वाहा ॥१५॥

है बडी करता मद दुखदाय ।
मद करता दर्शन मलिन कहत जिनेश्वर राय ॥

ॐ ह्री प्रभुता मद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ॥१६॥

गीता-पूर्णार्घ्यं

जनक भूप मु जननी भ्राता नृप मेरे बलकार है ।
रूप सुन्दर ज्ञान बहु विध धन मेरा हितकार है ॥
शक्ति प्रभु मे है बडी तप करत हू सुखकार है ।
प्रभुता अनुपम मुझमे इस विध करत मद दुखकार है ।

ॐ ह्री अष्ठमद मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्यो
पूर्णाऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥

३ मूठता-गीता

सरित न्हाये नमत पीपल ढेर बालु पूजते ।
पर्वतो से पात करते अग्निमाही हूजते ॥
कहत जिनवर लोक मूढा, दोष सम कित दायजी ।
ससार मे बहु दिन रुलावे मोक्ष सुख नशायजी ॥

ॐ ह्री लोक मूढता मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्बिपामीति स्वाहा ॥

जो रागी द्वेषी देवता को पूजते हर्षायकर ।
प्राप्त होगा वर मुझे यह आश मन मे लायकर ॥

कहत जिनवर देव मूढा दोष समकित दायजी ।
ससार मे बहुदिन रुलावे मोक्ष सुख नशायजी ।।
ॐ ह्री देव मूढता मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।
जो है सग्रन्थियुक्त हिसा डूबते ससार मे ।
अरु डुबोवे बहु जनो को घूमते बेकार मे ।।
सत्कार करता इन जनो का मूढ पाखड होय है ।।
ये हि समकित दोष ठाने कर्म मल न धोय है ।।
ॐ ह्री पाखण्डी मूढता मल दोष रहित सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामिति स्वाहा ।।

६ अनायतत-गीता

देवता के है न लक्षण देवता जो बन रहे ।
दोष अष्टादश जिन्हो मे राग द्वेषी हो रहे ।।
देब कु कहते इन्होको देव गण धर राय है ।
नमन करते प्राणी इनको दोष दर्शन लाय है ।।
ॐ ह्री कुदेव अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।
अक्ष पच न वशमे जिसके जो सग्रन्थि है बना ।
जटा धारे भस्म सारे बह गुरु भव मे सना ।।
होत एसे गुरु मिथ्या देव जिनवर भासिया ।
नमन करते प्राणी इनको दोष दर्शन आखिया ।।

ॐ ह्री कुगुरु अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

एकान्त से दोषि जो है वह मास खाना है लिखा ।
आदि अन्त न एक जिसका कपिल आदिक का भखा ।।
होत मिथ्या शास्त्र एसे देव जिनवर भासिया ।
नमन करते प्राणी इनको दोष दर्शन आखिया ।।

ॐ ह्री कुशास्त्र अनायतनमल दोष रहित सम्यग्दर्शन
मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

जो है कुदेबा राग युक्त भार्या के साथ मे ।
हस्त मे त्रिशूल राखे गग निकले माथ मे ।।
है उपासक इनके प्राणी उन प्रशसा धारते ।
मलिन कर सम्यक रतन को तुच्छ भव स्वीकारते ।।

ॐ ह्री कुदेव उपासक अनायातन मल दोष रहित
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

अन्तर मे धारे राग को बाहर मे अम्बर ले घने ।
धारले कुमेष मिथ्या जग मे गुरु जो है वने ।।
हे उपासक, इनके प्राणि उन प्रशसा धारते ।
मलिन कर सम्यकरतन को तुच्छ भव स्वीकारते ।।

ॐ ह्री कुगुरु उपासका अनायतन मल दोस रहित
सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

सर्वज्ञ का भाषित न होवे अल्प ज्ञानी का बना ।
एकान्त मत को पोषता जो शास्त्र मिथ्या है घना ।।

है उपासक इनके प्राणी उन प्रशसा धारते ।
मलिन कर सम्यक्‌रतन को तुच्छ भव स्वीकारते ।।
ॐ ह्री कुशास्त्रोपासका अनायतन मल दोष रहित सम्यग्दर्शन जिन धर्मेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

७ भय दोहे

नष्ट न होवे इष्ट मम ना अनिष्ट मिल जाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्री इह लोक भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।
स्वर्गगति या दुर्गति होगा चित भरमाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्री परलोक भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
मूर्छित होय शरीर मे दुख ना मम होजाय ।।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजजाय ।।
ॐ ह्री वेदना भग मल दोष रहित सम्यग्दशन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।
मम रक्षक कोई नही मनमे शका लाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।
ॐ ह्री आरक्षाभय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामिति स्वाहा ।।४।।
मम वस्तु यह प्रिय अति चुरा नही ले जाय ।
भय करता वह रात समकित मल उपजाय ।।

ॐ ह्री अगुप्त भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

बाल वृद्ध यूवक रहु मरण नही हो जाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।

ॐ ह्री मरण भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

बज्रपात गिरकर कही मरण बीच नही पाय ।
भय करता वह रात दिन समकित मल उपजाय ।।

ॐ ह्री आकस्मिक भय मल दोष रहित सम्यग्दर्शन मार्गे-
भ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

अग पूर्व शास्त्र अरु अन्य ग्रन्थ राय के ।
सूत्र अर्थ ज्यो लिखा वाणिमे लायके ।।
करत अभिमान नही विनय अन्य ध्यायके ।
पूजहु द्रव्य वसु भक्ति उर लायके

ॐ ह्री श्री जिनवर देव कथित बहुमानाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

८ ज्ञान के अंग—नाराच

व्याकर्ण अनुसार शब्द शुद्ध उच्चारते ।
करत न प्रमाद जीव अशुद्ध शब्द टारते ।।
होत शब्द शास्त्र जिन बदन ते निकारते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति उर धारते ।।१।।

ॐ ह्री जिनवर देव कथित सम्यक शब्दाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

श्लोक के अर्थ को चित्त में उतारते ।
हो यथार्थ शुद्ध हो गलत न चितारते ।।
होत अर्थचार जिन वदन ते निकारते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति उर धारते ।।
ॐ ह्री श्री जिनवर देवकथित अर्थाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।
अर्थ अरु शब्द शुद्ध ध्यानमे लावते ।
करत न अशुद्ध पाठ अर्थ मे लुभावते ।।
होत उभयचार जिन कहत सु भावते ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति ना छिपावते ।।
ॐ ह्री श्री जिनवर देवकथित उभयाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।
करत स्वाध्याय न अकाल मे जीव ही ।
बाँधते न पाप समय वाचते सदीव ही ।।
होत कालचार जो कहत जिनदेव ही ।
पूजहूँ द्रव्य अष्ट भक्ति जो सदैव ही ।।
ॐ ह्री श्री जिनवर देवकथित कालाचार विनयेभ्यो ऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।
हस्त पैर धोय कर करत स्वावध्याय जी ।
वस्त्र भी शुद्ध हो शुद्ध निज काय जी ।।
कहत विनय चार शिव मार्ग का उपाय ही ।
पूजहू द्रव्य अप्ट भक्ति जो सदैव ही ।।
ॐ ह्री श्री जिनवर देवकथित विनयाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

श्लोक के अर्थ को चित्त मे उतारते ।
हो यथार्थ शुद्ध ही गलत न विचारते ।।
करत स्वाध्याय जिन वाणिका आप जी ।
भूलते ना कभी पाप सर्व जाय जी ।।
होत उपधना-चार कहत गणराय जी ।
पूजहू द्रव्य अष्ट भक्ति उर ध्याय जी ।।
ॐ ह्री श्री जिनवर देवकथित उपधनाचार विनयेभ्यौऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

प्राप्त कर ज्ञान गुरु राय को छिपावते ।
करत पाप दुष्ट जीव नर्क उपजावते ।।
छुपात ना नाम गुरु ऊच गति पावते ।
होत अनिन्हवाचार ही स्वभावते ।।
ॐ ह्री जिनवर देवकथित अनिन्हवाचार विनयेभ्योऽर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

पूर्णार्घ्य—गीता

शकादि पच विशति है दोष समकित जानिए ।
होत नही सम्वकत्व शुद्ध रहत इनके मानिए ।।
छोड कर इन दोष मल को शुद्ध समकित कीजिए ।
नीरादि उत्तम द्रव्य लेकर शुद्ध समकित पूजिए ।।
ॐ ह्री श्री जिनवरदेव कथितसर्व मल दोष रहित शुद्ध
सम्यक्त्व मार्गेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

पांच ज्ञानों के अर्घ्य—जोगीराशा

इन्द्रिय अरु मन से सदा ही जाने पुद्गल रूप।
होय वह मति ज्ञानसु उत्तम जिनवर कहत सरूप ।।
वसु विधि प्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित मति ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

वीरज अन्तराय सुश्रुत का होय क्षयोपशम भाई ।
जाने वह सब द्रव्य सुज्ञानी अक्षर अनक्षर गाई ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काम सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित श्रुत ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

द्रव्य क्षेत्र अरु काल की सीमा लेकर रूपी द्रव्य ।
जानत अवधि ज्ञान यही है श्रद्धो प्राणी भव्य ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।
ॐ ह्रीं श्री जिनवर कथित अवधि ज्ञानेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

मन मे पर के रूपी द्रव्य होय वह जिस काल ।
जाते मन पर्यय सुज्ञानी नमो सदा शुभ भाल ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सु वश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्री श्री जिनवर कथित मन पर्यय ज्ञानेभ्योऽर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

तीन लोक के द्रव्य सुपर्यय जाने युगपद ज्ञानी ।
नाम सुकेवल ज्ञान उसी का होय नही अभिमानी ।।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सुवश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्री श्री जिनवर कथित केवल ज्ञानेभ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।

१३ प्रकार चरित्र अर्घ

पच महाव्रत पच समीति गुप्तित्रय शुभ कारे ।
होय त्रयोदश चारित्र ये ही मुनिगण इनको धारे ।
वसु विधि द्रव्य मनोहर लेकर कचन थाल भराई ।
पूजो मन वच काय सुवश कर ज्ञान होय सुखदाई ।।

ॐ ह्री श्री त्रयोदश चारित्रेभ्यो ऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।

नाराच

होय भव्य जीव जो भाय सोल भावना ।
भ्रमत नही अथिर भव तीर्थ पद पावना ।।
हे यही देव जिनराज की देशना ।
अर्घ ले पूजते पाप सब नाशना ।।

ॐ ह्री श्री जिनवर देव कथित षोडस कारण भावना जिन धर्मेभ्योअर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।।

ॐ ह्री श्री स्याद्वाद अहिसा परमो धर्मेभ्यो नम· स्वाहा ।

(यहा ६ बार पुष्पो से जाप्य करें ।)

जयमाला

दोहा—जैन धर्म प्रसाद से दुष्ट जीव तर जाय ।
गाऊ महिमा धर्म की सुगति पथ लगाय ।।

पद्धडी

जय धर्म अहिसा सार जान,
है सब धर्मो मे अति महान ।
निस कारण बन्धु सु धर्म एक
भविध्यावे दुरित न रहे नेक ।।१।।
जो जीव फिरे ससार माहि,
उनको तारक है अन्य नाहि ।
निषकारण बन्धु सु धर्म एक
भवि ध्यावे दुरित न रहे नेक ।।२।।
जय स्याद्वाद इक धर्म सार,
जो ध्यावे मुक्ति तुरत धार । निष्कारण—।३।
जय रत्न त्रय दश धर्म रूप
जय अनेकान्त महिमा अनूप । निष्कारण—।४।
सब भेद अहिसा धर्म जान,
अरहन्त देव की खिरतवान । निष्कारण—।५।
जय रामचन्द्र हनुमान वीर,
धर हुए वे मुक्ति वीर । निष्कारण—।६।

जय पच शतक मुनि धानिपेल,
नही डिगे आप प्रिय धर्म सेल । निष्कारण-।७।

जय गगा मे पुनि दिये डाल,
चित्तधार धर्म रह गुण विशाल । निष्कारण-।८।

जय तीर्थकर चक्री महेश,
वृषधार गये मुक्ति हमेश । निष्कारण-।९।

आचार्य मुनि शुचि धर्म धार,
हो गये भवो दधि आप पार । निष्कारण-।१०।

सति मैना सुन्दर एक नार,
पति कुष्ट नशाया धर्म धार । निष्कारण-।११।

जय अजन सीता जानि नारि,
जय पावन धर्म हिय विचारि। निष्कारण-।१२।

इस विधि अनेको भविक राज,
वृषधार लहै है मुक्ति राज । निष्कारण-।१३।

जिन धर्म तनी महिमा महान,
सूरज से प्रभु नही होत गान-।१४।

निष्करण वन्धुसु धर्म एक,
भवि ध्यावे दुरित न रहे नेक । ।।१५।।

धत्ता

जय जय जिन धर्म है अति परर्म नाशक कर्म ध्यावत है ।
हम महिमागावे सुख उपजावे मुक्ति रमा को पावत है ।।
ॐ ह्री श्री स्याद्वाद जिन धर्मेभ्योऽनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं
निर्विपामीति स्वाहा ।।१६।।

अडिल

दश लक्षण अरु रत्नत्रय सुखदाय जी ।
भविजन पूजत धर्म अहिसा पाय जी ।।
सुख सपत बढ जाय, दुरित नश जाय जी ।
शिखरमणी भर्तार वने भवि राय जी ।।
इत्याशीर्वाद

(जिनवाणी) पूजन

श्री अरहन्त परम गुरु सुख से आई हो सब भरम मिटाय ।
सत्यारथ पथ को दर्शाकर सम्यग्ज्ञान की ज्योति जगाय ।।
वह जिनवाणी आ उर मेरे वास करो मम कर्म खपाय ।
आठो विधि से पूजू माता मन वच तन इक भाव लगाय ।।
ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत
देवी अत्रावतरावतर सवौष्ट आव्हान ।
ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशॉग श्रुत देवी
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ. स्थापन ।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवी
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधि करण ।

अथाष्टकं—सोलहकारण पूजन चाल

सयम धर मुनि मन सम लेय, झारी भरकर आप चढेय ।
पूजू आय जय जिनवाणी पूजू आय ।।
जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा सन्ताप ।
पूजू आय जय जिनवाणी पूजू आय ।।
ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्यो जन्म जरा
मृत्यु विनाश नाय जल निर्विपामीनि स्वाहा ।।१।।

मलयागिरी शुभ चदन लाय, अरु केशर सधमे घिसवाय ।
पूजूं आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।
जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा सताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।
ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्य ससार
ताप विनाशनाय चदन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

अक्षत धवल धोय कर लाय, माता सनमुख पुज कराय ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।
जिनवाणी मम माता आप, पूजे मिटे महा सताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्यो अक्षय पद प्राप्तेय अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

पुष्प मनोहर चुन भरि थार, जाति मरुआ अरु कचनार ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।
जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा सन्ताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्य काम बाण विध्वसनाय पुष्पानि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

लाडू, पेडा, पूरी आन, भरकर थाल धरु पकवान ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।
जिनवाणी मम माता आप, पूजै मिटे महा सन्ताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्य क्षुधा रोग विनाश नाय नैवेध निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

जगमग जगमग होत उद्योत, घृत दीपक की सुन्दर ज्योत ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।
जिनवाणी मम माता आय, पूजै मिटे महा सन्ताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू ।।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

धूप दशगी खेई जोर, भासुर कर्म उडै भक भौर ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

जिनवाणी मम माता आय, पूजै मिटै महा सताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवोभ्यो अष्टकर्म
दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

केला कमरख अरु बादाम, श्री फल पिस्ता खारिक आम ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

जिनवाणी मम माता आय, पूजै मिटै महा सताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्यो मोक्षफल
प्राप्तेय फल निर्विपामिति स्वाहा ।।८।।

ले जलादि सब अर्घ बनाय, स्वर्ण थाल भर तुम्हे चढाय ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।।

जिनवाणी मम माता आय, पूजै मिटै महा सताप ।
पूजू आय, जय जिनवाणी पूजू आय ।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग श्रुत देवीभ्यो अनर्घ्यँपद
प्राप्तेय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

अथ प्रत्येक अर्घ

अगबाह्य चतुर्दश प्रकीर्णक

दोहा—सामायिक के काल सब मुनिगण के बतलाय ।
शास्त्र महा जो है सही सामायिक कहलाय ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित सामायिक विस्तार कथक शास्त्राय अर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ॥१॥

चौबीसो जिनराज की, थुति होवे जिस माही ।
नाम शास्त्र है सस्तवन, जिनवर मुख निकसाही ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित वृषभादि नाम चतुर त्रिशदतिशय प्रातिहार्य लक्षण वरणादि व्यावर्णक चतुर विशति स्तवन नाम शास्त्राय अर्ध्य तिर्विपामीति स्वाहा ॥२॥

चौबीसो जिनराज मे स्तवन एक का होय ।
नाम बदना कहत है शास्त्र महा सुख सोय ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित अरहन्तादि नाम एकैकशोऽभिवन्दना विधान बोधित वन्दना नाम शास्त्राय अर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥३॥

रात दिवस जो दोष हो निराकरण जिस माही ।
प्रतिक्रमण वह शास्त्र है, नाम प्रथित सुखदाई ॥

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित दिवस रात्री पक्ष चातुर्मास सवत्सरेर्यापथिकोत्मार्थ प्रभव सप्त प्रतिक्रमण प्ररूपक प्रतिक्रमण शास्त्राय अर्ध्यं निर्विपामीति स्वाहा ॥४॥

विनयाचार प्रकार का, अर्थ प्रकाशन हार ।
वैनयिक यह नाम है शास्त्र महा सुख कार ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त वेव कथित ज्ञान दर्शन चरित्रोप चार लक्षरण पच विध विनय प्ररूपक निनय शास्त्राय अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

शिक्षा दीक्षा कर्म को, बतलावे यह शास्त्र ।
कृति कर्मा तसु नाम है, पढत शुद्ध हो गात्र ।

ॐ ह्री अरहन्त देव कथित शिक्षा दीक्षादि सत्कर्म प्रकाशक कृति कर्म नाम शास्त्रायअर्घ निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

द्रुम पुष्पादिक भेद अरु यत्या चार वत्ताय ।
दश वैकालिक शास्त्र को नमो भविक सिरनाय ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित द्रुम पुष्पादिक दशाधिकारै मुनिजनाचरण सूचक दश वैकालिक शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

हो उपसर्ग मुनीश को सहनन फल दिखलाय ।
समय उत्तरध्ययन है नाम जिनेश्वर गाय ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित नानोपसर्ग सहनन निवेदक उत्तराध्ययन शास्त्राय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

योग्य सेवन को कहै, सेवन होय अयोग्य ।
प्रायश्चित बतलाय है गण धर कहत सुयोग्य ।।

शास्त्र महा सुख दाय है, व्यवहारा शुभ जान ।
स्वर्ण थाल मे अर्घ ले पूजै मन उमगान ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित यनिनाम योग्य सेवन सूचक अयोग्य सेवन प्रायञ्चित कथन कल्प व्यवहार शास्क्षायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

यति श्रावक आचार को काल देख बतलाय ।
योग्या योग्य विचार के वर्णन कहत सुखाय ।।

ॐ ह्री श्रीअरहन्त देवकथित काल माश्रित्य यति श्रावक नाम योग्यायोग्य निरूपक कल्पाकल्प शास्त्राय अर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१०।।

यति शिक्षा दीक्षा सही गरण पोषरण बतलाय ।
नाम महा कल्प कहा गरण धर कहत सुखाय ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देव कथित शिक्षा दीक्षा गरण पोषरणात्म सस्कार भावनोत्तमार्थ भेदेन षटकाल प्रतिबद्ध यतिनामा चरण प्रतिपादय महाकल्प शास्त्रायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।११।।

स्वर्गो मे उत्पत्ति है पुण्य महा सुखदाय ।
पुण्डरीक इस शास्त्र मे जिनवर भाषा आय ।।

ॐ ह्री श्री अरहन्त देवकथित भवन वास्यादि देवेषु उत्पत्ति कारण तम प्रकृति प्रति पादक पुण्डरीक शास्त्रायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१२।।

देव सुरी पदबी मिले पुण्य प्रकाशन हार ।
शास्त्र महा पुण्डरीक कहै गणधर कहत विचार ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित देवागना पद प्राप्ति हेतु पुण्य प्रकाशक महापुण्डरीक शास्त्राय अर्घं निर्विपामीति स्वाहा ।।१३।।

पुरुष उमर अरु शक्ति सम सूक्षम थूल जु दोष ।
शक्ति देख दे दण्ड को वर्णन करत अदोष ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित स्थूल सूक्ष्म दोष प्रायश्चित पुरुष वय सत्वाद्यपेक्षया प्ररुपयन्ति मशीति का शास्त्राय अर्ध्य निर्विपामिति स्वाहा ।।१४।।

गीता-पूर्णार्घ्यं

अशीति सामयिक थुति अरु वदना प्रति क्रमण है ।
विनय अरु कृति कर्म दश वैकालिका का कथन है ।।
अष्ट उत्तरध्ययन का व्यवहार कल्पाकल्प है ।
वृहत कल्प पुण्डरीक वृहद पु डरिक जल्प है ।।

ॐ ह्रीं श्री अरहन्त देव कथित अग बाह्य चतुर्दश प्रकीर्णक २५०३३८० श्लोकेषु १५ अक्षर पद प्रमाण अगेभ्योपूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।१५।।

अथ ११ अंग अर्घ (सुन्दरी)

महायति चारित जिसमे कहा, कहत आचारग शुभ लहा ।
सहस अष्टादश पद मानिए अर्घ्य पूजू वसु विधि ठानिए ।।
ॐ ह्री अरहन्त देब कथित अष्टादश सहस १८००० पद प्रमाण सहित आचारागायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१५।।

ज्ञान विनया छेदुपथापना कहत सूत्र कृताग शुभ घना ।
सहस छत्तिसो पद शोभना करत पूजा दुख नही होवना ।।
ॐ ह्री षट् त्रिशत्सहस्र ३६०० पद प्रमाण सूत्र कृतांगाऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।१६।

द्रव्य षट् आदिक व्याख्यान है होय थाना अग प्रधान है ।
सहस बैय्यालिस पद होत है पूज तिनको दोसव धोक है ।।
ॐ ह्री द्वाचत्वारिशद सहस्त्र ४२००० पद प्रमाण स्थानांगाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।१७।

लोकत्रयसु प्ररुपरण है जहा, नाम समवायागसु है तहा ।
सहस चौसठ अधिक सुलक्ष है पद जिनेश्वर भाखे दक्ष है ।।
ॐ ह्री चतुषष्ठ्याधिक सहस्त्र लक्षैक १६४००० पद प्रमाण सहित समवायागायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।१८।

अस्ति नास्ति सुसप्तहि भग है कहत व्याख्या प्रज्ञप्ति अ ग है ।
सहस अट्ठाविस दो लाख है पद जिनेश्वर की शुभ भाख है ।
ॐ ह्री गणधर कृत प्रश्न, षष्टी सहस्त्रप्रति पादक अष्टा-विशतो सहस्त्रधिक द्विलक्ष २२८००० पद प्रमाण व्याख्या प्रक्षप्ति अ गाय निर्विपामीति स्वाहा ।१९।

गण धरा अरु हो तीर्थ करा चरित्र पावन जामे सुख भरा ।
सहस्र छप्पन लक्ष सु पाच है अ ग ज्ञातृ कथा सु साच है ।।
ॐ ह्री अरहन्त देव कथित पचाशत् सहस्राधिक पच लक्ष ५५६००० पद प्रमाण ज्ञातृ कथागायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।२०।

उपासका ध्ययनग है सही चरित श्रावक का सु कहत ही ।
सहस सप्तति लक्षैकादशा कहत पद जिन देवसु मनवसा ।।
ॐ ह्री अरहन्त देवकथित सप्तति सहस्राधिकैकादश लक्ष ११७०००० पद प्रमाण उपासकाध्ययनगायऽर्घ्य निर्विपामीती स्वाहा ।२१।

होय तीर्थकर के सामने, तीर्थ प्रति मुनिवर दश दश वने ।
कष्ट सहया उन मुनि राय ने पाई शिव नारी गुरु राय ने ।।
चरित्र है जिनका उसमे सही नाम अन्त कृत दश है यही ।
सहस अष्टाविशति लक्ष है कहत तेविस जिन पद दक्ष है ।
ॐ ह्री अरहन्त देव कथित अस्टाविशति सहस्राधिक त्रयोविशति लक्ष २३२८००० पद प्रमाण अन्त कृत दशामायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।२२।

होय तीर्थकर जिन रायजी तीर्थप्रतिदश दश मुनिरायजी ।
सहन कर उपसर्ग महानजी पाय पचोत्तर पद आन जी ।।
हो कथा जिनकी उस अ ग मे अनुत्तरा उपपादिक भगमें ।
लक्ष वान्नु हजार चवालिसा कहत पद अनुपम शिव नारीशा ।

ॐ ह्री अरहन्त देव कथित चतुष्चत्वारिंशन् सहस्राधिक द्विनवति लक्ष ६२४४००० पद प्रमाण उपपादिक दशागाय-ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।१३।

प्रश्न उत्तर जिसमे सुशोभते प्रश्न व्याकरण मन मोहते ।
लक्ष तेरानु शुभ पाइया सहस सोलह पद जिन गाह्या ।।

ॐ ह्री अरहन्त देव कथित षोडस सहस्राधिक त्रिनवति लक्ष ६३१६००० पद प्रमाण प्रश्न व्याकरणागायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।२४।

उदय उदीर्णा कर्म बखानते कहत सूत्र विपाक सुजानते ।
एक कोटि चौरासी हजार है पद महा जिसमे व्यवहार है ।।

ॐ ह्री अरहन्त देव कथित चतुर शीति लक्षाधिक एक कोटि १८४००००० पद प्रमाण विपाक सूत्रागायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।२५।

चार कोटि सु पन्द्रह लाख है, सहस दो पद की शुभ शाख है ।
अ ग एकादश के पद यहा करत पूजन ये नुत हो अहा ।।

ॐ ह्री अरहन्त देव कथित द्विसहस्राधिकपचदश लक्ष चतुष्कोटि पद प्रमाण ४१५०२००० एकादशागाय पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्बाहा ।।२६।।

(अडिल)

अरब एक वसु कोटि सु जिनवर गाइया ।
लक्ष सु अडसट सहस छपन्ना मानिया ।।

पच पदो की सख्या शुभ अनमोल जी ।
पूजो वसु विधि द्रव्य सु दिल को खोलजी ।।

ॐ ह्री दृष्टी वाद अगस्य पचाधिकषट्पचशत सहस्राष्ट-षष्टी लक्षाष्ट कोटयैकारब पद प्रमाण १०८६८५६००५ पद प्रमाण द्वादशागेभ्योऽर्ध्य निर्विपामीति स्वाहा ।२७।

पंच प्रज्ञप्ति अर्घ्यं (अडिल)

चन्द्र आयु गति विभव निरुपण है सही ।
चन्द्र प्रज्ञप्ति नाम लहै इस ही मही ।।
छत्तिस लाख सु पच सहस पद जिन कहै ।
पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहै ।।

ॐ ह्री पच सहस्राधिक षटत्रिशद लक्ष ३६०५००० पद प्रमाण चन्द्रायुगति विभव प्ररुपिका चन्द्र प्रज्ञप्तये ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।२६।

रवि आयु गति होय निरुपण है सही ।
सूर्य प्रज्ञप्ति नाम लहै इस ही मही ।।
लक्ष पाच त्रय सहस महापद गण कहा ।
पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहा ।।

ॐ ह्री श्री त्रिशत् सहस्रादिक पचलक्ष ५०३००० पद प्रमाण सुर्यायुगति विभव प्ररूपिका सूर्य प्रज्ञप्तये ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२७।।

वर्णन जम्बू दीप तनो जो करत हैं ।

नाम प्रज्ञप्ति जम्बु उसी का धरत है ।।

तीन लाख अरु सहस पचीस सु पद लहा ।

पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहा ।।

ॐ ह्री जम्बू दीप वर्णन कथिका पच विशति सहस्राधिक त्रिलक्ष ३२५००० पद प्रमाण जम्बु दीप प्रज्ञप्तये ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२८।।

सागर द्वीप का वर्णन है जिस ग्रन्थ मे ।

सागर द्वीप सु नाम लहै जिस पन्थ मे ।।

लक्ष बावने सहस छत्तीस सु पद महा ।

पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहा ।।

ॐ ह्री द्वीप सागर स्वरूप निरूपिका षट त्रिशत् सहस्राधिक द्वीपचाशतलक्ष ५२३६००० पद प्रमाण द्वीप सागर प्रज्ञप्तये ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।२६।।

षट् द्रव्यो को कहै सरस शुभ भावसे ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति नाम वही शुभ चावसे ।।

लक्ष चुरासी सहस तीस षट् पद कहै ।

पूजू मन वच काय हर्ष उर मे लहै ।।

ॐ ह्री रूप्यरूप्यादि षट् द्रव्य स्वरूप निरुपिका षट् त्रिशत्सहस्राधिक चतुरशीत्ति लक्ष ८४३६००० पद प्रमाण व्याख्या प्रज्ञप्ते ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३०।।

एक कोटि इक अस्सी लक्ष सु जानिए ।
सहस पाच सु श्लोक सर्व जग मानिए ।।
चन्द्र प्रज्ञप्ति आदि सु पाचो मे कहा ।
पूजू मन वच काय हर्ष उरमे लहा ।।

ॐ ह्रो पच प्रज्ञप्ति सम्बन्धि पचाशत सहस्राधिक एकाशीति लक्षैक कोटि १८१५०००० पद प्रमाण पच प्रज्ञप्तिभ्यो पूर्णाऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

सूत्र अर्घ्यं (गीतिका)

जीव कर्त्ता भोगता है कर्म का बहु काल से ।
है निरुपरा जास सारे सूत्र नाउँ भाल से ।।
पद है अठासी लक्ष जिसमे देवगराधर गाइया ।
पूजू हूँ जिन शास्त्र जी को हर्ष मन उमगाइया ।।

ॐ ह्रीं जीवस्य कर्त्तृत्वभोगतृत्वादि स्थापक भूत चतुष्टयादि भवनस्योत्थापकमष्टाशीति ८८००००० लक्ष पद प्रमाण सूत्र कृतागाय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२१।।

प्रथमानु योग

त्रेशट् शलाके पुरुष सयम कथन जिसमे है सही ।
प्रथमानु योगा नाम उसका प्रथित है इस जग मही ।।

सहस्र पच सु पद उसी मे देव जिनवर गाइया ।

पूजू हूँ जिन शास्त्रजी को हर्ष मन उमगाइया ।।

ॐ ह्री त्रिषष्टि शालाका महापुरुष चरित्र कथक पच सहस्र पद प्रमाण ५००० प्रथमानु योगाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३२।।

अडिल

अरब एक अरु द्वादश कोटि सु मानिया ।

लक्ष तिरासी सहस अठावन जानिया ।।

पच महा पद उत्तम जिनवर भासिया ।

पूजू मन हर द्रव्य सु कलमष नाशिया ।।

ॐ ह्री द्वादशागानाम पचाधिकाष्ट् पचाशत् सहस्र त्रयशाति लक्ष द्वादश कोटयैकारब ११२८३५८००५ पद प्रमाणेभ्ये पूर्णार्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३३।।

अथ चतुर्दश पूर्व ऽर्घ्यं (भुजंग प्रयास)

उत्पाद व्यय ध्रौव्य बस्तु है युक्त ।

उत्पाद पूर्व महा शास्त्र उक्त ।।

श्लोक एक कोटि हे आप सुराजे ।

महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ।।

ॐ ह्री वस्तुनामुत्पाद व्यय ध्रौव्यादिक कथमेक कोटि १०००००००पद प्रमाणमुत्पाद पूर्वांगायऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३४।।

चौवोस देवा है बल देब स्वामी ।

वसु देव चक्री जगत मे सु नामी ।।

वीर्यानूवादा कहे इन चरित्र ।

पद लक्ष सत्तर है पूजू विचित्र ।।

ॐ ह्री बल देव वासुदेव चक्रवर्ति शक्र तीर्थकरादि बल वर्णक सप्तति लक्ष ७०००००० पद प्रमाण वीर्यानुवाद पूर्वागाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३६।।

नाम अस्ति नास्ति प्रवदि पूर्व जो है ।

अस्तित्व नास्तित्व भग कहै है ।।

पद लक्ष षष्ठी है इसमे सुराजे ।

महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ।।

ॐ ह्री जीवादि वस्त्वास्ति नास्तिचेति प्रकथक षष्ठी लक्ष ६०००००० पद प्रमाण मस्ति नास्ति प्रवाद पूर्वागाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३७।।

ज्ञानोत्पत्ति निमित्त अधिकारी ।

कहे इन स्वरूप सुज्ञान भडारी ।।

हीन एक कोटि महा श्लोक राजे ।

महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ।।

ॐ ह्री अष्ट ज्ञान तदुत्पति कारण तदाधार पुरुष प्ररूपक मेकौनकोटि ९९९९९९९ पद प्रमाण ज्ञान प्रवाद पूर्वागाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।३८।।

स्थान वर्णद्वि इन्द्रियादि सु प्राणी ।
बचन गुप्ति सस्कार भाषे सु ज्ञानी ॥
हे नाम सत्य प्रवाद पूर्व राजे ।
पद एक कोटि सु छेही विराजे ॥

ॐ ह्री वर्ण स्थान तदाधार द्वीन्द्रयादि जन्तुवचन गुप्ति सस्कार प्ररूपक षडधिक कोटि १००००००६ पद प्रमाण सत्य प्रवाद पूर्वागाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥३६॥

आत्म प्रवाद सु पूर्व ही जानो ।
है जिसमे आत्म स्वरूप बखानो ॥
पद कोटि छत्तीस उसमे सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ॥

ॐ ह्री ज्ञानाध्यात्म कर्तृत्वादि युतात्म स्वरुप निरुपक षटत्रिशत कोटि ३६०००००००० पद प्रमाण आत्म प्रवाद पूर्वागाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४०॥

बन्ध उदय अरु उपशम होहे ।
कर्म उदीरण निर्जर सौहै ॥
कर्म प्रवाद कहै इन स्वरूप ।
पद कोटि अस्सी सुलक्ष अनुपम ॥

ॐ ह्री कर्म बन्धोदयोपशमोदीरणा निर्जरा कथकमशीति लक्षाधिक कोटि १८०००००० पद प्रमाण कर्म प्रवाद पूर्वांगाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४१॥

लहै प्रव्याख्यान सू पूर्व ही जानो ।
कहै द्रव्य पर्यय स्वरूप ही मानो ॥
अहो लाख चोरासी श्लोक सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु दव्य साजे ॥

ॐ ह्री द्रव्य पर्ययरूप प्रव्याख्यान निश्चलन कथक चतुरशीति लक्ष ८४००००० पद प्रमाण प्रव्याख्यान पूर्वागाय निर्विपामीति स्वाहा ॥४२॥

सुविद्यानुवाद हे शास्त्र विशिष्ट ।
शत पाच विद्या महा गुण गरिष्ट ॥
लघु सप्त सेकड कहै सुस्वरूप ।
पद एककोटिदश लक्ष रूप ॥

ॐह्री पचशत महाविद्या सप्तशत क्षुद्रविद्या अष्टाग महाविद्या निमित्तानि प्ररुपयनदश लक्षाधिक कोटि ११०००००० पद प्रमाणविद्यानुवाद पूर्वागायऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४३॥

कल्याण पूर्व महा सुख स्वरूप ।
कहै तीर्थ चक्री के पुण्य अनुपम् ॥
पद कोटि छब्बीस जिसमे सुराजे ।
महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ॥

ॐ ह्री तीर्थकर चक्रवर्ति बल भद्र वासु देवेन्द्रादि पुण्य व्यावर्णक षडविंशति कोटि २६०००००००० पद प्रमाण कल्याण प्रवाद पूर्वागाय ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ॥४४॥

अष्टाग वैद्यक सुगारुडी विद्या ।

महा मत्र तत्रादि नाशक कुविद्या ।।

लहै प्राणवाय सुशास्त्र महानतम् ।

यजू तेरे कोटि महाश्लोक कान्तम् ।।

ॐ ह्री अष्टाग वैद्य विद्या गारुडो विद्या मन्त्र तन्त्रादि निरुपक त्रयोदश कोटि १३०००००० पद प्रमाण प्राणावाय पूर्वागाय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४५।।

अलकार छन्दो हे व्याकर्ण जानो ।

किरिया विशाल कहे तुम प्रमाणो ।।

नव कोटि श्लोक महान्त सुराजे ।

महा भक्ति पूजू वसु द्रव्य साजे ।।

ॐ ह्री छन्दोऽलकार व्याकरण कला निरूपक नव कोटि ९०००००० पद प्रमाण किरिया विशाल पूर्वागाय ऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४६।।

लोक बिन्दु सार है शास्त्र अपूर्व ।

निर्वाण कारण कहै सुख स्वरूप ।।

पद साडे बारह कोटि सुराजे ।

महा भक्ति पूजू बसु द्रव्य साजे ।।

ॐ ह्री निर्वाण पद सुख हेतु भूत सार्द्ध द्वादश कोटि १२५०००००० पद प्रमाण लोक बिन्दु सार पूर्वागाय ऽर्घ्यं निर्विपामिति स्वाहा ।।४७।।

दोहा—कोटि पचान्नु कहै लक्ष पचासा पाच ।
पूर्व चतुर्दश श्लोक मे जिनवर भाषे साच ।।

ॐ ह्री चतुर्दश पूर्वागाय पचाधिक पचाशतलक्ष पचनवति कोटि ९५५००००५ पद प्रमाणाय पूर्णार्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४८।।

१२ अङ्ग के भेद में पांच चूलिका के अर्घ्यं (जोगीराशा)

वर्षे जल अरु रोके कैसे मन्त्र तन्त्र बललाती ।
जलगति नामसु चूलिक इसका जिनवाणि,कहलाती ।।
कोटि दोय अरु लाख मुनव है सहस नवासी सौहै ।
द्वौशत् पद भी पूजू वसु विधि ज्ञान महा गुण मौहे ।।

ॐ ह्री जल स्तभन जल वर्षादि हेतु भूत मत्रतत्रादि प्रतिपादिका द्विशताधिक नवाशीति सहस्र नव लक्ष द्वय कोटि २०९८९२०० पद प्रमाण जलगत्चूलिकायैऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४९।।

अल्प समय मे बहुयोजन तक गमनागमन सु होवे ।
मन्त्र तन्त्र सब विद्या इसमे थल गत चुलिक जोवे ।।
कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासी सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजू वसु विधि ज्ञान महा गुण मोहे ।।

ॐ ह्री स्तोक कालेन बहु योजन गमनागमानदिक हेतु भूत मन्त्र तन्त्रादि निरुपिका पूर्वोक्त २०६८६२०० पद प्रमाण स्थल गत चुलिकायै ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५०।।

इन्द्रजाल माया का करना मन्त्र तन्त्र को जानो ।
मायागत है नाम चूलिका जिनवर भाषी मानो ।।
कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासी सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजू वसु विधि ज्ञान महा गुण मोहै ।।

ॐ ह्री इन्द्र जलादि मागोत्पादक मन्त्र तन्त्रादि निरुपिका पूर्वोक्त २०६८६२०० पद प्रमाण मायागत चूलिकायै ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५१।।

गमन गगन मे होवे कैसे उपदेशे यह भाई ।
मन्त्र तन्त्र सब विद्या होवे गमन चूलिका गाई ।।
कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासी सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजू वसु विध ज्ञान महा गुण मोहे ।।

ॐ ह्री गमनागगनादि हेतु भूत मन्त्र तन्त्रादि प्रकाशिका पूर्वोक्त २०६८६२०० पद प्रमाण आकाश गमन चूलिकायै ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५१।।

सिह व्याघ्र गज घोटक गाई नर सुर रूप धराई ।
मन्त्र तत्र सब विद्या होई, रूप चूलिका गाई ।।
कोटि दोय अरु लाख सुनव है सहस नवासि सोहै ।
द्वौशत पद भी पूजू वसु विधि ज्ञान महागुण मोहै ।।

ॐ ह्री सिह व्याघ्र गज तुरग नर सुरादि रूप विधायकमत्र तन्त्रादि उपदेशिका पूर्वोक्त २०९८९२०० पद प्रमाण रूप गत चूलिकायै ऽर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५२।।

अडिल

कोटि दशी उनचास लाख बतलाइया ।
सहस छियालिस पद महा जिन गाइया ।।

मिलकर पाचो चूलिक के पद जानिए ।
पूजू मनवच काय हर्ष उर ठानिए ।।

ॐ ह्री षट् चत्वारिशत सहस्राधिक नव चत्वारिशत् दश कोटि १०००४६०४९ पद प्रमाण पचचूलिकाभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्री श्री जिन मुखोत्पन्न द्वादशाग जिनवाणि मातेभ्यो नम स्वाहा ।।

(यहां पुष्पो से ६ बार जाप करे)

जयमाला

मात जिनवाणी सदा तु निर्मला सुख दायिनी ।
जिन देव पर्वत से निकल कर कु ड गण धर आयनी ।।

है शारदे अम्बेसदा अज्ञानता को नाशनी ।
गात जयमाला अबे हम सुखद हो मृदु भाषनी ।।

पद्धडी

जय जिनवर वाणी परम रूप

तुम ही भव तारक हो अनूप ।

जय जिन वदनाम्बुज निकसि देवि

जय गण धर गूथी हर्ष ठेवी ।१।

जय तीन लोक मण्डन स्वरूप

जय भविजन तारक हो अनूप ।

जो श्रद्धे माता हर्ष धार,

वह पावे ज्ञानामृत अपार ।२।

जय मिथ्या तिमिर विनाश सूर्य

जय शिव मग दर्शक हो सु धूर्य ।

जिन घ्यान धरा तज के सुमान,

नहि रहा उसे सशय कुज्ञान ।३।

जय तीन शतक छत्तीस जान

मति ज्ञान भेद लखिए प्रमाण ।

श्रुत दोय अनेको भेद ठान

जय द्वादशाग जिनवर बखान ।४।

जिन गण धर नरपति ऋद्धि खास,

जय पुण्य पुराकृत को प्रकाश ।

जय लोक अलोकरु तीन काल,

कह लक्षण चारो गति सुहाल ।५।

जय कर्ण योग द्युति है पिछान
है जिनवर की यह सत्य वाण।
जय चारित्र जिन कहत सोई
जय जिसमे श्रावक धर्म होई।६।
चरणानु योग तसु जान नाम,
जय पूजे तज हम सर्व काम।
जय जीवा जीवसु पुण्य पाप,
जय सप्त तत्व का है कलाप।७।
द्रव्यानुयोग चौथा कहाय,
ये चार योग जिनवर बताय।
जय इकसो बारह कोडि जान,
जय लाख तिरासी है प्रमाण।८।
जय सहस अठावन पचमान,
पद द्वादशाग जिनवर बखान।
जय कोटि इकावन अष्ट लाख,
शत छे हजार चोरासी भाख।९।
जय बीस एक अध श्लोक धाय
जय एक एक पद को बताय।
जय दोष रहित जिन वाणि मान,
जय तुम पद नावे जोड हाथ।१०।
तुम सन्त सुजन योगीन्द्र ध्याय,
वह भव दधि से झट पार जाय।

जय आदि अन्त इक सार आप,
सूरजमल तव करता सुजाप ।

धत्ता

जय जय जिनवाणी हे श्रद्धानी सशय हानि पूजत है ।
जय तत्व प्रकाशक भ्रम तम नाशक ज्ञान निकाशक हूजत है ।।

ॐ ह्री श्री जिन सुखोत्पन्न द्वादशाग जिनवाणी मातायै अर्घ्य
निर्विपामीति स्वाहा ।।

दोहा—वाणी है अरहन्त की जो भवि कठ लगाय ।
पूजत हर्ष बढाय कर केवल ज्ञान उपाय ।।

इत्याशीर्वाद

जिन चैत्य पूजा

दोहा— सौम्य सुभग त्रैलोक्यमे, समचतुर सस्थान ।
कृत्रिम अकीतम जानिए, विम्ब महा सुखदान ।।

आह्वानन् स्थापन करू हिए विराजो आन ।
पूजू मन वच काय से पाउपद निर्वाण ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य
समूह अत्राव तरावतर सवौषढ आह्वान ।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य समूह
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनम् ।

ॐ श्री श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिम जिन
चैत्य समूह अत्र मम सन्निहितो भव
भव वषट सन्निधिकरण ।

अथाष्टकम्–सोरठा

लाउ मिष्ट सुवार सौरभ अति आवे घनी ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य
समुहभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल
निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

चन्दन सौरभसार केशर सग घिसाइए ।
चैत्य महाजिन सार, पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्य
समार ताप विनाशनाय चन्दन
निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

तदुल धवल सुधार पुज करू जिनराज ढिग ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूभ्यो
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

चपा जुई की डार फूल वनस्पति लाइया ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्य
कामवाण विनाशनाय पुष्पाणी निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

नाना व्यजन सार फेणी गूजा पायसी ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्य क्षुधा
रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

दीपक ज्योति सुधार मोह अन्ध भागे सदा ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति जिनचैत्यषमूहभ्यो मोहान्धकार
विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

सोरभहे सुखकार धूप अग्निमे डारिये ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्यवर्त्ति जिनचैत्यसमूहभ्यो अष्ट कर्म
दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

आम्र काम्र अनार सेव रसीले लीजिए ।
चैत्य महा जिन सार पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्य वर्त्ति चिन चैत्यसमूहभ्यो मोक्ष फल
प्राप्रये फलनिर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

द्रव्य अष्ट प्रकार, लेय चढाउ भावसो ।
चैत्य महा जिन सार, पूजत पाप मिटे सदा ।।

ॐ ह्री श्री त्रैलोक्यवर्त्ति जिन चैत्य समूहभ्योऽनर्घ्य पद
प्राप्तये अर्घ्य निर्विपामीनि स्वाहा ।।९।।

प्रत्येक पूजा-गीता

इस लोक पातालय मे मनहर बने अनादि है सही ।
शुभ रत्न कचन उपल निर्मित चैत्य सुन्दर तिस मही ।।

त्रैकाल मे मन वचन तन से मे नमू नित चरण मे ।
वसु द्रव्य उत्तम अर्घ्य पूजू होऊ उनकी शरण मे ।।

ॐ ह्री पाताल लोक सम्बन्धि कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यभ्यो
अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

होय मध्यम लोक मे जो जैन विम्ब सुहावने ।
है वने अरु जो अनादि मन सभी के भावने ।।

त्रैकाल मे मन वचन तन से मै नमू तिन चरण मे ।
वसु द्रव्य उत्तम अर्घ पू जू होउ उनकी शरण मे ।।

ॐ ह्रीं श्री मध्य लोक सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमासख्या जिन चैत्यभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

लोक ऊपर मे बने है बिम्ब जिन सुखदाय है ।
है अकृत्रिम मन हरे अरु पाप सब नशजाय है ।।

त्रैकाल मे मन वचन तन से मै नमू जिन चरण मे ।
वसु द्रव्य उत्तम अर्घ पू जू होउ उनकी शरण मे ।।

ॐ ह्रीं उर्ध्वलोक सम्बन्धि असख्य जिन चैत्यभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

लोक तीनो मे मनोहर बिम्ब अति सुखदाय है ।
वसु कोटि छप्पन लक्ष सत नव सहस मन हर्षाय है ।।

अरु चार शत इक बीस प्रतिमा है अनादि काल से ।
जो है असख्या कृत्रिम पू जू योग त्रय नमु भालसे ।।

ॐ ह्रीं श्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिमासख्य जिन चैत्यभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीती स्वाहा ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री जिन बिम्ब देवेभ्योनम स्वाहा
(नव वार पुष्पो से जपे)

जयमाला

दोहा—चैत्य महा जिन दर्श से भव बेडी कट जाय।
कहुँ महा गुण मालिका भव्य जीव सुखदाय ।।

पद्धडी

जय वीत राग सर्वज्ञ देव
भवि जीवो के तारक सुएव।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप
जो कृत्याकृत्रिम दोय रुप ।।१।।

तव सुन्दर सुभग ललाम देह,
सम चतुर धरे सस्थान एह।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।२।।

तब दर्शन करते भव्य जीव,
वह लहत अनन्ता सुख सदीव।
जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्यकृत्रिम दोय रूप ।।३।।

जय दोषो से हो रहित आप,
हम करते प्रभु तुम नित्य जाप।

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ॥४॥

जय पर्यंकासन ध्यान रूप,
जय खड्गासन हो प्रभु अनूप ।

जिनकी छवि यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ॥५॥

जय अविचल गुण के है न, पार
भवि जीवदर्शसम्यक्त्व धार ।

जिनकी छवि है यह चैत्व रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ॥६॥

जय भव्य कमल विकसित दिनेश,
जय नरपति सुरपति नुत खगेश ।

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ॥७॥

नासाग्रदृष्टिरत सकल धार,
भवि जीव नमे तुम बार बार ।

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ॥८॥

जय स्वर्ण रत्न निर्मित महान,
जय उपल बनी सुन्दर सुजान ।

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।६।।

जय अघोमध्य अरू ऊर्ध्व लोक,
जय कृत्या कृत्रिम विम्व थोक ।

जिनकी छवि है यह चैत्व रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।१०।।

जिन चैत्य नमु मै बार बार,
सूरजमल को प्रभु तार-तार ।

जिनकी छवि है यह चैत्य रूप,
जो कृत्याकृत्रिम दोय रूप ।।११।।

जय जय जिन प्रतिमा होय,
अकृतिमा कृतिमा प्रतिमा ध्यावत है ।

घत्ता

जय पूज रचावे शीष नवावे,
शिव सुन्दर को पावत है ।

ॐ ह्री त्रैलोक्य सम्बन्धि कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्य
समूहभ्योर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।

तीन लोक मे बिम्ब है कृत्याकृत्रिम सार ।
पूजो मन वच काय से होवे भव दधिपार ।।

इत्याशीर्वाद

श्री जिन चैतालय पूजा (अडिल)

कृत्याकृत्रिम सुभग जिनालय जानिए ।
ध्वजा फरुखे स्वर्ग दूति सम मानिए ।।

सुन्दर शिखर उतंग मनोहर सोहने ।
पूजो जिनवर निलय महा मन मोहने ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय अत्रावतरावतर सवोंषट आव्हान ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टकं (सुन्दरी)

कनक झारी जल भर लाइया, जन्म मृत्यु जरा त्रय ढाइया ।
मै यजु जिन मदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमा कृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो जम जरा मृत्यु विनाशनाय जल निर्विपामीति स्वाहा ।।१।।

दाह भजन चन्दन बावना सघ केशर घिसकर लावना ।
मै यंजु जिन मंदिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
संसार ताप विनाशनाय चन्दन निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

धोय अक्षत थाल भरीजिए पुज करके अखय पद लीजिए ।
मैं यजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो ।
ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्विपामीति स्वाहा ।।३।।

केवडा अरु चपक सोहना पुष्प मरुवामन अति मौहना ।
मैं यजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भाव सो ।
ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
काम वाण विनाशनाय पुष्पाणि निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

विविध व्यजन थाल भराइया, रस मधुर लेकर हरषाई ।
मै यजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो ।
ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

हेम दीपक घृत भर लीजिए, जगमगातो मोह हनीजिए ।
मैं यजु जिन मन्दिर चावसो सकल पाप मिटे शुभ भावसो ।।
ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो
मोहान्धकार विनाशनाय दीप निर्विपामीति स्वाहा ।।६।।

धूप दश विधि सौरभ आवती, खेय भासुर कर्म जलावती ।
मै यजु जिन मन्दिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूप निर्विपामीति स्वाहा ।।७।।

फनस दाडिम आदि सुलेधना, सेवकेला फल मन मोहना ।
मै यजु जिन मदिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फल निर्विपामीति स्वाहा ।।८।।

नीर आदिक द्रव्य सुलीजिए, शुभ जिनालय अर्घ्य सु पूजिए ।
मै यजु जिन मदिर चावसो, सकल पाप मिटे शुभ भावसो ।।

ॐ ह्री श्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य निर्विपामीति स्वाहा ।।९।।

(प्रत्येक पूजा) गीता

पाताल मे है निलय सुन्दर जो अनादि काल से ।
सप्त कोटि सप्त द्वय लख मे नमु नित भाल से ।।

जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहू जिन भवन सारे भक्ति भर गुण गाय के ।।

ॐ ह्री श्री पाताल लोक सम्बन्धि सप्तकोटि द्विसप्तति लक्षाधिक ७७२००००० कृत्रिमाकृत्रिम जिन चत्यालयेभ्योऽर्घ्य निर्विपामीतिस्वाहा ।।१।।

शत चार अट्ठावन भवन शुभ हैं अकीर्त्तम जेलसे ।
अगणित लसे कीर्त्तम भवन शुभ दर्श से पातक नशे ।।
जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहू जिन भवन सारे भक्ति भर गुण गायके ।।

ॐ ह्री मध्यलोक सम्बन्धि अष्ट पचाशत चतुश्शत अकृत्रि मसख्यचकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।२।।

उर्ध्वलोकी भवन सुन्दर रत्न के अद्भुत महा ।
चलु अष्ट लक्षा सप्त नवति सहस तेवीसी कहा ।।
जल चन्दनादि सुद्रव्य लेकर थाल भर मन लायके ।
पूजहू जिन भवन सारे, कर्म सब नश जाय है ।।३।।

ॐ ह्री उर्ध्वलोक सम्बधि चतुश्शीतिलक्ष सप्त नवति सहस त्रयो विंशति अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।४।।

उर्ध्व अध अरु मध्य माही भवन सुन्दर जानिए ।
गणधर असख्या कहत शुभ जे पूज तिनकी ठानिए ।।
पूजते सुर असुर नरपति द्रव्य मनहर चावसे ।
हम भी नमेमन शुद्ध हो जिन भवन भावे भावसे ।

ॐ ह्री त्रलोक्य सम्बन्धी असख्य कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।५।।

ॐ ह्री श्री जिन चैत्यालयेदेवेभ्यो नम स्वाहा

(नवबार पुष्पो से जपे)

जयमाला

दोहा—कृत्या कृत्रिम है सही तीन लोक जिन थान ।
कहुमहा जय मालिका होय पाप की हान ।

पद्धडी

जिन मन्दिर प्रभु के सुभगसार,
जय कृत्या कृत्रिम शुभ अपार ।
तिन भुवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय शिखर वने है अति उतग,
जहा होवे मानी मान भग ।
तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय गगन चुम्बि दीखे अपार,
जिन दर्शन नाशे अन्धकार ।
तिन भुवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय स्वर्ण कलश बहु चमचमाय,
जय करत प्रशसा देव आय ।

तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय ध्वजा उडे शुभ सिखर सार,
मनु स्वर्ण सपदा को पुकार ।
तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय स्वर्ण रत्न निर्मित लखाय,
जय उपल सु मृतिका के लहाय ।
तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय बने अनादि काल जान,
उन कहत अकीरतम है सुजान ।
तिन भवन नमे हम बार बार,
भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय पुरुष किये रचना सुसार,
जिन कृत्रिम नामसु सुखद सार ।
तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।
जय अधोमध्य अरु ऊर्ध्व जान,
जय तीन लोक मे निलय आन ।
तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।

जहा बैठ भविक आनन्द पाय,
जय जिन गुण गावे प्रीति लाय ।

तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।

हम नमन करे उन भवन सार,
सूरजमल भक्ति उर धार धार ।।

तिन भवन नमे हम बार बार,
कर भक्ति विनय उर धार धार ।।

घत्ता

जय जय जिन मन्दर पूज पुरन्दर सुन्दर मन से बन्दे है ।
हम भी नित बन्दे बहु आनन्दे काटे भव के फन्दे है ।।

ॐ ह्री त्रिलोकवर्ति कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्योऽर्घ्यं निर्विपामीति स्वाहा ।।

दोहा—जिनागार जिनराज के पूजे मन वच काय ।
नाशे अघ बहु काल के पावे सुख अधिकाय ।।

इत्याशीर्वाद

आरती नवदेवता

ॐ जय नव देव स्वामी, प्रभु जय नव देव स्वामी ।
हम नित बन्दे मन वच २ जय अन्तरयामि ।।ॐ।।१।।

अरहन्त सिद्ध आचारज पाठक, मुनि हो गुण धामि-स्वामी- ।
मगलमय हो जिनवर २ हो शुभ शिव गामी ।।ॐ।।२।।

विम्ब जिनालय पूजे नित प्रति, वाणि जिनवर की-स्वामी-।
धर्म अहिमा ध्यावे २ होय कर्म रज खामी-स्वामी ।।ॐ।।३।।

रत्न अमोलक दीपक लेकर, आरती करू थारी-स्वामी-।
वीर सिन्धु गुण गावे २ सूरज शिव गामि ।।ॐ।।४।।

———

सकल सौभाग्य व्रत कथा

दोहा

प्रथम प्रणमु आदीश ले चोबीसो जिनराय ।
अरू गण धर ज्ञानी मुनि नमो नमो सिर नाय ।।१।।
पच परम गुरु को नमो स्याद्वाद जिन धर्म ।
सप्त भगि वाणी नमो बतलाती वृष मर्म ।।२।।
चैत्य नमो भवि भाव से सर्व जिनालय सार ।
इन नव देवो को नमो हर्ष हृदय मे धार ।।३।।
कुन्द कुन्द स्वामी महा शाति सिन्धु गुण खान ।
वीर सिन्धु गुरूवर नमो होवे आतम ज्ञान ।।४।।
कथा सकल सौभाग्य व्रत कहु आगम अनुसार ।
पढे सुने व्रत ले सदा होवे भव दधि पार ।।५।।

चोपाई

भरत क्षैत्र मुन्दर शुभ जान,
लसे अमर पुर वत गुण खान ।
देश महा सौराष्ट्र महान नगरि,
द्वारिका परम प्रधान ।।१।।

मन्दिर है अनुपम शुभ सार,

लसे मनोहर गुण आधार ।

धार्मिक जन रहते सुखकन्द,

नित्य कर्म षट् करत निफन्द ।।२।।

ऊर्जयन्त गिरी अति उत्तग,

होवे मानि मानसुभग ।

नाम अपर गिरनार लखाय,

दर्श करत भविपाप नशाय ।।३।।

एक समय नेमि भगवान,

आय समवसृत अति शुभ जान ।

षट् ऋतु के फल फूले सोय,

करत अचभा भविजन लोय ।।४।।

बन रक्षक चाल्यो हर्षाय,

ले सन्देश कृष्ण ढिग जाय ।

शुभ सन्देश सुना भूपाल,

सप्त पेड जा नमत सुभाल ।।५।।

माली को सन्तोष कराय,

परिजन पुरजन साथ लहाय ।

दर्श करन नृप कृष्ण सुजाय,

हर्ष हर्ष कर पैर उठाय ।।६।।

ऊर्जयन्त गिरी चढ हर्षाय,

समवसरण मे पहुचे जाय ।

तीन प्रदक्षिरा दई सुखदाय,
नृप श्रीकृष्ण बहुत हर्षाय ।।७।।
दर्शन कर बहु स्तवन करेय,
बार बार नमि पद सुख देय ।
मन कोठे मे बैठे जाय,
मनमे फूले नाहि समाय ।।८।।
कल्मष हारी भविहित कार,
दिव्य ध्वनि वर्षे सुख कार ।
सुन वाणि शुभ प्रश्न कराय,
रूक्मणि रानी अति हर्षाय ।।९।।
भो भो ? जग तारक श्री भगवान,
आप महा हो सुगुण सुखान ।
मैने पूरब जन्म मे आय,
पुण्य किया को अति सुखदाय ।।१०।।
याते मम पति कृष्ण सुराय,
स्नेह बढायो मोद कराय ।
तामन प्यारी हूँ गण राय ?
कारण कौन बतावो राय ।।११।।
प्रश्न सुनावरदत्त गणेश,
सुन रूक्मणि उत्तर कछु लेश ।
तू हे सकल गुणो की खान,
है सौभाग्य वति पतिमान ।।१२।।

ध्यान लगाकर सुन वृत्तान्त,

जो है अति ही करुणा क्रान्त ।

भरत क्षैत्र अन्तर्गत जान,

मगध देश है नाम प्रधान ।।१३।।

लक्ष्मी गाव नामक इक ग्राम,

लसत मनोहर सुख का धाम ।

बाग वाटिका से शोभन्त,

मदिर ध्वज कलशा जय वन्त ।।१४।।

जैन धर्म का बहुत प्रचार,

पालें जन श्रावक आचार ।

मुनि को दान देय हर्षाय,

ताके फल से दिव गति पाय ।।१५।।

सोम सेन ब्राह्मण इक जान,

रहत वहा गुणधर धनवान ।

परम सुन्दरी ताकिनार,

लक्ष्मी मति प्यारी भर्तार ।।१६।।

एक दिना मुख एना माहि,

निरखे थी वह परम सुखाहि ।

आहार समय आये मुनिराज,

है समाधि गुप्त गुरुराज ।।१७।।

लक्ष्मीमति के दर से जाय,

देख मुनि की निन्दा गाय ।

नन्गा दुष्ट पशु तु षड,

वचन उचारे थे अति भड ।।१८।।

सुन मुनिवर अन्तराय कराय,

विन भोजन ही वन मे जाय ।

ता निन्दा से पाप अपार,

बान्ध्यो भव भव मे दुखकार ।।१९।।

रोग भगन्दर हुआ महान,

पीडा अति ही कष्ट प्रदान ।

सहि न सके पीडा बहुहोय,

आर्त ध्यान से मरण सु होय ।।२०।।

भैस कूकरि मूकरि खरि,

आर्तध्यान से दुखकर मरी ।

इस क्रम से भव भव दुख पाय,

भ्रमण करत षट नरके जाय ।।२१।।

निकल वह भव धरे अनेक,

दुख वर्णन करि सके न नेक ।

भ्रमण करत उपजी इक ग्राम,

नदी नर्मदा तट के धाम ।।२२।।

अन्त्यज कुल मे बहु दुख पाय,

पाप कर्म उदय अति आय ।

मात पिता भी स्वर्ग प्रयाण,

फिर पाया बहु दुक्ख महान ।।२३।।

पाली अन्य जनोने आय,
हुई बडी वह भिक्षा लाय ।
उदर भरे इहविधि दुख पाय,
पाप कर्म से बहु घबडाय ।।२४।।
नदी नर्मदा के तट सार,
महा मुनीश्वर ध्यान सुधार ।
रात्री योग करे सुखकार,
आतम चिन्ते बार बार ।।२५।।
बाला दर्श किये मुनिराज,
मन ही मन चिन्ते सुखसार ।
मुनिवर भविष्य चितारोसार,
फिर उपदेश्यो ही सुखकार ।।२६।।
वाला श्रवण कियो उपदेश,
श्रद्धाकर बहु भक्ति विशेष ।
ग्रहण किया व्रत ही मुखदाय,
अरु सम्यक्त्व महा मन लाय ।।२७।।

दोहा

आयुष्यान्त मे मरण कर कोकण देश मभार ।
शोभा नामक ग्राम मे नन्दन सेठ सुखार ।।१९।।
पत्नि तिन नन्दावति महागुणो की खान ।
पैदा हुई मल्लिमति ताकुक्षी मतिमान ।।२०।।

चोपाई

एक दिना नन्दन घर जान,
आये मुनिवर सुखद सुजान।
नन्द स्वामि मुनिराजा नाम,
अहार करे वे सुगुण सुधाम ।।२८।।
नन्दन श्रेष्ठि भक्तिवान,
दे नवधा पूर्वक मुनिदान।
हर्ष हर्ष कर नमन करान,
जन्म सफल समझे गुण खान ।।२९।।
काष्टासन बैठे मुनिराज,
हार करन के पीछे आय।
मल्लिमति कन्या कर जोड,
पूछे मुनिवर से मद छोड ।।३०।।
कहो भवान्तर मम मुनिराय,
आप जगत के ही गुरुराय।
सुनकर प्रश्न मुनीश्वर भाष,
मल्लिमति सुन तव भव खास ।।३१।।
कहा मुनीश्वर ने विस्तार,
सप्त भवो का वर्णन सार।
मल्लिमति सुन निज वृत्तान्त,
हो गई दुख मे अति आक्रान्त ।।३२।।

कहत मुनीश्वर से नमि भाल,
ऐसो वृत मुख हो तत्काल।
मुनिवर सुनकर विनय अपार,
व्रत बतलायो सुखद सुसार ॥३३॥

नाम सकल सौभाग्य महान,
जो व्रत हे यह मुक्ति प्रदान।
पालो विधि वत त्यज सब मान,
अन्त महा उद्यापन ठान ॥३४॥

याते पा सौभाग्य महान,
और पति का प्रेम सुजान।
व्रत विधि बतलाकर मुनिराय,
वन मे पहुँचे श्रीगुरुराय ॥३५॥

मुनिवर की वाणी श्रद्धेय,
मल्लिमती व्रत करत स्वमेय।
अष्ट्र वर्ष तक कीना भाग,
अरू उद्यापन कर अनुराग ॥३६॥

आयुषान्त मे मरण जु होय,
शुभ परिणाम रहे थे सोय।
व्रत का यह प्रभाव अपार,
पाई गति ही उत्तम सार ॥३७॥

दोहा

कुण्डनपुर मे भीष्म नृप हुआ महा बलवान ।
उनकी तुम पुत्री भई नृप करता बहुमान ।।४०।।
रूप सपदा युक्त हो अरू योवन सपन्न ।
सज्ञा रूक्मणि की दई होवे जन परसन्न ।।४१।।

चोपाई

अब तु त्रिखण्डाधिप नृप जान,
कृष्ण नाम है महिमावान ।
प्राणवल्लभा ताकि भई,
प्यार घनो तब ऊपर सहि ।।४२।।
यह अतिशय इस व्रत का जान,
पिछले भव मे कीना मान ।
याते प्राप्त सकल सौभाग्य,
हुआ तुम्हारा जागृत भाग्य ।।४३।।
या सुन रूक्मणि आनन्दपाय,
उठ कर दोनो हाथ जुडाय ।
विनय करे मुनिवर की जाय,
पद पकज मे नमन कराय ।।४४।।
फिर से यह व्रत ग्रहण कराय,
काल विधि मुनिवर बतलाय ।

मिलकर सब परिवार जु आय,
नेमीश्वर तीर्थंकर राय ॥४५॥
और सभी गण धर मुनिराज,
नमन करत परिजन सु समाज ।
लोट द्वारिका आये राय,
रूक्मणि मन मे हर्ष बढाय ॥४६॥
रूक्मणि अरु सब यादव वंश,
पाला व्रत होकर निशस ।
व्रत के अन्त उद्यापन ठान,
कीना बिधिवत सकल मुजाण ॥४७॥
अन्त समय सन्यास लहाय,
मरण समाधि पूर्वक लाय ।
लिग तिया छेदा तत्काल,
षोडस स्वर्ग लहा वपुहाल ॥४८॥
वाविस सागर आयु प्रमाण,
देव हुए धर ऋद्धि महान ।
क्रम से तपकर आतम ध्यान,
पावे रूक्मणि शिवपुर जान ॥४९॥
शेष भविकजन का समुदाय,
व्रत पूर्वक सब मरण कराय ।
निज निज पुण्य समय अनुसार,
सद्गति पाई गुण आधार ॥५०॥

इस विधि श्रद्धा भक्ति लाय,

व्रत को पाले अति सुखदाय ।

सकल मनोरथ पूर्ण करेय,

अन्तिम मे शिवनार वरेय ।।५१।।

विधि

आश्विन शुल्का चउदस आय, कर उपवास धरम मन लाय ।
प्रासुक जल से कर स्नान धो सामग्री मन हर आन ।।५२।।

इर्यापथ से गमन कराय जिन मदिर मे पहु चे जाय ।
देय प्रदक्षिरा जिन तिर्थेश बैठे ले पूजन निश्शेष ।।५३।।

नव देवो कि प्रतिमा सार या हो अन्य तीर्थ कर राय ।
पचामृत अभिषेक कराय इक सो तेरा कलश सुलाय ।।५४।।

जप स्वाध्याय करे हर्षाय मन से मायाचार भगाय ।
औषध शास्त्र अभय आहार पात्रो मे दो दान निहार ।।५५।।

पीछि कमण्डलु दो मुनिराय आर्यिका को वस्त्र पिनाय ।
अष्ट वर्ष तक कीजे सार अन्तिम मे उद्यापन धार ।।५६।।

नव देवो का मण्डल माड पूज करे सब ही मद छाड ।
कुछ दम्पति को भोजन देय व्रत कर मन मे बहुहर्षेय ।।५७।।

शक्ति नही उद्यापन आप षोडस वर्ष करे व्रत धाप ।
इस विधिसे व्रत करत जु कोय पावे शिवसुख अन्य न होय।।५८।।

कथा लिखी पूरब अनुसार पढे पढावे भवि मन धार ।
पावे सुक्ख अचल शिव धाम 'सूरज' वह नहि कर्म निकाम ।५६।

जप

ॐ ह्री असि आउसा मम सर्व सौभाग्य कुरु कुरु स्वाहा—
(इस मत्र को पढ कर गन्धोदक लेवे)

ॐ ह्री श्री क्ली ऐ अर्ह अर्हत्सिद्धा चार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम स्वाहा ।

(इस मत्र का १०८ बार सुगन्धित पुष्पो द्वारा जाप करे)

———

शुद्धि–पत्र

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
२	२१	सुधिस्यस्य	सुधिय
६	२०	नाभ्नि	नाम
७	१७	त्रिभुवैनकपति	त्रिभुबनैकपति
३१	१५	मिष्ट	मीष्ट
३२	१४	घाना	घना
३४	८	श्रो	श्री
३६	७	धुगनत	धुगतन
३७	१०	एकादर्श	एकादश
४१	४	अन्नता	अनन्ता
४१	७	गुणोयेत	गुणोपेत
४१	७	चत्वार्रिशशदगुणोपेत	चत्वारिशदगुणोपेत
४१	११	"	"
४३	३	नैवेध	नैवेद्य
४३	२०	गुणोयत	गुणोपेत
४४	१२	नदी	नही
४५	१	धाधार	धार
४६	४	जनन्त	अनन्त
४७	१	एसी	एसो
४८	१७	रहित	सहित
५२	१५	पाप	पाप
५५	२	चुतुण्टच	चतुष्टय
६२	१२	म्यो	म्यो
६३	३	ध्यो	भ्यो
६३	१६	नैवेध	नैवेद्य
६८	६	नित्याजाप	नित्यजाप
६८	१०	पाष	पाप
७०	१५	सवैंष्टि	सवौषट्
७६	१७	व्याय	ध्याय
८६	६	इहह	इह
७२	१	उपासकाध्ययना अग	उपासकाध्ययनांग

पृष्ठ	लाइन	अशुद्ध	शुद्ध
७२	१२	सोठवा	सोढवा
७२	१३	ससस्राधि	सहस्त्राधिक
७३	२	पाप्नु	प्राप्नु
७३	४	पादिकसस्य	पादिकस्य
७३	१४	कमेणा	कर्मणा
७४	१५	नाय	नाम
११२	५	घावन	धावन
११५	२१	कन्याणक	कल्याणक
११६	१	द्रय	द्वय
१२३	३	वपु	वपु
१२३	८	मार्गभ्यो	मार्गेभ्यो
१२३	१४	,	,,
१२४	७	सभ्यग	सम्यग
१२६	१४	मूठता	मुढता
१२७	११	अनायतत	अनायतन
१२८	१६	भग	भय
१३०	१६	८	१
१३३	४	प्रव्य	द्रव्य
१३३	१८	जाने	जाने
१४५	२१	सहस्रधिक	सहस्राधिक
१४५	२२	प्रक्षनि	प्रज्ञप्ति
१४७	१५	यहा	महा
१५०	१२	पूज़	पूज
१५१	१	पूज़	पूज
१५७	८	जलादि	जालादि
१६४	४	प्राप्रये	प्राप्तये
१६६	७	चैत्व	चैत्य
१६८	३	अघोमघ्य	अधोमध्य
१७०	३	घोय	धोय
१७०	१३	कैत्यालयेभ्य	चैत्यालयेभ्य-
१७२	८	भुवन	भवन
१७४	४	स्वर्ग	स्वर्ग